क़ुरान आदर्श।

Commentary on Quran & Islam

Commentary on Quran & Islam,

क़ुरान व इस्लाम की सविस्तर आलोचना

लेखक व प्रकाशक

पण्डित रघुनाथप्रसाद मिश्र

मुहल्ला छिपैटी इटावा

Printed by Pandit Ram Ratan Bajpai.
at the Lucknow Steam Printing Press,
LUCKNOW.

प्रथमवार] दिसम्बर १९१४ [मूल्य १)

❀ भूमिका ❀

कुरान प्रकाशित होने के साथही एक ऐसी पुस्तक की आवश्यक्ता मालूम हुई जिसके द्वारा अर्बी साहित्य, मुसलमानी तीर्थ, अरब की प्राचीन तथा नवीन जातियों के इतिहास उनके मत तथा कुरान व इस्लाम सम्बन्धी समस्त गुप्त व प्रकट बातों का पता तथा उनपर निष्पक्ष व न्याय युक्त आलोचना ज्ञात होसके! जिससे सर्व साधारणके विचार न्यायपर थमेरहैं इसीनिमित्त कुरानआदर्श लिखा गया है। इस आलोचना लिखने में हमने कहीं कठोर तथा अप्रिय शब्दों का प्रयोग नहीं किया तथा अपने सिद्धान्तों को जबरन मनवाने का भी प्रयत्न नहीं किया। जो महाशय कठोर व अप्रिय शब्दों द्वारा अपना प्रभाव डालना चाहते हैं उनकी भूल है क्योंकि गेंद को जैसाही जोर से फैंको वैसाही जोर से उछलती है। इस हेतु अकाट्य प्रबल युक्तियों को नम्र आकर्षक प्रभावशाली प्रिय शब्दों द्वारा प्रकट करनाही उचित है। आशा है कि पाठकगण मुसलमानी धर्म सम्बन्धी प्रत्येक स्थल का यथावत न्याययुक्त पक्षपात रहित सविस्तर वर्णन पढ़कर अवश्य मुग्ध होंगे।

भवदीय

रघुनाथ प्रसाद मिश्र

विषय सूची।

अरब और उसके प्रधान मजहबी नगरों का बर्णन १
अरब की जातियों का बर्णन ५
अरबवालों की मूर्ति पूजा और नक्षत्र पूजा १६
अरब में अन्य देशी मतों के फैलने का वर्णन २४
अर्बी भाषा और अर्बी अक्षरों की उत्पत्ति २६
अर्बी साहित्य का उत्थान और मुहम्मद के कारण पतन २८, २६
मुहम्मद से पहिले अर्बी विद्याओं का बर्णन ३१
मुहम्मद के समय में ईसाई व यहूदी धर्म की अधोगति ३२, ३४
मज़दक का उपदेश कि हरकोई हरकिसी की स्त्री को भोग करसक्ता है ३५
अरबियों की मांस न खाने की प्रकृति तथा मुहम्मद के गुण ३७
मुहम्मद की प्रारम्भिक अवस्था व बिधवा खादीजाह के साथ ब्याह करना ३८
अपढ़ मुहम्मद के द्वारा कुरान कहना दैवी समाचार है इसके बिरुद्ध भारत वासियों की दलील ४१
मुसलमानी मत प्रचार करने के लिये मुहम्मद की युक्तियां ४२
मुहम्मद की युक्ति का उलटा पड़ना व अबूबकर द्वारा साधा जाना ४७
मुहम्मद का तलवार द्वारा इस्लाम फैलाने की आज्ञा देना ४६
कुरान और उसके साहित्य सम्बन्धी समस्त बातें ५८
मुहम्मद के बाद आयत का लुप्त होना ६८
इस्लाम शब्द का अर्थ दीन ईमान का वर्णन ७१
फिरिश्तों का वर्णन. ७३
मुसलमानी धर्म ग्रन्थों की संख्या तथा उनके सम्बन्ध में विचारा विचार ७६

पैग़म्बरों का वर्णन.	७८
मृतक शरीर की क़ब्र में दशा	८०
क़यामत का वर्णन	८३
क़यामत होने के छोटे चिह्न	८४
क़यामत होने के बड़े चिह्न	८५
नरक का वर्णन	१०१
स्वर्ग नरक की दीवाल का वर्णन	१०३
स्वर्ग का वर्णन	१०५
सुख दुःख का निश्चित होना	११४
नमाज़	११५
शुद्धि और सुन्नत	११७
नमाज़ का समय	११६
दान	१२१
रोज़ों का बयान	१२३
मक्का व हज्ज का पूरा वर्णन	१२६
स्त्रियों के विवाह तलाक़ और दण्ड देने का वर्णन	१३६
मुहम्मद ने कैसे मुसलमानों को युद्ध में प्रवृत्त किया	१४६
कितना भाग किसको मिलना चाहिये	१५१
क़ुरान में एक के विरुद्ध अनेक वाक्य	१५४
क़ुरान में इतिहासिक व भूगोलिक वृहत्भ्रांतियां	१५७
मुहर्रम आदि पवित्र महीनों में झगड़ा करने का निषेध	१५६
शिया व सुन्नियों का भेद—	१६३
मुसलमान व शहीद शब्द की व्याख्या तथा हमारा निवेदन	१७१

·:*:·

क़ुरान आदर्श

प्रथम अध्याय।

अरब और उसके प्रधान मज़हबी नगरों का वर्णन।

अरबवाले अपने देशको अरब द्वीपके नामसे कहने लगे। यह अरब प्रायद्वीप है (यानी तीन तरफ़ पानी से घिरा है) प्राचीन अरब वालों के पुरुषों में क़हुतान के लड़के का नाम यरब था। उसने अपने नामसे तेहामके एक छोटे सूबेका नाम अरब रक्खा और इसी से इस प्रायद्वीप का नाम अरब पड़ा। यहां पर कुछ दिनों के बाद इब्राहीम के लड़के इस्माईल रहे। जो लोग ईसाई थे उनका नाम ईसाइयों ने आम तौर से सौरेसिन्स अर्थात पुर्बिया (पूर्बवासी) रक्खा और अरबके प्राचीनवासी भी इसी नामसे उनकी पुस्तकों मे लिखे गये हैं।

दजलानदी, फ़ारिस की खाड़ी, हिन्द महासागर, लाल सागर और भूमध्यसागर इन सीमाओं के बीचका देश अरब लोगों का निवास स्थान है परन्तु अरब ख़ास इस सबका दो तिहाई ही है जिस में अरब लोग तूफ़ान के समय से बसते चले आये हैं। तीसरे बचे हुये हिस्से को इन लोगोंने बस्तियां बसाकर तथा हमले करके अपने अधिकार में कर लिया है। इसी कारण से तुर्क और फ़्रान्स के रहनेवाले अब भी अरबिस्तान कहते हैं।

पूर्वी लेखकों ने ख़ास अरब के पांच सूबे ठहराये हैं यमन, हिजाज़, तिहाम, नजद, यमाम। कुछ लोग एक छटवां सूबा बाहरीन

भी इस में शामिल करते हैं। लेकिन यह सूबा यथार्थ में ईराक़ का हिस्सा है। कोई कोई लिखने वाले यमन और हिजाज़ दो ही सूबा मानते हैं और हिजाज़ के ही सूबे में शेष तीन सूबे तिहाम, नजद और यमाम शामिल कर देते हैं।

सूबा यमन यह नाम इसका या तो मक्का की मसजिद से दाहिनी ओर होने के कारण या भूमि के उपजाऊ और हरे भरे होने के कारण से पड़ा है। इसका फैलाव हिन्द महासागर के किनारे २ अदन से रासलगत अन्तरीप तक फैला हुआ है। पश्चिम और दक्षिण में लालसागर से और उत्तर में हिजाज़ के सूबे से घिरा हुआ है। इस सूबा के अन्तर्गत छोटे २ सूबे हद्रमौत, शिहर, ओमन, नजरान वग़ैरह हैं। जिनमें सिर्फ़ शिहर में लोबान पैदा होता है। यमन की राजधानी सनआ है जो बहुत प्राचीन नगर है। जिसे पूर्वकाल में ओज़ल कहते थे और बहुत ही सुहावनी भूमि पर बसा हुआ है। लेकिन राजकुमार इससे कुछ दूर उत्तर की तरफ़ रहते हैं। यह स्थान भी कम रमणीक नहीं है। इसका नाम हिस्न अलमवाहिब या आनन्द भवन कहते

इस देश की सुखदायक जल वायु, उपजाऊ भूमि और सम्पत्ति (धन) की बहुतायत प्राचीनकाल से प्रसिद्ध है। सिकन्दर ने हिन्दुस्तान से लौटते समय इसको जीत करके यहां पर अपनी राजधानी के बनाने का विचार किया था। परन्तु बीच ही में मर जाने के कारण यह बिचारा उसका पूरा न हो पाया। यमन की हरी भरी अवस्था और धन सम्पत्ति उन पर्वतों के कारण से है जो उसके चारों ओर हैं और यहां जल की बहुताइत से सदा वसंत ही सा बन रहता है और (काफ़ी) कहवा के सिवाय अनेक प्रकार के फल बहुताइत से होते हैं। ख़ासकर उत्तम अनाज, अंगूर और मसाले होते हैं।

दूसरे सूबों की भूमि यमन से ज़ियादा उजाड़ (रेतीली) है।

उनका अधिक भाग सूखे रेत से वा ऊंची क़रारों से घिरा हुआ है। जहां तहां हरे भरे फलयुक्त स्थान हैं जिनमें जल और खजूर के वृक्ष हैं जिससे उनको बड़ा सुभीता है।

सूबा हिजाज़ इसका यह नाम इस कारण से पड़ा कि यह नजद्‌को तिहाम से जुदा करताहै। इसके दक्षिणमें यमन और तिहाम हैं। पश्चिम में लाल सागर उत्तर में शाम का रेगिस्तान और पूब में नजद का सूबा है। इसकी प्रसिद्धता विशेष करके दो प्रधान नगर मक्का और मदीना होने के कारण से है। मक्का में मसजिद और मुहम्मद साहिब की जन्मभूमि होने और मदीना में मोहम्मद साहिब के जीवन के अन्तिम दश वर्ष बिताने और यहीं दफ़न होने (क़ब्र में गढ़ने) के सबब से इसका गौरव है।

मक्का संसार के नगरों में एक प्राचीन नगर गिना जाताहै इसी को मेसा (mesa) नाम से शायद बाईबिल में लिखा है। यह नाम अरब वालों को अज्ञात नहीं है और ऐसा बिचार में आता है कि इस्माईल के लड़कों मेंसे एक के नाम से यह रक्खा गया है। इसकी स्थिति एक बंजर और पथरीली घाटी में है जो चारों ओर पहाड़ों से घिरा हुआ है। मक्का की लम्बाई दक्षिण से उत्तर २ मील है और चौड़ाई अज़याद पर्वत से कोइकनान पहाड़ के सिरे तक एक मील है। इसके बीच में समीप के पहाड़ों से लाये हुए पत्थरों से शहर बना है। मक्का में कोई सोता (चश्मा) नहीं है और जो हैं भी सो खारी पानी के हैं जिनका पानी पीने योग्य नहीं। सिवाय ज़मज़म के कुएं के जिसका सबसे अच्छा पानी है। परन्तु उसमें कुछ खारापन है और लगातार पीने से शरीरमें फुन्सियां फूट निकलतीहैं। यहां के लोग बर्षा का जल होज़ों में भरलेते हैं और उसीको पीते हैं लेकिन यह काफ़ी नहीं होता। नहर द्वारा दूसरी जगह से यहां पानी लाने के लिये अनेक उपाय किये गये और खासकर मोहम्मद सा-

हिब के समय में ज़ोबेर जो कुरेश जातिका मुखिया था उसने पहाड़ अराफात से शहर में पानी पहुंचाने की चेष्टा की परन्तु पूरी न हो सकी। तोभी ज़ियादा वर्ष नहीं गुज़री। यह काम रूमी बादशाह सुलेमान की बीबी की उदारतासे प्रारम्भ होकर पूरा हुआ। लेकिन इस से बहुत पहिले दूसरी नहर ख़लीफ़ा अलमुकतदर के समय में कई बर्ष के परिश्रम से किसी दूर के चश्मे से यहां लाई गई है।

मक्का की भूमि ऐसी बन्जरहै कि सिवाय रेगिस्तानी फलों के और कुछभी नहीं पैदा होता। यद्यपि शाह वा शरीफ़ की राजगद्दी मरबआ इस शहर से पश्चिम को ओर तीन मील के फासले से है। जहां एक अच्छा विशाल बाग़ है। जहांपर वह बहुधा रहाकरतेहैं। यहां पर गल्ला वा अनाज की उपज न होने के कारण दूसरे देशों से मंगाना पड़ता है। मोहम्मद के परदादा प्रपितामह (great grand father) हाशिम ने दो काफ़िले नियत किये थे जो साल में दो बार यहां रसद लाया करते थे एक गर्मी में और दूसरे जाड़े में। इन काफ़िलों का बर्णन जो रसद लाते थे कुरान में किया गया है। और जो अन्न यह लाते थे रजब के महीने में और यात्रियों के आने के समय में दो बार बांटा जाता था। ६० मील के फासले से तायेक स्थान से अंगूर भी यहां बहुताइत से आते हैं क्योंकि मक्का में बहुतही कम पैदा होते हैं। इस नगर के निवासी बहुधा धनी हैं क्योंकि देश देशान्तर के लोगों का मेला यहां लगाही रहता है और सब प्रकार की बस्तु यहां बिका करती है। पशु और विशेष करके ऊंट इन के पास बहुतायत से रहते हैं परन्तु मक्का से बाहर थोड़ी दूर पर अनेक अच्छे चश्मे (सोते) हैं और नदियां भी बहती हैं जिनके होने से बहुत से बाग़ और खेती के योग्य भूमि भी है।

मक्का की मसजिद और इस भूमि की पवित्रता के सम्बन्ध में अधिक मुनासिब स्थलपर आगे बर्णन करेंगे।

मदीना इसका नाम मुहम्मद साहिब से आने के पहिले याथ रेब था। शहर मदीना का विस्तार मक्कासे आधा है और यह चारों ओर दीवालों से घिरा हुआ है। इसमें छुहारे इत्यादि फल बहुतायत से होते हैं। इसके नज़दीक पहाड़ हैं। जिन मे से ओहद उत्तर में और येअर दक्षिण में दो पहाड़ लग भग ३ कोश की दूरी पर हैं। इसी नगर में मुहम्मद के विशाल मकबरा गुम्मज के भीतर बीच शहर में बड़ी मसजिद के पूर्व तरफ़ समीप मेंही है।

सूबे की रेतीली ज़मीन कड़ी गर्मीली होनेके कारण इसका नाम तिहाम पड़ा और धरातल नीचा होने कि कारण गौर भी कहते हैं इसके पश्चिम में लालसागर और दूसरी तरफ़ हिजाज़ और यमन मक्का से अदन तक फैले हुए हैं।

नजद का सूबा जिसके मानी उठे हुए देश के होते हैं यमाम, यमन और हिजाज़ के बीच बसा है और इसके पूर्व में इराक है।

यमाम का सूबा टेढ़ी शकल का होने से आरूद कहलाता है। नज्द तिहाम, बहरीन ओमान शिहर हद्रामौत और सबा सूबोंसे घिरा हुआ है। इसकी राजधानी यमामहै। इसीसे इस सूबे का नाम यमाम पड़ा। इसका प्राचीन नाम जा था। यह खास करके इसलिये मशहूर है कि मोहम्मदका प्रतिवादी झूठा नबी मुसलिमा यहां रहता था।

अरबकी जातियों का वर्णन।

इस देशके निवासी अरबी लोग बहुत प्राचीनकाल से प्रसिद्ध रहे हैं। इस देशके लेखकों ने इनके दो भेद लिखे हैं। एक प्राचीन अर्बी और दूसरे नवीन अर्बी। प्राचीन अर्बी बहुत थे और उनकी बहुत जातें थीं जो कि अब सब बर्बाद होगई वा दूसरी कौमों ने उन को हड़प करलिया। उनकी न कोई यादगार है और न कोई पता निशान ही है सिर्फ़ क़िस्से कहानियों में कुछ चर्चा रहगई है और

कुरान में भी कुछ प्रमाण पाया जाता है। प्राचीन अर्बी कौमों में से खास २ के नाम आद थमूद, तज्म जादिस और अमलेक हैं। इन कौमों के सुधार के लिये समय २ पर अनेक पैग़म्बरों का आना और उनके उपदेश को न मानने पर कुल क़ौम की क़ौमका एक संग नष्ट होना ऐसे बहुतसे आख्यान कुरान में दिये हैं।

आदकी क़ौम आदकी संतान मेंसे है। जो लड़का अव्ज का, लड़का आरामका, लड़का सेमका, लड़का नोआहकाथा। जो भाषाकी गड़बड़ी से अहकाफ़ वा हद्रामौतके रेतीले सूबेमें बसे। जहां उनके बहुतसंतान हुई-उनका पहिला बादशाह आद का लड़का शेदाद हुआ। जिसके सम्बन्ध में पूर्वी लेखक अनेक प्रकार की दन्त कथायें लिखते हैं कि इसने शहरको बनवाया जिसे उसके बापने शुरुअ कियाथा। जिसमें उसने सुन्दर राजभवन बनवाया और सुहावने बाग़से सजाया। जिसमें न रुपया खर्च हुआ और न मिहनतही देनी पड़ी। इससे उसकी मन्शा यह थी कि उसकी प्रजा में उसके देवता होने का झूठा गौरव हो-इस बाग का नाम इराम का बाग़ है और कुरान में इसका बर्णन है। अदन के रेगिस्तान में अब भी यह शहर मौजूद है।

आदकी संतान समय के फ़ेर से सच्चे ईश्वर की पूजा से गिर कर मूर्तिपूजक होगये। खुदाने हूद पैग़म्बर को भेजा कि उपदेश दो और उनको सुधारो। लेकिन उन्होंने उनके भेजे हुए की आज्ञा नहीं मानी न उसे क़बूल किया। तब खुदा ने गर्म और जी घोंटने वाली हवा चलाई जो सातरात और आठ दिन चलकर नथुनोंद्वारा उनके बदन में घुसी और उन सबको मारडाला। सिर्फ़ थोड़ेसे बचे जोहूद पर बिश्वास लाये और उसके साथ दूसरी जगह गये। पैग़म्बर बाद को हद्रामौत को लौट आये और हैज़क के नज़दीक दफ़नाये गये। जहांएक छोटा सा नगरहै जिसे कब्रहूद कहते हैं। कहावत है कि खुदाने आदकी औलाद को दबाने के लिये और इसके लिये किपैग़म्बर जो

भेजा गया है उसकी बात पर अमल करें चार वर्ष की अनावृष्टि (क़हत) डालदी। ताकि तमाम पशु (मवेशी) मरजावें और वह सब भी मरने के क़रीब थे। जिसपर उन्होंने लुक़मान (यह लुक़मान) वह लुक़मान नहीं थे (जो दाऊद के वक्तमें थे) को दूसरे साठ के साथ मक्का को भेजा कि पानी बरसने के लिये प्रार्थना करें—लुकमान अपने साथियों सहित मक्के में ठहरे। जिससे तबाही जातीरही। फिर दूसरी आद की कौम की बुनियाद पड़ी जो बाद को बन्दर होगये।

क़ुरान के कुछ उलथा करने वालों ने प्राचीन आदि की संतान को लिखा है कि वे बहुत लम्बे थे। सब से ज़ियादा लम्बे १०० हाथ के छोटे से छोटे ६० हाथ के। इस अजीब क़द को वे क़ुरान के प्रमाण की आड़से साबित करते हं।

थामूद की क़ौम थामूद की संतान थी जो लडका गाथरका जो लड़का आरामका था जो गिरकर मूर्तिपूजक होगयेथे। पैग़म्बर सालेह भेजे गयेथे कि उनको सच्चे ख़ुदा पूजक फिर बनावें। यह पैग़म्बर हूद और इब्राहीम के बीच में हुए· इसलिये सालेह कैसे आचार्य्य नहीं होसक्ते। थामूदके कुछ लोगोंने सालेह के दुःखद समाचार को सुना लेकिन बाकियोंने संदेशिया होने का सबूत चाहा कि वह एक ऊटनी को मय उसके बच्चे के उनके सामने चट्टान से निकाले और ख़ुदा की कृपा से वह वैसेही निकाली गई लेकिन उन्होंने विश्वास लानेके बदले उसके कुरड़े को काट डाला और उस ऊटनी को मार डाला इस अधर्म के काम पर ख़ुदा को क्रोध आया और तीन दिनके बाद उनको उनके मकानोंमें मार डाला। भूकम्प से और आकाशके शब्द से जिसे लोग कहतेहैं कि जिब्राईल फ़िरिश्ता चिल्लाया था "तुम सब मर जाओ"। सालेह और वे शख़्स जिनका उससे सुधार होगयाथा इस तबाही से बचगये फिर पैग़म्बर पैलिस्टाइनको जाते हुए मक्के को चले गये और वहीं बाकी दिन पूरे किये।

यह कौम पहिले यमन में बसी लेकिन हेमर के लड़के सूबा से वह निकाल दी गई। वे हेजाज़ सूबा के हिज्र देश में रहे। जहां उनकी बस्ती चट्टान से काटदी गई। इसका बयान कुरान में है यह चट्टान अबभी मौजूद है। जिसने आंखों देखा है उसका कहना है कि इसकी चौड़ाई ६० हाथ है। यह मकान थामुडीट्स के औसत दर्जे के हैं। यह दलील है उन लोगों को क़ायल करने के लिये जो भूल से इन लोगों को बहुत बड़े क़द के बताते हैं।

ज़िद्दी और ईमान न लाने वालोंपर खुदाके इन्साफ़ की मिसाल इन दो बलवान क़ौमोंकी दुःखदाई तबाही कुरान में बयान कीगई है। तैस्म की क़ौम लूदकी औलाद में से थी जो लड़का सीम काथा। और जदी का जो जीदर की औलाद मेंसे था यह दोनों क़ौमें मिली जुली तैस्म सर्कार के आधीन रहती थीं यहां तक कि एक ज़ालिमने यहां तक क़ानून बनाया कि कोई कुमारी तबतक न विवाही जावे जब तक उसका वह कुमारत्व भंग न करदे। जिसको जदीसियन वर्दाश्त न करसके। उन्होंने एक साज़िश की और बादशाह और तैस्म के सर्दारों को दावत खाने के लिये बुला भेजा और अपनी तलवारों को रेत में छिपा रखा और उनकी खुशी के दर्मियान में वे उनपर टूट पड़े और सबको कत्ल करडाला। मगर चन्द उन में से यमन की मदद पाकर भागकर बचगये। फिर (जैसा कहा जाता है) ध् हबशान इब्न अकराम ने जदीसियन को मार डाला और उनका सर्वथा सत्यानाश कर-दिया। इन क़ौमों के समय का कोई पता नहीं चलता।

जुरहम की प्राचीन क़ौम (मुसलमानों की दन्तकथानुसार जिनके पुरुषा उन अस्सी आदमियों में से थेजो नूह के साथ किश्ती में बचगये) आद की सहयोगी थी और बिल्कुल मिट गई। अमालक की क़ौम अमालक की संतान थी जो इलीफाज़ का लड़का थ

और इलाफाज़ इसका लड़का था जिसको चन्द पूर्वीय ग्रन्थ कर्त्ता कहते हैं कि अमालक हैम का लड़का था जो नूह की संतान थी और दूसरे अज़्द के लड़के जो सोम का लड़का था। इस शख़्स की संतान बहुत बलवान थी और यूसुफ के ज़माने से पहिले उनके बादशाह वालिद को आधीनता में नीचा मिश्र जीत लिया। वह पहिला था जिसने अपना नाम फिरऔन रखा- लेकिन बद्दू को इन्होंने मिश्र के तख्त पर चन्द पीढ़ियों तक अधिकार रखा। परंतु वहां के बाशिन्दों ने उन को निकाल दिया और अन्त में इसराईल की संतान ने उनको बिलकुल मेट दिया।

अरब की नवीन जातियों का बर्णन ॥

नवीन अरबियों की उनके इतिहास वेत्ताओं ने दो नसलें बयान की हैं। एक तो क़ुहतान जो इब्रका पुत्र था और दूसरे अदनान की सन्तान हैं जो इस्माईल इब्राहीम और हगरकी सन्तति हैं। पहिली नस्ल अपने को "अल अरब उल अरीबा।" अर्थात शुद्ध अरब और दूसरी को "अरबउल मुस्तरिबा" अर्थात प्राकृतिक अरब कहते हैं। यद्यपि चन्द समझते हैं कि प्राचीन अन्तिम क़ौमें ही शुद्ध अरब हैं और इसीलिये क़ुहतान की संतान मुतरेबा कहलाती है। जिस के मानी शिक्षित अरब के हैं जो क़रीब २ मुस्तरिबा के मानी देता है इसमाईल की सन्तान बहुत खिल्त मिल्त होगई है।

इसमाईल की संतान शुद्ध अरब नहीं कहलाती क्योंकि उनका पुरुषा यहूदी था। लेकिन मोदद की लड़की को ब्याहने से जारमाईटीज़से सम्बन्ध होजाने और उनके जीवनके तरीके और भाषा ग्रहण करने के कारण इसी में मिलकर एक क़ौम होगई- इसमाईल और अदनों की सन्तति में अनिश्चित होने के कारण वे अकसर अपनी बंशावलि को दूसरे से ऊंचा बताते हैं। जिनको वे अपनी क़ौमों

का पुरुषा समझते हैं । इनसे नीचे की नस्ल निश्चय छोटी है।

इन क़ौमों को वंशावली अरब के इतिहास में मिसाल देने के बड़े काम की है । उनके प्रमाणिक लेखकों से जिनकी खोज का हवाला देते हैं, उनकी वंशावली बनाने का श्रम लिया है । यह दो क़ौमें सेम की सन्तति हैं । इनके सिवाय और भी दूसरी क़ौमें हैं जो हेम और उसके पुत्र कुश से उत्पन्न हुई हैं। लेकिन यह कठिनाई से कहा जाता है कि कुस्तियों ने खास अरब को नहीं बसाया । बल्कि दजला और फारिस की खाड़ी के किनारों को बसाया । जहां पर वह अपने पुरुषों की असली बस्ती खुज़स्तान वा सुसियाना से आये । वे हा न हों (अनुमान से) समय के फेर से अरब की दूसरी क़ौम से मिल गये होंगे परन्तु पूर्वी लेखक उनका बहुत कम वा बिल्कुल ध्यान नहीं देते।

अरब के लोग कई शताब्दियों तक कहतान के वंश के राज्य शासन के आधीन रहे-जिसके एक पुत्र यारबने यमन का राज्य और दूसरे पुत्र ज़ोरहेम ने हिजाज़ का राज्य स्थापन किया ।

सूबा यमन में वा उसके भाग सबा और हद्रमौत में हमयार क़ौम के शाहाही राज्य करते रहे । यद्यपि राज्य कहतान की सन्तति और उसके भाई के हाथ में चला गया । तथापि इन सबने अपना खिताब हमयार के राजा और टोबाही रखा जिसके मानी उत्तराधिकारी .. होते हैं और राजपूत वंश वही असर रखता है जैसा रूमियों के बादशाहों में क़ैसर और मोहम्मद के उत्तराधिकारियों में खलीफ़ा रखता है। छोटे २ राज्य भी यमन में थे परन्तु हमयार वंश को अपना सिरताज मानते थे ।

यमन में जो कौमें बसी थीं उनपर सबसे पहिली बिपत्ति अरम नदी की बाढ़ से हुई । यह घटना सिकन्दर के समय के बाद जल्दही हुई थी और अरब के इतिहास में प्रसिद्ध बातहै जिसके कारण आठ क़ौमें अपने देशको छोड़कर सीरिया जा बसीं और जाकर घस्सान

और हीरा राज्यों को स्थापन किया और इसी समय के लगभग वक्र, मोदर और रबीआ तीन सर्दारों ने मैसोपोतामियां में जाकर अपने साथ के लोगों से तीन सूबे दियार बक्र, दियार मोदर और दियार रबिया बसाये थे। जो आज तक उन्हीं के नाम से प्रसिद्ध है। अब्द शेम्स नाम के सर्दार ने जिसका लक़ब साबा भी था एक नगर साबा नाम का बसाया और इसमें एक ऐसा बड़ा बान्ध बनाया कि पहाड़ों का कुल पानी इसमें जमा हुआ करता था जिस से शहर के निवासियों का पीने का काम चलता था और नहरों द्वारा सिंचाई के भी काम में आता था। इसके चारो ओर पक्की इमारतें बनवा दीगई थीं किसी तरह का खटका इसके फटने टूटने का न था। परन्तु दैव का कोप ऐसा हुआ कि एक दिन रात्रि के समय अकस्मात यह बांध टूट गया जिसके कारण सोते हुए सब नगर निवासी और आस पास के नगर निवासी सब के सब बहगये।

इस आफ़त के बाद जो कौमें यमन में रहगईं वह पहिलेही राजा के अधिकार में बनी रहीं। मोहम्मद के जन्म से ७० वर्ष पहिले यमन में जो ईसाई रहते थे उनकी रक्षा के लिये यूथोपियन के बादशाह ने लश्कर भेजकर वहां के बादशाहको फ़तह करलिया और कुछ वर्षोंतक यमन यूथोपियनके राजा के अधिकार में रहा। उसके बाद फ़ारिसके बादशाह खुशरो अनुशिरवान की सहायता से हुमियारके वंशज सेलिफ़ने इसकाराज्य स्वयं अपने हाथ में कर लिया अन्त में मोहम्मद ने इसको अपने अधिकार में किया। और वहां का अन्तिम राजा वजान या बधान जो फ़ारिसवालों की तरफ़ से नियत (तैनात) हुआथा। मुहम्मदके अधिपत्यको स्वीकार करके मुसलमान होगया। हुमियारवंश में राज्य २०२० या २००० वर्ष रहा।

यह पहिले कहा जा चुका है कि अराम नदीकी बाढ़के समय जो लोग अपना देश छोड़गये थे उन्होंने दो राज्य क़ायम किये और

यह दोनों राज्य खास अरब की सीमा के बाहर थे । एक उनमें से घस्सान था। इस राज्य के क़ायम करनेवाले अज़्द कौम के थे जो घस्सान नामक झील के समीप शामके डैमसैंना में बसे और इसीसे इनका नाम घस्सान पड़ा और सालिह की क़ौम के दज्जामियन ने अर्बियोंको निकाल दिया। जो देशमें इनसे पहिले अधिकारी थे और जहांपर ४०० वर्ष राज्य किया । कोई कहते हैं कि ६०० वर्ष और अब्बुल फ़िदा कहतेहैं कि ठीक करीब ६१६ वर्ष राज्य किया । इनके पांच राजों के नाम हारेथ थे। जिनको यूनान वालों ने परेटस् लिखा है और एक उनमें से वह था,जिसके गवर्नर ने सेंटपाल लेनेके लिये दमस्कके फाटकों की निगरानी करे रहने के लिय आज्ञादी थी। यह क़ौम ईसाइयों की थीं। उनका अन्तिम बादशाह अलपेहम का लड़का जबालह था जिसने अरबवालों का शाम में अधिकार होनेपर खलीफ़ा उमर की आधीनता में मुसलमानी मत स्वीकार कर लिया था। परन्तु उससे अपमानित होनेपर फ़िर ईसाई होगया और कुस्तुन तुनियां को चलागया।

दूसरा राज्य हीरा का था जिसे मालेक़ ने जो चाल्डिया या ईराक़ के कहलान की औलाद में से थे क़ायम किया। लेकिन तीन पीढ़ी के बाद में राज्य, बिवाह के सम्बन्ध से लखमियन जिन्हें मुन्ड-र्स कहते है के अधिकार में आया। यद्यपि फ़ारसवाले बीच २ में तंग करते रहे तद्यपि इन्होंने खलीफ़ा अबूबक के जमानेतक राज्य कायम रक्खा। मगर खालेद इब्न अलवालिदके हथियारों से उनके आखिरी बादशाह अलमुन्दर अल मघरूर मारे गये और राज्य भी जातारहा। यह राज्य ६२२ वर्ष ८ महीने रहा। जैसे घस्सानके राजा रूमी बादशाहों की ओरसे सिरियाके अर्बोंपर अधिकारीथे इसीप्रकार हीराके राजा फ़ारिसवालों के नायब रूपसे ईराक के अर्बों के अधिपति थे।

केहतान के लड़के जुरहम ने हिजाज में राज्य किया जहां उनकी

सन्तान ने इसमाईल के समयतक राज्य किया लेकिन उसका विवाह मुदाद की लड़की के साथ होजाने से जिसके १२ लड़के हुए उनमें से एक को उनके मामा अरहामिटस से राज्य मिला। यद्यपि कुछ लोग कहते हैं कि इसमाईल की संतान ने उसकौम को निकाल दिया जो जोहना को लौट रहे थे। अन्तको सब बाढ़ से मिट गये।

जुरहामिबंश के निकाले जानेपर हिजाज़ का राज्य बहुत शताब्दियों तक एक राज्य के आधीन नहीं रहा किन्तु क़ौमों के सर्दारों के दर्मियान इसी तरह पर बटगया जैसे आज कल अरब का सहारा शाशित किया जाताहै।

मक्का में मुहम्मद के समय तक कुरेश क़ौम के सर्दार राज्य करतेथे। इनके उपरान्त चन्द और दूसरी कौमों को छोटी २ रियासतें मस्लन फेन्डा इत्यादि की थीं चूंकि हमको अरब का इतिहास लिखना अभीष्ट नहीं है इसलिये हम इसे यहीं छोड़ते हैं।

मोहम्मद के पीछे उनके उत्तराधिकारी (जाननशानी) खलीफे २०० बर्ष तक अरब के अधिपति रहे परन्तु सन् ३२५ हिजरी में इस देश का बहुत सा अंश करमेटियन क़ौम के हाथ आया। इन लोगों ने बहुत अत्याचार मक्का में भी किये और खलीफ़ा इनको खिराज (कर) देकर मक्का में यात्रियों को हज्ज करने के लिये स्वतन्त्रता प्राप्त करते थे। इसके पीछे थबेटबा जो मुहम्मद के दामाद अली के बंश में था यमन में राज्य करता रहा और इसके खान्दान में अरब का राज्य बहुत कालतक रहा। अलीकी औलाद दशवीं शताब्दी तक अरब और मिश्र में राज्य करती रही—आजकल जो बंश यमन में राज्य करता है याय़ूब के खान्दान में से है। जो तेरह शताब्दी में भी राजा थे और खलीफ़ा इमाम का लक़ब बराबर अपने नाम के साथ रखते हैं। कुल यमन इनके अधिकार में नहीं हैं। इसमें खास करके फताश इत्यादि छोटे २ स्वतन्त्र राज्यहैं। यमन में

राज्य गद्दी बेटेही को नहीं दी जाती वरन राजबंश में से जिसको बड़े २ सर्दार पसन्द करते हैं वही राजा होता है।

मक्का मदीना के हाकिम जो मुहम्मद केही वंश के होते चले आये हैं। खलीफा की मातहती छोड़कर स्वतंत्र होगये। अब उनमें से चार खान्दान जो अली के बेटा हसनजी की औलाद में से हैं। शरीफ़ के लक़ब से राज्य करते आये हैं। यह चार खान्दान बनू कादर, बनू मूसाथानी, बनू हाशिम और बनू कितादाके नाम से प्रसिद्ध हैं। इनमें से अन्तिम अबभी अथवा थोड़ा समय हुआ तब मक्का की राज्य गद्दी पर रहाहै। करीब ६०० वर्ष इनका राज्य मक्के में रहा। बनू हाशिम का खान्दान अबभी मदीने में राज्य करता है जिन्हों ने किनारा कौम से पहिले मक्के में राज्य किया था।

यमन, मक्का मदीने के राजा बिल्कुल स्वतन्त्रहैं। और तुर्कों के आधीन बिल्कुल नहीं हैं जैसा चन्द प्राचीन लेखकों का ख्याल है। इन बादशाहों में आपस की फूट के कारण पहिला सलीम औरउस के पुत्र सुलेमान को लाल सागर के किनारे पर अरबमें दखल करने का अवसर मिला था परन्तु उनके हाथ में जद्दा बन्दर गाह ही रह-गया है। यहां उनका बाशा थोड़ेही देश पर अधिकारी है। अरब में उसका बिशेष अधिकार कुछ भी नहीं।

अरबों की यह स्वतन्त्रता तूफ़ान के समय से चली आई है। ऐसी स्वतन्त्रता इतने दीर्घकाल तक किसी दूसरी क़ौम को सुनने में नहीं आई। यद्यपि बहुत से आक्रमण उनपर हुए पर कभी किसी ने उनको पराजय नहीं कर पाया। न असेरिया के न मिडियाके न फ़ारिश के बादशाह वहां क़दम जमा सके हैं। फारिशवालों की इज़्ज़त यह लोग इतनी करते रहे हैं कि लोबान उनको भेंट में भेजते थे परन्तु उनके आधीन कभी नहीं हुए।

यहांतक कि कैमबाईसीज जो फारिस का प्रसिद्ध बादशाह था। जब मिश्र को जीतने के लिये जाने लगा तो उसे भी लाचार होकर उनके देशमें होकर लश्कर लेजाने के लिये इनसे आज्ञा लेनी पड़ीथी। सिकन्दर ने यद्यपि फारिस को जीत लिया था परन्तु अरबों की इसका किञ्चित भी भय न था यहां तक कि सब क़ौमों ने दूत इनके पास भेजे परन्तु अर्बोंने न आदि में दूत भेजे न अन्त में। इसपर सिकन्दर ने चाहा भी कि ऐसे धनी और उपजाऊ देशको अपने हाथ में करले और यदि मर न जाता तो शायद अरब लोग यह शिक्षा उसे भली भांति देते कि जो अपनेको अजेय समझताथा सो हौसला मिथ्या था। हमें पता नहीं लगा कि उसके एसिया वा मिश्रके उत्तरा धिकारियों (जाननशीनों) में से किसीने इनके विरुद्ध चढ़ाई कीहो। रूमवालेंाने भी खास अरब को कभी नहीं जीत पाया। केवल इतनाही अधिकसे अधिक हुआ था कि शाममें कुछ कौमें उनको कर (खिराज) देने लगीं थीं जैसा कि पोर्म्पाने शम्सुल करीमसे जो हेम्स वा इमेसा का बादशाह था कर लिया था। परन्तु न तो रोमवालों का और न दूसरी किसी क़ौम का अरबमें प्रवेश कभी नहीं हुआ। हां अगस्टस सीजर (कैसर) के समय में इलियस गेलस ज़रूर वहां पहुचा परन्तु पराजित करके आधीन करना तो एक ओर रहा बीमारी और अकस्मात घटनाओं से उसकी उत्तम सेना प्रायः नष्ट होगई और उसको खाली हाथ ही लौटना पड़ा। इस बुरी ना कामयाबी से फिर कभी रोमनवालों का साहस इधर चढ़ने का नहीं हुआ। यद्यपि ट्रेजन की इतिहासवाले मिथ्या प्रशंसा करके लिखते हैं कि उसने अरबमें सिक्का और तमगे गढ़वाये परन्तु यथार्थ में अरब लोग कभी उसके वशीभूत नहीं हुए। सिर्फ बाहरी सीमा प्रान्त का किनारा ही जिसको अरब पीट्रिया करके लिखा है वहीं तक इनका अधिकार कठिनाई से पहुंचा था और एक इतिहासमें यह भी लिखा है कि एगैरन्स लोग

जो इस बादशाह के विरुद्ध होगये थे उन्होंने इसको ऐसा करडाला कि उसे वहां से लौटना पड़ा।

अरबवालों की मुर्ति पूजा और नक्षत्र पूजा।

जहालत के ज़माने में यानी मुहम्मद से पहिले अरबवालों का मत (मज़हब) स्थूल मूर्ति पूजन ही था। साबियन का मत देशभर में छाया हुआ था यद्यपि उनमें बहुत ईसाई यहूदी और मेजियन भी थे।

साबियन मत का संक्षिप्त वृत्तांत यह है कि एक परमेश्वर को ही नहीं मानते थे वल्कि अद्वैतवाद पक्षके बहुत प्रमाणयुक्त वाक्य उनके ग्रन्थों में थे। तथापि तारागण (नक्षत्रों) या उनमें जो देवतारूप फिरिश्ते अधिपति थे उनकी भी पूजा यह लोग करते थे। और उनके मतसे यह फिरिश्ते परमेश्वर के आधीन अधिपति रूपसे हैं जो संसारकी रक्षाके लिये नियत कियेगये हैं। चार बड़े मानसिक सद्गुणों में यह लोग अपने को परिपूर्ण होनेकी चेष्टा करते थे और उनकामत था कि पापियों को ६ हज़ार वर्ष पर्य्यंत पापकर्मका दण्ड भोगना पड़ेगा। तत्पश्चात वह कृपाके अधिकारी होंगे। वे तीनबार दिनमें ईश्वर की प्रार्थना करते थे। सूर्योदय से पहिले आध घंटामें वह अपनी आठो प्रार्थनायें (इबादतें) पूरी करने की चेष्टा करते थे। दूसरी बार मध्यान्हसे पहिलेही आरम्भ करके ठीक मध्याह्न में अपनी पांच इबादतें (प्रार्थनायें) समाप्त करतेथे और तीसरी प्रार्थना(नमाज़) सूर्य अस्ततक समाप्त करतेथे। तीनबार सालमेंव्रत करतेथे पहिला उपवास ३० दिनका दूसरा ६ दिनका और तीसरा ७ दिनका होता था। वे बहुत से बलिप्रदान करतेथे परन्तु उसका कुछ भी अंश नहीं खातेथे। सब जलाकर भस्म करदेते थे। सेम,लहसन,दालैं और कुछ सागपातको विशेषकर निषिद्ध मानतेथे। इन लोगों का क़िब्ला जिस ओर नमाज़

(प्रार्थना) पढ़ते वक्त मुंह करते हैं ग्रन्थकार भिन्न २ बताते हैं। कोई उत्तर, कोई दक्षिण, कोई मक्का कोई सितारे की ओर जो इनका इष्टदेव था, बताते हैं। इस बाबत चलनमें अवश्य भिन्नता होगी। मेसेपोटामिया के हैरन नाम नगर की यह लोग तीर्थ यात्रा करने जाया करतेथे और मक्का की मसजिद तथा मिश्र की पिरामिडों को भी जिन्हें अपने आचार्य्य सेठ और उसके पुत्र ईनौक और सेबी की क़बरगाह मानते थे इनको भी तीर्थ समान समझकर मुर्गा वग़ैरह की बलि और लोबान की धूप दिया करतेथे। इनके धर्मग्रन्थ चाल्डी भाषामें हैं जिनको सेठ का ग्रन्थ कहते हैं और जिसमें उपदेश हैं तथा बाईबिल के भजनों का भाग (साम्स) को यह लोग मानते थे। लोग कहते हैं कि साबीसे इनका नाम साबियन पड़ा। परन्तु मुमकिन है कि "साबा" शब्द जिसका अर्थ स्वर्ग का सत्कारी है उससे इनका यह नाम पड़ा हो। जो बिदेशी इनके देशमें गये हैं उन्होंने इनको सेन्ट जान बपटिस्ट के शिष्य और उसी मतके ईसाई करके लिखा है। और बपतिस्माके क़िस्म की रस्म इनमें थी यह ईसाईपन का पूरा चिन्ह है। और इन्हीं लोगों को क़ुरान में किताबवाले करके लिखा है।

साबी मतके अरबी लोग ध्रुवतारो और नक्षत्रों को पूजते थे और उनके अधिष्ठातृ देवता और फिरिश्तों की मूर्ति बनाकर इस आशा से पूजन करते थे कि इनके द्वारा संसार के उत्पन्न कर्ता और स्वामी "अल्लाह ताला" अर्थात ईश्वरके समीप अपनी पूजा प्रार्थना पहुंचा सकें। असल में यह एकही परमात्मा को मानते थे। उससे नीचे दर्जेमें दूसरे देवताओं को इलहात अर्थात लघु देवता कहतेथे। यूनान वाले इस शब्द को नहीं समझे। यूनानियों का तो सब क़ौमके देवताओं को अपने देशके देवताओं में घटित करदेनेका स्वभाव है। इससे उनका कथन है कि इनके दोही इष्टदेवता उरोटाल्ट और अलोलत थे और इनमें पहिले को अपने सबसे बड़े देवता बैकसको

कर इस नक्षत्र के पुजवाने में बड़ा प्रयत्न किया और मुहम्मद ने भी कुरेश जाति से मूर्ति पूजा छुड़वाने का उद्योग किया था। इसलिये उन्होंने मुहम्मद का उपनाम अबूकब्शा का पुत्र रक्खा था। इस नक्षत्र की पूजा के सम्बन्ध में क़ुरान में संकेत किया गया है। क़ुरान में सिर्फ़ तीनही फ़िरिश्ते लिखे हैं जिनको यह लोग पूजते थे। वह अल्लात अलअज्ज़ा और माना तीनों स्त्रीलिङ्ग हैं। इनको परमेश्वर की कन्यायें कहते थे और यही नाम वह अपने फ़िरिश्तों और मूर्तियों के रखते थे अर्थात इनको फ़िरिश्तों की इबादतगाह (पूजनका स्थान) समझते थे और उनमें शक्ति परमेश्वर की मानकर पूजा इसहेतु से करतेथे कि परमेश्वरके समीप इनके द्वारा उनकी सिफारिश पहुंचे।

अल्लात मूर्ति थाकीफ़ जाति की थी जो तायफ़ में रहतेथे और इसका मन्दिर नखलह स्थान में बनाया था। इस मूर्ति को अलमुगरह और अलसोफियान ने सन् ६ हिजरी में मोहम्मद के हुक्म से तोड़ा था। लोग कहते हैं कि तायफ़ के लोगों को और विशेष करके उनकी स्त्रियों को बहुतही दुःख इस मूर्ति के तोड़ने पर हुआ था। मोहम्मद के साथ शर्तें ठहराने में एक बात उन्हों ने मोहम्मद से यह भी चाही थी कि तीन वर्ष तक उनकी यह मूर्ति न तोड़ीजावे अथवा पीछे उन्हों ने एकही महीने की मुहलत चाही। परन्तु मोहम्मद ने एकभी न स्वीकार किया- यह "अल्लात्" शब्द अल्लाह से निकला मालूम होता है और उसके मानी देवी के हैं।

इसीतरह अलअज़्ज़ा मूर्ति क़ौम (जाति) क़ुरेश किनानह और सलीमवालों की थी। कुछ लोग इसको मिश्रका कटीला वृक्ष व बबूल बताते हैं जिसको घरफान जाति के लोग पूजते थे। जिसकी प्रतिष्ठा पहिले पहिल एकपुरुष धालेमने की थी और उसके ऊपर एकमन्दिर जो बोसके नामसे प्रसिद्ध था इस प्रकार बनवाया था कि जब कोई आदमी उसमें घुसता तो उसमें से शब्द होता था। इस मूर्ति को

सन् ८ हिजरी में मुहम्मद ने खालिद इब्न बलीद को भेजकर तुड़-वाया था जिसने जाकर मन्दिर को तोड़कर इस वृक्ष या मूर्तिको कटवाकर जलवा दिया और इसकी मुख्य पुजारिन को मारडाला। कोई कोई कहते हैं कि एक शख्स जोहेर ने इस मन्दिर को तुड़वा-या था और धालेमको मारडाला था क्योंकि धालेमने इस मन्दिर को इस अभिप्रायसे स्थापन किया था कि कावाको जानेवाले यात्री यहां ही आवें और मक्का की प्रतिष्ठा में हानि पहुंचे अज्ज़ा शब्द का अर्थ बहुत शक्तिसाली है।

मक्का मदीना के बीच में रहनेवाली क़ौम हुदहेल और खजाह और किसीर के कथनानुसार क़ौम अउस, खजराज और थाकीफ़ भी मानाह देवी को पूजते थे जो एक बड़े पत्थर की बनी हुई थी। यह शब्द " मना " से बना है जिसका अर्थ बहना है क्योंकि यहांपर बलिप्रदान का रुधिर बहता था और इसी के अनुसार मक्का के समीप की घाटी " मोना " नामकी प्रसिद्ध है जहां आजकल भी यात्री हज्ज में (कुरबानी) बलिके पशुओं को मारा करते हैं। कुरानमें इन तीनके सिवाय पांच और मूर्तियों का ज़िक्र है बद्द, सवा, याग़ूथ, यायूक और नस्र–यह पांचों तूफान से पहिले की हैं और नूहने इनकी पूजा का निषेध अपने उपदेश द्वारा किया था। यह पांचो बड़े धार्मिक पुरुष थे जिनको मान देनेके लिये अरब के लोग इनको देवता मानकर पूजने लगे। बद्द को लोग स्वर्गका रूप समझते थे और इसकी मूर्ति मनुष्य के आकार की बनाकर दोमत अलजन्दाल की रहनेवाली कल्ब जाति पूजती थी। सवाकी मूर्ति स्त्रीके आकार की थी जिसको हमदान की जाति और कोई २ लिखते हैं कि रोहत निवासी हुदहैल की जाति पूजती थी। कहते हैं कि तूफान के पीछे यह मूर्ति कुछ समय तक पानीमें पड़ी रही थी और शैतान ने इसको पाया था और हुदहैल के लोगोंने इसकी यात्रा नियत की थी।

याग़ूथ का आकार सिंहका था जिसको क़ौम मधाज और यामान पूजते थे। यह शब्द " याथा " धातु से बना है जिसका अर्थ "सहाय करना " है।

यायूक का आकार घोड़े का था जिसको मुराद्की जाति और किन्हीं के मतसे हमदान की जाति पूजती थी। यह एक बहुत धर्मात्मा पुरुष था जिसके मरने का बहुत शोक हुआ था। जिसकी तसल्लीके लिये शैतान मनुष्य रूपमें प्रगट हुआ और उसने लोगों से कहा कि इस पुरुष की मूर्तियां अपने मन्दिरों में स्थापन करें जिससे पूजाके समय उनके सन्मुख रहा करै। ऐसेही सात और भी अपूर्व चरित्र के लोगों का मान भी लोगोंने किया था और पीछेसे यह सब देवता रूपमें पुजे जाने लगे। " आका " धातु का अर्थ रोकना या बाज़ रखना है। उसीसे शब्द " यायूक " बना प्रतीत होता है।

नस्र को हमियार जाति अपने देशमें धूअल खालाह स्थान पर गिद्ध स्वरूप में पूजते थे। इस शब्द का अर्थ भी गिद्ध है। काबुलके एक नगर बमियान में भी दो मूर्तियां पचास २ हाथ ऊंची थीं जिनको कोई २ याग़ूथ और यायूक़ की और कोई २ मनाह और अल्लातकी बताते हैं। कोई २ इन्हीं मूर्तियोंके समीप एक तीसरी भी वृद्धा स्त्रीके आकार की नसरिम वा नस्र के नाम की लिखते हैं। यह मूर्तियां पोली थीं, जिससे शगुन और भविष्यत वाणीका अभिप्राय निकलता था परन्तु अर्बों की मूर्तियोंसे भिन्न मालूम होती हैं। सोमनात की मूर्ति " लाट " का भी ज़िक्र है जो २०० फीट ऊंची थी जिसको मुहम्मद इब्न सुबकतगीन ने अपने हाथ से तोड़ाथा। ठोस सोनेके छप्पन खम्भे इसमें थे। क़ुरान में इतनीही मूर्तियों का ज़िक्र है परन्तु अरबवाले और भी बहुतेरी मूर्तियां पूजते थे। सब गृहस्थोंके यहां अपने २ इष्ट देवता रहते थे जिसकी बन्दना बिदेश जाने के समय और परदेश से घर लौटकर आने के समय किया करते थे।

मक्का के काबा के समीप उनकी वर्ष के दिनों की गिनती के बमूजिब ३६० मूर्तियां थीं। इनमें से प्रधान मूर्ति "हुबल" की थी जिसको शाम के नगर बोल्का से अमरू इब्न लुहाई अरबमें लाया था। इस मूर्ति द्वारा मनमानी वर्षा प्राप्त होने का दावा लोगों को था यह संगसुलेमानी की बनी हुई थी और जब संयोग से एक हाथ इसका खंडित होगया तो कुरेश लोगोंने उसके स्थान में सुवर्ण का हाथ बना दिया। इस मूर्ति के हाथ में सात तीर बिना पंख के रक्खेथे जैसे अरबवाले भविष्य वाणी के कहने में प्रयोग करते हैं। यह मूर्ति इब्राहीमकी बताते हैं जिसके आस पास बहुत सी मूर्तियां। फिरिश्तों और पैगम्बरों की भी थीं जिनमें से कोई २ इस्माईल की मूर्ति के हाथ में दिव्य तीर बताते हैं। हुबल की मूर्ति के साथ दो मूर्तियां असाफ़ और नायेलाह भी आई थीं जिनमें से एक स्फ़ा पर्वत पर और दूसरी मरवा पर्वत पर स्थापित की गई थीं। जुरहामकी जाति में से असाफ़ को अमरू का पुत्र और नायेलाह को सहाल की पुत्री बनाते हैं जो काबा में व्यभिचार करने के अपराध से पाषाण होगये थे जिनको कुरेशवाले इतने मान सहित पूजा करते थे कि मुहम्मद ने इसका निषेध तो किया परन्तु पहाड़ों पर जानेके लिये परमेश्वरके न्यायके स्मारक (यादगार) चिन्ह समझकर आज्ञा दी थी।

हनीफ़ा जाति एक मूर्ति का पूजन करती थी जो मढ़े हुए आटा व खमीर की बनी हुई थी और जिस तरह कैथोलिक मत के ईसाई अपनी मूर्तियों को पूजते हैं। उससे अधिक यह जाति इस मूर्ति का मान और आदर करती थी यहांतक कि वे इस खमीर में से खाने के लिये कदापि न छूते थे सिवाय इसके जब दुर्भिक्ष से लाचार होजावैं। अरबों की बहुतसी मूर्तियां और विशेषकर "माहान" मूर्ति अनगढ़ पत्थरों की थीं। इस्माईल की सन्तान ने इनका पहिले पहिल प्रचार किया था और जब सन्तान इतनी बढ़गई कि मक्का में

इनके लिये स्थान संकुचित होगया तो बहुत से लोग जो अन्यत्र जाव से थे अपने साथ इस पवित्र स्थल के पत्थरों का लेजाना रस्म सम-झते थे। इनको वह पहिले तो पवित्र समझकर अपने नये स्थानों में घेरा खींचकर रखदेते थे और पीछे मूर्ति मानकर पूजा करने लगते थे।

प्राचीन कालके बहुतेरे अरब वासी न तो इसबात को मानते थे कि सृष्टि कभी पहिले हुई थी और न आने वाली क़यामत को मानते थे-स्वभावही सृष्टि की उत्पत्ति और बिनाश का मूल कारण मानते थे। कुछ लोग दोनों को मानते थे और क़ब्रों पर ज़िन्दा ऊंट बांध देते थे। और उसको चारा दाना न देकर योंही मरने देते थे कि मुर्दों के साथ रहैगा और क़यामत के दिन उनकी सवारी के काम आवैगा-पैदल चलना उस समय निन्दित समझते थे। किसी २ का बिश्वास था कि मुर्दे के मस्तिष्क (दिमाग़) का रुधिर एक पक्षी के रूप में होजाता था जिसका नाम हामाह रक्खा था और यह पक्षी सौवर्ष में एक बार क़ब्र के पास आता था। कोई २ समझते थे कि जो मनुष्य अन्याय से मारा जाता था उसकी आत्मा पक्षी बनकर " ओसक़ुनी ओस्कुनी " (यानी पीने को दो) रटा करती थी अर्थात् घातक का रुधिर पीने को मांगती थी और जब उस मनुष्य की मृत्यु का बदला चुक जाता था तो यह पक्षी उड़ जाता था क़ुरान में इस पर बिश्वास करने का निषेध है।

अरब में अन्यदेशी मतों के फैलने का वर्णन।

उपरोक्त अरबों को छोड़कर अब हम उनकी तरफ़ ध्यान देते हैं जिन्होंने मत अवलम्बन किये थे। मुहम्मद के पैदा होने से बहुत पहिले फ़ारिसवालों ने मेजिअन मत अरब की बहुतेरी क़ौमों में बिशेष करके तामीम जाति में जारी करदिया था और इस मत के बहुत सिद्धान्त स्वयं मुहम्मद ने अपने क़ुरान में रक्खे हैं।

रोमवालों के अत्याचार से बहुतेरे यहूदी भागकर अरब में बसे थे। इन्होंने बहुतसी जातिओं को अपना मत विशेषकर कनानाह अलहरेथ, इब्नकाबा और केनडाह को सिखाया था। समय पाकर यह लोग बहुत बली होगये और बहुतेरे क़िले और नगर इनके हाथ में आगये। परन्तु यह मत अरब में नया न था अबूकर्ब असद जो यम्मान का बादशाह मुहम्मद से ७०० वर्ष पहिले था। उसने मूर्ति पूजक हमयेरायटों में यहूदी मत चलाया था उसके पीछे के बहुत से बादशाहों में भी बहुतेरोंने इस मतको स्वीकार किया था। जिनमें से एक यूसफ़ धूनवास इतना तअस्सुबी था कि जो यहूदीमत स्वीकार न करता उसको जलती अग्निके गढ़हे में डाल देता था। इस अत्याचार का ज़िक्र क़ुरान में है। मुहम्मद से पहिले अरब में ईसाई मत भी बहुत कुछ फैलचुका था। यह तो निश्चय नहीं कि अरबमें सेंट पाल ने जाकर उपदेश द्वारा ईसाई मत फैलाया हो परन्तु तीसरी शताब्दी में पूर्वी चर्च में जो विवाद और झगड़े हुए थे उससे बहुत से ईसाई भागकर इस स्वतंत्र देशमें आ बसे थे यह ईसाई कैथोलिक प्रथा के ही थे इससे अरबों में यह मत सुगमगति से फैलगया। हमियार, घस्सान, रबीआ़तिग़लब, बहरा, नौनूच, जातियां और टे और कुदाआ जातियों के कुछ लोगों ने और नजरान के निवासी और हीरा के अरब इन लोगोंने मुख्य रूप से ईसाई मत स्वीकार कियाथा।

हीरा के राज्य में भी ईसाइयों को बहुत सी क़ौमें धूनवास के अत्याचार के कारण भागकर यहां आ बसी थीं और हीरा का बादशाह अबूकबूस जो मुहम्मद के जन्म से कुछही महीने पहिले मारा गया था बड़ा शराबी था अपनी प्रजा सहित ईसाई होगया था। ईसाई मतका ज़ोर अरब में बहुत था और उनके महन्त (बिशप) भी धाफार अकूलामें जिसको कुछ लोग कूफ़ा शहर कहते हैं और हीरा आदि स्थानों में रहते थे।

प्राचीन अरब की रहन और उनका व्योपार ।

ये मुख्य मत अरब में प्रचलित थे परन्तु स्वतंत्रता के कारण अरबों की क़ौमें बहुधा अन्य मतों को भी ग्रहण करलेतीं थीं विशेष करके कुरेशजाति ने यहूदियों की सैड्यूसीज़ से मिलता जुलता एक पंथ जैनी डिसिज़्म को स्वीकार कियाथा जिसमें एक ईश्वर को मानते थे और मूर्ति पूजा से अलग रहते थे। मुहम्मद के पैदा होने से पहिले अरब में दो प्रकार की रहन थीं। एक तो शहर और नगरों में रहकर भूमि को जातते बोते और तालके बृक्षों को लगाते और पशुओं की चराई और नसल उत्पन्न करके आजीविका करते थे और सब प्रकार बंज व्योपार में याकूब (जैकब) के समय मेंही निपुण थे। कुरेश की जाति तिजारत पेशे में अधिक लयलीन थी। मुहम्मद कोभी नई उम्र में यही पेशा सिखाया गया था । क्योंकि अरबोंमें कुल परम्पराके अनुसार आजीविका का प्रधानरूपसे प्रचार था। दूसरेअरब चरवाहो करते थे और खैमों मेंरहा करते थे। जहां पानी और चारे का सुभीना होता था वहां ही डेरा डालकर रहने लगते थे। बहुधा यह लोग जाड़े में ईराक़ में और शाम (सिरिया) के पास रहा करते थे । ऊंटों के मांस और दूध से अपना निर्वाह करते और मुसाफिरों को लूटना मारना इस्माईल के वंशजों के स्वभाव के अनुकूल था। उसमें कुछ दोष नहीं समझते थे।

अर्बी भाषा और अर्बी अक्षरों की उत्पत्ति ।

अरबी भाषा संसार की भाषाओं में बहुत प्राचीन गिनी जाती है और बेबिल की गड़बड़ी के समय में अथवा उसके थोड़ेही काल उपरान्त इसकी उत्पत्ति हुईथी। भिन्न २ बहुत सी बोलियां इसमें हैं। जिसमें से मुख्य एक तो हमियार और अन्य शुद्ध (असली) अरबों की और दूसरी कुरेश जाति की थी। शाम की भाषा को स्वच्छता

को अन्य भाषाओं (बोलियों) की अपेक्षा हमियार क्रौम की बोली अधिक पहुंचती थी क्योंकि अरबों के पुरुषा यारब की मातृभाषा शाम की भाषाही थी और यह भाषा ये लोग सबसे प्राचीन मानते हैं। यारब के समय से ही शामी भाषा के स्थान में अरबी भाषा का परिवर्तन हुआ । कुरेश जाति की भाषा शुद्ध अरबो कहलाती है क्योंकि कुरान इसी भाषा में लिखाहै। इस भाषा की स्वच्छता और सुन्दरता का कारण यह है कि कुरेश काबाके मालिकथे और मक्कामें रहते थे जो अरब का केन्द्र रूप है और जहां अन्यदेश के लोगों का समागम नहीं था जिससे भाषा में भ्रष्टता उत्पन्न होती तथा अरबके विद्वान यहां जमा हुआ करते थे जिनकी कविता और बोल चाल में शब्द, पद, वाक्य और जो उत्तम बातें होतीं थीं उन सबको अपनी भाषा में मिलालेने का अवसर मिल जाता था।

अरबवाले अपनी भाषा की बहुत प्रशंसा करते हैं और अन्य भाषाओं से इसमें शब्दों की बाहुल्यता, भाव प्रगट करने में आसानी और स्वर आलाप आदि की माधुर्य्यता भी बताते हैं। बिना दैवीबल के इस भाषामें निपुण होना वहांके लोग असम्भव बताते हैं। तिसपर यह कहते हैं कि अधिकांश इस भाषा का लुप्त होगयाहै। आश्चर्यभी इसमें कुछ नहीं क्योंकि लेखन शैली का प्रचार यहां बहुत पीछे हुआहै। यद्यपि उनके यहां जौब और होमियर की जाति को लिखने की विद्या मुहम्मद से कई शताब्दी पहिले थी तथापि शेष अरब की जातियां और विशेष करके मक्कावाले इससे पूर्णरूप से अनभिज्ञ थे। थोड़े से यहूदियों और ईसाइयों को छोड़कर और कोई लोग लिखना बिलकुल न जानते थे। अर्बी अक्षर की लिपि को मुहम्मद से थोड़ेही काल पहिले एक शख्स मुरामर इब्नमुर्राने निकाला था जो ईराक के एक नगर अनवर का रहनेवाला था और इस लिपि को बशरने मक्का में मुसलमानी मतके प्रचार से थोड़ेही दिन पहिले

प्रचलित किया था। यह अक्षर हमियारी अक्षरों से भिन्न थे क्यूंकि लिपिके सदृश यद्यपि यह अक्षर भी अनगढ़ थे जिस में लिखी हुई बहुतसी प्राचीन पुस्तकें हैं तथा यादगारीके पत्थरों पर भी यही लिपि खुदी हुई मिलती है तथापि बहुत कालतक अरब लोग यही लिपि काम में लाते रहे और कुरान भी पहिले इसी में लिखा गया था। यह नवीन लिपि जो आजकल वर्तमान है इसको खलीफ़ा मुकतेदर के वजीर इब्न मुकलाहने तथा अलकाहेर और अलरादीने मुहम्मद से ३०० वर्ष पहिले रचा था अली इब्न बोवाब ने इसको आगे की शताब्दी में पूर्णता को पहुंचाया जिसके कारण उसका नाम अब भी प्रसिद्ध है। बहुतेरों का कथन यह है कि अब्बास वंशके खलीफ़ों में से सबसे पीछे का खलीफ़ा अल मुस्तासिम के पेशकार याकूत अल मुस्तासिमीने इस प्रचलित अरबी लिपि को पूर्ण किया है जिस कारण से उसको "अलखत्तान" की उपाधि मिली थी।

अर्बी साहित्य उसका उत्थान और पतन।

तीन बड़े गुण जिनका अरब वाले मान करते थे वह यह हैं। प्रथम तो वक्तृता शक्ति (फसीहत कलामी) और अपनी भाषा में निपुणता द्वितीय घोड़े की सवारी और हथियारों के चलाने में फुर्ती तृतीय आतिथ्य सत्कार (मिहमान नवाज़ी) । पहिली बात में वाक् प्रबन्ध और कविता की रचनाओं से अभ्यास बढ़ाते थे। उनके वाक् प्रबन्ध दो प्रकार के हैं एक पद्य दूसरा गद्य। पहिले की उपमा गुथे मोतियों के हार से और दूसरी खुली हुई ढीली मालासे देते हैं। जो कोई मनुष्य अपनी वाक पटुता (फसाहत) से लोगों की प्रवृत्ति किसी योग्य कार्य्य में अथवा किसी भयानक कार्य से उनको निवृत्त कर सक्ता था और किसी अच्छे उपदेश से शिक्षाकर सक्ता था तो उसको खातिब (सुवक्ता)की पदवी देकर समाजमें आदर करतेथे। जो

पदवी आजकल सभी मुसल्मानी उपदेशकों को दीजाती है। उनके वाक्योंका क्रम यूनानी और रूमके वक्ताओं से निराला रहता था।

वह अपने वाक्यों को खुलीहुई मणियों के सदृश (बेजोड़) रखते थे। जिसका प्रभाव सुनने वालों पर अति उत्तम पड़ता था। विशेषतः भावों के प्रकाश करने में चातुर्य्यता कहावतों के कहने में तीव्रता और वाक्यों की पूर्णता सें सुनने वाले मोहित होजाते थे। अरब वालों को इस गुण में इतना अभिमान था कि बाणी की चातुर्य्यता (फसीहत कलामी) में अपने समान दूसरा न समझते थे। यह लोग फारिसवालों काही कुछ आदर इस विषय में करते थे दूसरे किसी का नहीं। कविता का इतना गौरव इनके यहां था कि जो कोई अपने भाव किसी असाधारण विषय पर आसानी और सफाई के साथ काव्य द्वारा प्रगट करसके तो वह बहुतही गुणी और उच्च कुलका समझा जाता था। सामान्य बात चीत में भी बहुधा लोग बड़े २ कवियों के वाक्यों को उद्धृत करते थे। उनकी कविताओं में कुलों की वंशावली, कीर्ति और बड़े २ कामों की यादगार सुरक्षित रहती थी। इसी हेतु से जब किसी जातिमें कोई कवि उत्पन्न होजाता और उसकी प्रशंसा होने लगती तो अन्य सब जातियां मिलकर उसको धन्यबाद देकर तुरई बजाकर उसका महोत्सव करती थीं माना उनकी कुलकी कीर्ति और भाषा की स्वच्छता उत्तम शिक्षा, नीति और धर्मोपदेशकों का रक्षक उत्पन्न होगया और उनकी कीर्ति को आगे की संतान के लिये विस्तार कर सकेगा। यह उत्सव वह तीन अवसरों पर पुत्र जन्म में कविके उत्पन्न होनेपर अथवा अच्छी नसल की बछेड़ी पैदा होनेपर मनाते थे।

मोहम्मद के कारण अर्बी साहित्य का पतन।

कविता का चाव देश में स्थिर रखने के अभिप्राय से एक

बड़ा मेला ओकाध स्थान पर हुआ करता था। यहां पर आठवें दिन इतिवार के दिन हाट भी लगती थी और यह वार्षिक मेला एक महीना तक रहता था। यहां पर माल असबाब तरह २ के बिकते थे और कविताओं की जांच होती थी जिसकी उत्तम निकलती थी उसकी कविता रेशमी वस्त्र पर सुनहले अक्षरों में लिखकर शाही खजाने में रक्खी जाती थी। यह मेला ओकाधे का मोहम्मद के हुक्म से बन्द किया गया था और मुहम्मद के समय में अरब लोग देशों की जीत में लगे रहने के कारण कविता पर विशेष ध्यान नहीं देते थ—परन्तु पीछे से जब देशों का जीतना समाप्त हुआ तब फिर कविता का पुनरुद्धार और प्रवाह पूर्ववत हो चला—इस अन्तराल में उनके कुछ अच्छे २ कविता के रत्नरूप लेख भी लोप होगये क्योंकि लिखने का अभ्यास अभी अच्छीरीति से जारी नहीं हुआ था कविताकी रचनायें कंठस्थ रहती थीं। वह लड़ाई झगड़ों में लगे रहने के कारण मुहम्मद के समय में बहुत कुछ नष्ट होगईं। जहांपर देश जीतने का टीका मुहम्मद के सिर दिया जाता है वहांपर अर्बी साहित्य के पतन होने का उपरोक्त दोष भी मुहम्मद साहिबके भागमें पड़ता है। यद्यपि कविता तो अरब में प्राचीनकाल से थी परन्तु उसके छन्द आदिकों के नियम मुहम्मद के कुछ काल पीछेही रचे गये थे। लोग कहते हैं कि हारूं अलरसीद के राज्य काल में खलील अहमद अलफराहिदीने छन्दों को नियमवद्ध किया था।

स्वतंत्र होनेके कारण आपसमें लड़ाई झगड़ा बहुत हुआ करतेथे इसी से घुड़ सवारी और हथियार चलाने का अभ्यास अरबों को स्वतः (खुदही) करना पड़ता था। यह चार बातों को अपने देशमें विशेष रूपसे मानपूर्वक गौरव देतेथे। मानों दैवकी ओरसेही उनको मणि मुक्तों के स्थान में पगड़ियां, मकानों के स्थान में खेमे किलों के स्थान में तलवारें और क़ानून की जगह कवितायें मिलीं

थों। अतिथि सत्कार (मिहमान नवाज़ी) तथा दान शीलता और उदारता की बहुत कहावतें इनकी जाति में प्रसिद्ध हैं। टे जातिका हातिम और फजारा जातिका हसन। इस दान शीलताके लिये बहुत प्रसिद्ध हैं और कृपण की बहुत निन्दा होती थी। मोहम्मद् के पीछे भी अरबों की यह उदार शीलता जाती नहीं रही। इसके अनेक उदाहरण हैं कि लोग सर्वस्वदान कर डालते थे और आत्म कलेशको कुछ नहीं समझते थे औरभी अनेक गुण अरबों में हैं। अपनी बातके सच्चे, नातेदारों के साथ मान मर्यादा का बर्ताव, बातको जल्द समझ लेना और हसमुख आदि उनमें कई प्रशंसा की बातें हैं।

गुणके साथदोष भी सबही में होते हैं और एक उनका स्वभाव जिसको वह लोग स्वयं भी मानते हैं वह यह है कि जंग, बेरहमी (निर्दयता) लूट मार ईर्षाद्वेष भी इनमें अधिक होता है। ऊंट का मांस खाने से इन लोगों में डाह विशेष होती है कोई इनके साथ कुत्सित बर्ताव (बद्सलूकी) करे तो उसको नहीं भूलते क्योंकि ऊंटका भी ऐसाही प्रत्यक्ष स्वभाव है। बहुधा सौदागरों को लूटलेने और मुसाफिरों पर अत्याचार करने से इनका नाम यूरुप भरमें बद-नाम होगया है। उसका उत्तर लोग यह देते हैं कि इब्राहीम ने उनके पुरुषा इस्माईल को घरसे बाहर निकालदिया और मैदान और रेगिस्थान का राज्य उसको मिला। जहां पर परमेश्वर की आज्ञा थी कि जो वस्तु मिले उसे बेरोक टोक भोगकरो। अतः इसहाककी औलाद पर ही नहीं बरन् औरभी जो कोई उनके समीप आफसे उसको लूटने मारने में उनको किसीप्रकार की घृणा नहीं आती है।

मुहम्मद से पहिले अर्बी विद्याओं का वर्णन।

मुहम्मद से पहिले तीन प्रकारकी विद्यायें अरबमें प्रचलितथीं। (१) इतिहास और वंशावली। (२) ज्योतिष नक्षत्रों (सितारों)

से आस्मान के रंग, हवा, पानी और मौसम का हाल कहदेना। (३) स्वप्नों का अर्थ, अपनी कुलीनता का अभिमान बड़ाभारी अरबों में रहा है जिसके कारण अनेक झगड़े फ़िसाद आपस में होते रहे हैं। इससे कुलों की बंशावली रखने का शौक अवश्य ही होना चाहिये और बहुधा खैमों में रात दिन खुले मैंदानों में रहने के कारण अरबों को नक्षत्रों (सितारों) के देखने का अवसर अधिक मिलता था और परीक्षा से यह विद्या इनको प्राप्त होगई कि किस नक्षत्र के उदय अस्तपर क्या २ घटनायें आकाश के वायुमण्डल में होती हैं। उनका अर्थात् चन्द्रमा के २८ नक्षत्रों में चन्द्रमा की गति द्वारा यह लोग दैवी शक्ति इन नक्षत्रों में मानने लगे थे और ऐसा कहा करतेथे कि इस नक्षत्र द्वारा मेह बर्षेगा। इस नक्षत्र में हवाका कोप और इस नक्षत्र में सर्दी अधिक होगी। प्राचीन अरबों की सिर्फ़ इतनीही गति ज्योतिषशास्त्र में थी। पीछे से उन्होंने इस विद्याको बहुत बढ़ाया है। इतनी विद्या यूनानी आदि भाषाओं में नहीं पायी जाती। कुछ नक्षत्रों (सितारों) के नाम यूनानियोंसे इन्होंने अवश्य लिये हैं परन्तु बिशेष और अधिक रूपसे उन्हीं की कल्पना, रचना और परिश्रम का फल है।

दूसरा खण्ड।

मुहम्मद के समय में इसाई मत की अधोगति।

तीसरी शताब्दी से भी यदि हम धर्म के इतिहासों को देखें तो ईसाइयों में बहुधा वह बातें पाई जावेंगी जिनके कारण से ईसाई मत का लोप संसार से शीघ्र होजाना चाहिये था, व्यर्थ वादानुवाद, ईर्षा द्वेष और परस्पर बिरोध में इस मतके अनुयायी लीन रहते थे। जो भक्ति, क्षमा, दया, दान आदिक के लिये बाईबिल में उपदेश हैं।

इन बातों का लेशमात्र भी नहीं रहा था। मूर्ति पूजन में इतने आसक्त होगये थे कि आजकल जो रूमी चर्च के लोगों का आचरण है उससे कहीं अधिक पीरों की मूर्तियों की पूजाका प्रचार बढ़रहा था। एरियन्स, सेवेलिअन्स, नेस्टोरिअन्स यूटीकिअन्स आदिक अनेक पन्थ एक दूसरे से मत विरोध में झगड़कर ऐक्यता का और ईसाई मतके तत्व का नाश कर रहेथे। पादरी लोग ऐसे भ्रष्ट होगये थे कि रिश्वत का बाज़ार खुल्ला खुली गरम रहता था यह तो पूर्वी चर्च की दशा थी।

पश्चिमी चर्च में डेमेसस और अरसिसीनस आपस में पोपकी गद्दी के लिये खून खच्चर के साथ झगड़ते रहते थे जिसकारण एक दिन में १३७ मनुष्यों का खून हुआ और इस गद्दी में ऐश इशरत शान शौकत इतनी बढ़गई थी कि शाहज़ादों के जलूसको भी मात करतेथे। उस समयके बादशाह भी इन पादरियोंके आपस की फूट को बढ़ाते ही थे और यह दशा होगई थी कि जो कोई अन्य मतका होता उसको मरवाडालना बादशाह के लिये सहज बातथी। यथा राजा तथा प्रजा। जब बड़े पादरी और बादशाह इसतरह के अत्याचारी थे तो साधारण लोग भी जिसप्रकार धन पाते उसे नशा और विषय भोगों (ऐयाशी) में उड़ाते थे।

अरब में आदि से नानाप्रकार के कुफ्र और मत भेद रहे हैं जिसका कारण कौमों की स्वतंत्रताही थी। उस जातिके बाजे ईसाइयों का मत था कि आत्मा शरीरके साथ नाश होजाता है और क़यामत के समय शरीरके साथ फिर उठेगा। वर्जिन मेरी को बाजे२ परमेश्वर मानने लगेथे। नीसकी सभा में भी बहुतेरे ईसा और मेरी को दूसरा खुदा मानने लगे थे। बाजे मेरी को देवता मानते थे मानो रोमीमत की ट्रिनिटीका अङ्ग मेरी थी। इससे मुहम्मद को ट्रिनिटी के सिद्धान्त पर आक्रमण करनेका मौक़ा मिलगया था और भी अरब में कईप्रकार

के अनेक फिर्के ईसाइयों के थे और इनके सिद्धान्तों को मुहम्मद ने अपने मतमें मिलालिया है।

मुहम्मदके समय में यहूदीमतकी अधोगति।

अन्यदेशों में यहूदी बहुत तुच्छ समझेजाते थे परन्तु अरब में उनका बल अधिक होगया था। कई एक क़ौमों और शहज़ादों ने इनके मतको स्वीकार करलिया था। मुहम्मदने पहिले तो यहूदियों का मान करके उनकेसाथ मेल रखने में अपना मतलब समझा था परन्तु पीछे से जब हठके वश उनके साथ विरोधही करते रहे तो उनकोभी इनके सर करने में बहुत कष्ट उठाना पड़ा और अन्त में उनके प्राणभी इस विरोधमें गये। ईसाइयों की घृणा इतनी मुहम्मदको नथी जितनी अन्तमें यहूदियों की हुई। अबभी मुसलमान आमतौरसे यहूदियों को जितना निन्दनीय मानते हैं उतना ईसाइयों को नहीं। यही ईसाइयों की फूट और आपसके विरोधकी अन्तर्दशा थी जिसके कारण मोहम्मद को सुअवसर अपने मतके प्रचार में मिला। इधर रोमवाले और फारिस के बादशाहों की कमज़ोरी से मुल्क जीतने में मुहम्मद के हाथ अच्छा मौक़ा आगया। जैसी २ जय इन मुल्कों में मुहम्मद की होती गई उतनाही पुष्टिता इस्लाम मतको भी पहुँचती गई। कान्सटेन्टाईन सामृाट के पीछे बहुत शीघ्र रोमवालों के राज्य में घटती होनेलगी। उनके ज़ानशीनों (उत्तराधिकारियों) में डरपोकी नामर्दी और बेरहमी अधिक बढ़ती गई। मुहम्मद के समय तक पश्चिमोभाग उनके राज्यका "गौथ" लोगोंने दबालियाथा और पूर्वभाग को एक ओरसे "हन्स" लोगोंने और दूसरी ओर फारिसवालों ने ऐसा चूर्ण करदियाथा कि किसी बलवान हमलाके रोकने की सामर्थ्य बिल्कुल नहीं रहीथी। मोरिस सामृाट हन्सलोगोंको करदेने लगाथा। जब फोकास ने अपने स्वामी को मारकर राज्यपर अधिकार किया

तो ऐसी शोचनीय दशा सिपाह की होगई थी कि सातही बर्ष पीछे जब हैरेक्लियसने आकर सेना इकट्ठी करनी चाही तो फौकासने जिस समय राज्य छीनाथा उस समयके केवल दो सिपाही ही जीवित शेष बचे थे और यद्यपि हैरेक्लियस स्वयं सूरबीर और पवित्र आचरण वालाथा और यथाशक्ति उसने सेना को फिरसे युद्धके योग्य बनाकर फारिसवालों से अपना मुल्क भी फेरलिया और कुछ भाग उनके राज्यकाभी दबालिया तथापि उस समय रोमवालों के राज्य में प्राण रूपशक्तिका लोप प्रतीत होनेलगा था। ऐसे अवसर पर अरबों को सफलता प्राप्तहोने का अच्छा सुभीता मिला। ईसाईमत में जो भ्रष्टता फैलगई थी उनके दण्ड के लिये मानों परमेश्वरने इन अरबोंका शोधकरूप कोड़ा उत्पन्न करदिया था जिससे ईश्वर की ओरसे मिले हुए ईसाई शुद्धमत के अनुसार न चलनेका फल लोगों को मिलै। यूनानियों में भी बिषय भोग और अवनति तथा भ्रष्टाचरण के बढ़नेसे उनकी सेना में बलका लोप होगया था और अत्याचार आदिक से यह जाति औरभी अधिक निर्बल होगई थी।

मुज़्दक का उपदेश कि हरकोई हर किसी की स्त्रीको भोग करसक्ता है तथा बादशाह कोबाद का अपनी मलिकाको आज्ञा देना कि वह मुज़्दक के साथ भोगकरे।

मुहम्मद से कुछ दिन पहिलेही फारिस वाले भी आपस के बिरोध और झगड़ों से जो बिशेष करके "मेन्स" और "मज़्दक" के तमोगुणी सिद्धांतों के प्रचार से अधिक उत्पन्न हुए थे अवनतिकी अधोगति को प्राप्त होरहे थे। "मज़्दक" खुसरो कोबाद के समय में उत्पन्न हुआ था और उसका मत था कि परमेश्वर ने सब जीवों

को तुल्य अधिकार दिया है। सब भ्रातृरूप हैं अपने को परमेश्वर का पैग़म्बर बताता था और यह उपदेश करता था कि धन और स्त्री यही दो कारण लोगों में बिरोध के हैं। इन दोनों पर समान अधिकार सबका मानने से बिरोध मनुष्य लोक से उठ जायगा इससे कोई किसी की स्त्री वा धन का भोग करै तो दोष नहीं। बादशाह कोबाद ने इस मिथ्या उपदेश के सिद्धांत को स्वीकार करके उसे आज्ञा देदी थी कि बादशाह की बीबी मलिका के साथ वह भोगकरै इस आज्ञा को कोबाद के पुत्र अनुशीरवां ने मुज़दक का बड़ा कठिनाई से बर्ताव करने नहीं दिया। ऐसेही मतों के द्वारा फ़ारिस वालों का सारबल नष्ट होरहा था परन्तु जब अनुशीरवां राजगद्दी पर बैठा तो उसने मुज़दक और उसके मतके अनुयायियों को तथा मेन्स के मतवालों को भी मरवाडाला और प्राचीन मेजियन मत को फिर से स्थापित किया।

इस बादशाह को "आदिल" की पदवी जिसके वह पूर्ण योग्य था दीगई थी। इसी के समय में मोहम्मद का जन्म हुआ इस "आदिल" बादशाह का पुत्र हारमूज़ बड़ा अत्याचारी (ज़ालिम) था। उसके सालों ने उसकी आंखें निकलवालीं जिसके बाद उसका पुत्र खुसरो परवेज़ गद्दी पर बैठा यह भी मारा गया और एक के पीछे दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा इसीतरह कईएक अल्प कालीन (चन्द्‌-रोज़ह) बादशाह हुए। आन्तरिक फूट से फ़ारिसवालों का नाश हुआ और यद्यपि इन्होंने शामको लूटा बैतुलमुकद्दस और दमस्क को तबाह किया और अरबों के यामान सूबे में भी खुसरो परवेज़ के समय में कुछ अधिकार जमाकर मुहम्मद से पहिले के चार अखीरी बादशाहों को वहां पर गद्दी पर बैठलाया था तथापि जब यूनानी हैरेक्लियस उनपर चढ़ा तो अपनी जीती नई भूमिही नहीं बरन अपने पुराने मुल्क का भी कुछ भाग खो बैठे और जब थोड़ेही कालके पीछे

मुहम्मद ने अरबों को इस्लामी मत द्वारा एक किया तो फारिसवालों को हर एक लड़ाई में जीता और अन्त में पूर्णतौर से अपने स्वाधीन करलिया।

मुहम्मद से पहिले अर्बों की प्रकृति यथा मांस न खाना व मुहम्मद के गुण।

जैसे यह सब अन्य राज्य मुहम्मद के उत्पन्न होने के समय बलहीन थे उसीतरह अरब बलवान और उन्नति पर था। यूनान में अत्याचार के कारण उसदेश के बहुतेरे निवासी यहां आकर बसे थे और स्वतन्त्र राज्य यहांपर था इससे इच्छापूर्वक अपना धर्म और आचरण करतेहुए शान्तिपूर्बक रहते थे। अरबवालों की बढ़ती तो थोड़ी इन लोगों में विषय भोग फारिसवालों और यूनानियों की तरह नहीं व्याप्त हुआ था वरन सब प्रकार की कठिनाइयों को सहने का अभ्यास यह लोग रखते थे। अति किफ़ायत से रहना, मांस किसीप्रकार का न खाना, शराब न पीना और भूमि पर बैठने की अभ्यास रखते थे। राज्यशासन प्रणाली भी इनकी मुहम्मद की इच्छाके अनुकूल थी-इनके पृथक् २ स्वतन्त्र क़ौमों में विभक्त होने के कारण मुहम्मद को अपना मत फैलाने और अपना राज्य स्थापित करने का सुभीता हुआ और जब एक मत के यह सब होगये तो यही लोग सब प्रथक् २ क़ौमें मिलकर एक बृहत जाति बनगये जिससे आगे चलकर उनकी जय और बढ़ती के लिये सुबिधा हुई। मुहम्मद को पूर्वी देशों के मत और राज्य की अन्तर्दशा अच्छीतरह बिदित थी। नई उम्र में सौदागरी की दशामें यह रहे थे जिससे यात्रा करके इनको देशों की हालत मालूम करने का अच्छा मौक़ा मिला था यद्यपि आदि में उनमें दूरदर्शिता और विचार शीलता इतनी अधिक न हो जैसी पीछे से सौभाग्य प्राप्त होनेपर हुई तौभी उसी समय से

उनको आशा अपने कार्य में सफलता प्राप्त करने की बढ़तीही गई होगी । असाधारण योग्यता और स्फूर्ति के कारण हरप्रकार की घटना से लाभ उठाना और जिसमें दूसरों को भय मालूम हो उसको सहज में करडालना यह उनमें विलक्षण गुण थे ।

मुहम्मदकी प्रारम्भिक अवस्था और बिधवा खादीजाह के साथ ब्याह करना ।

आदि में मुहम्मदको कई स्वाभाविक बातें बढ़ती की बाधारूप थीं परन्तु उनको अपनी दृढ़ता से उन्होंने बशीभूत करलिया । उन (मुहम्मदका) पिता अब्दुल्ला अपने पिता अब्दुलमतालिब का मझिला पुत्र था जो थोड़ीही उम्रमें अपने पिताको छोड़कर मरगयाथा जिससे यह मुहम्मद और उनकी माता अनाथ और दीन होगये थे । उनके निर्वाहके लिये केवल पांच ऊंट और एक यूरोपियन लौंडीथी। मुहम्मदका पालन पोषण उनके दादा अब्दुलमतालिब ने किया और मरते समय अपने बड़े बेटे अबूतालिब का जो अब्दुल्लाका सा जाया भाई था अपने पीछे पालनको शिक्षा करगयेथे-अबूतालिबने बहुत प्यारसे मुहम्मदको पाला और सौदागरी का पेशा बचपनसे सिखाया और अपने साथ मुहम्मद को शाममें लेगये जब कि इन (मुहम्मद) की उम्र सिर्फ तेरहही बर्षकीथी और खादीजाह नामक बिधवा धनिक स्त्री के पास इनको छोड़दिया । मुहम्मद ने अपने शील से ऐसा इसको प्रसन्न किया कि उसने थोड़ेही दिन पीछे उनके साथ बिवाह करके मक्का में धनी से धनी के समान मुहम्मद को बनादिया । जब इस बिवाह के कारण मुहम्मद सुखपूर्वक रहनेलगे तो उन्होंने नया मत स्थापन करने का बिचार ठाना जिसको वह कहते थे कि यही एक सच्चा पुराना मत है । जिसको आदम, नूह, मूसा, ईसा और पैग़म्बरों सबने अवलम्बन कियाथा अर्थात् स्थूल मूर्तिपूजन को दूर

करके जिसका प्रवेश पिछले समय के ईसाई और यहूदियोंमें होगया था केवल एक ईश्वर की उपासना का स्थापित करना है। इस मत के स्थापित करने में मुहम्मद का आशय अपनी संसारिक वृद्धिही थी। यह लेख बहुतेरे इतिहासवालों का है। परन्तु हमारी सम्मति इससे भिन्न है।

मुहम्मद को सच्चा विश्वास इस बातका था कि ईश्वर की ऐक्यता को केवल मूर्ति पूजक ही नहीं वरन ईसाई मतवाले भी जो ईसा और मेरी को परमेश्वर मानते थे और यहूदी भी जो एजरा को परमेश्वर का पुत्र मानते थे उल्लंघन करते हैं इस हेतु से संसारको इस अज्ञानसे विमुक्त करना उन्होंने अपना परमधर्म माना था। अरबों का दिमाग़ (मतिष्क) स्वाभाविक प्रज्ज्वलित और साहसयुक्त होताहै इससे शनैः २ उनके ध्यान में यह बात समाई कि परमेश्वर ने संसार में इस उपदेश द्वारा सुधार के लिये हमको पैदा रक्खा है। एक महीनेभर मक्का के समीपवर्ती हारा पहाड़ी की गुफा में एकान्त निवास करने से यह संकल्प उनके चित्त में अधिकतर दृढ़ होता गया। बहुधा मत स्थापन करने वालों का स्वभाव विक्षिप्तसा होता है परन्तु मुहम्मद में इसके विरुद्ध यह बात असाधारण थी कि जो कुछ वह करते थे बड़ी सावधानी और बुद्धिमत्ता के साथही उपदेश करते थे। परन्तु इसके साथही बहुतेरे और लोग भी ऐसे उदाहरण हुए हैं जिन्हों ने संयोग वश कभी २ अन्यथा करडाला है परन्तु सब बातों में अपना व्यवहार बहुत सोच विचार और चतुराई से ही किया है। ईसाई मत जो पहिले प्रफुल्लित दशा में था इसलाम के अचानक फैलने से उनका पतन होचला। ईसाई मत के सच्चे सिद्धान्तों से मुहम्मद अच्छीतरह जानकार न थे और उनके समय में ईसाइयों में बहुत घृणित बातें भी प्रचलित थीं इस हेतु से हान कि स्वाभाविक द्वेष मानकर मुहम्मद ने ईसाई मतको सुधार-

ना असम्भव समझकर उसे मूलसेही नाश करडालना अपना कर्तव्य समझा था इसमें सन्देह नहीं कि मुहम्मद को असाधारण व्यक्ति माने जाने की और महत्व की अति तीव्र इच्छा थी और यह इच्छा उनकी इसीप्रकार पूर्ण हो सकती थी कि अपने को परमेश्वर का भेजाहुआ प्रगट करैं जिनका जन्म संसार में परमेश्वर की इच्छा के प्रकाश करने के लिये हुआ है । यदि उनके देश के लोग उनके साथ अधिक द्वेष और बिरोध का हानिकारक बर्ताव न करते तो सम्भव है कि मुहम्मद अपने को केवल पैग़म्बरही मानकर अपना जीवन आदर और सन्मान के साथ व्यतीत करदेते परन्तु जब लोग उनके पीछे पड़के सताने और क्लेश देनेही लगे तो अपनी आत्मरक्षा के लिये जब थोड़ी सी सेना इकट्ठी करली और उन्हें जय भी प्राप्त हुई तो मुल्कगीरी का हौसला भी जो पहिले न था अब उनके चित्त में दृढ़रूप से स्थान पाकर उनको जय के चसके ने भाग्य आज़माने के लिये पूर्णरूप से उत्तेजित किया । लोग मुहम्मद को कई स्त्रियां होने के कारण विषयी बताते हैं ।

बिवाहादिकके नियम और तलाक़ और बिवाह सम्बन्धी विशेष अधिकार जिनका बर्णन क़ुरान में है मुहम्मदने यहूदियों के फ़ैसलों सेही यह परिपाटी प्रायः उद्धृत की है और यहूदियोंके मत को दैवी मत मानकर उनके नियमों को भी न्याय और बुद्धि के अनकूल मुहम्मदने समझा होगा । अभिप्राय जो कुछ मुहम्मदका हो परन्तु इस साहसी कार्य को पूरा करने के लिये योग्यता और विशेष असाधारण गुण भी अवश्य मुहम्मद में थे । थोड़ा बहुत कपट और छलका व्यवहार तो अवश्य ही बड़े लोगों में होता है । इसमें सन्देह नहीं कि उनकी बुद्धि और स्फूर्ति तथा समझ बहुत ही तीव्र थी और दमबाज़ी के गुणों में वह पूर्ण थे । पूर्वी इतिहासवाले उनको समझदारी और स्मर्ण शक्ति को अतिउत्तम लिखते हैं और सफ़र करने में इन

गुणों के बढ़ाने का अवसर भी उनको अच्छा मिला था कि अनेकानेक प्रकार के लोगों के समागम से उनको मनुष्यों के स्वभावादिक का ज्ञान और अनुभव अच्छीतरह होगया था।

कम बोलना, प्रसन्नचित्त रहना, बात चीत में साधारण और मनोहारी, मित्रों के संग कोई हानिकारक व्यवहार न करना, अपनेसे छोटों के साथ उदार भाव इनमें यह सब गुण विशेष करके लोगोंने लिखे हैं। और इसके साथ सुघर लावण्य शरीर और शिष्ट बोल चाल का ढंग भी विलक्षण ही बताते हैं जिसके कारण जिनलोगों को अपने मनमें लाना चाहते थे उनको सहजमें अपने बशमें करलेते थे।

अपढ़ मुहमद के द्वारा कुरान का कहना दैवी समाचार है इसके विरुद्ध भारत बासियों की दलील।

लोग इस बातको तो स्वीकारही करते हैं कि उपार्जित (सीखी हुई) विद्या लिखने पढ़ने की इनमें कुछ भी न थी। जो शिक्षा इनकी जाति में प्रचलित थी उससे अधिक इनको अन्य शिक्षा नहीं प्राप्त हुई। साहित्य का व्यतिक्रम और अनादर भी कदाचित् इनकी जातिवाले करते थे। अपनी भाषा को अद्वतीय मानकर इन लोगों को विश्वास था कि पढ़ने लिखने से नहीं वरन अभ्यास से ही भाषा में कुशलता प्राप्त होती है। अतः अपने कवियों के विशेष विशेष लेखोंको जिनको अपने व्यवहार में आने योग्य समझते थे कण्ठस्थ करलेते थे। अपढ़ होने से मुहम्मद को अपने कार्य्य के सफल करने में बाधा नहीं हुई बल्कि इसबात के कहने का अच्छा मौका मिलगया कि कुपढ़ मनुष्य कुरानसरीफ़ के उत्तम शैली के ग्रन्थ को किसतरह

निर्माण कर सक्ता था। अतः मुसलमान लोग कुरान को परमेश्वर का दिया हुआ वाक्य मानते हैं इसीहेतु मुहम्मद के कुपढ़ होने में निन्दा न समझकर उसपर अभिमान करते हैं और इस बात को सीधा प्रमाण बताते हैं कि दैवी पैग़ाम के प्रकाश करने को मुहम्मद का जन्म हुआ है और उनको कुपढ़ पैग़म्बर का कहकर विख्यात भी करते हैं। परन्तु भारतवासी इस बात को नहीं मानसक्ते क्योंकि प्रज्ञा-चक्षु पण्डित धनराज ज़िला बस्ती निवासी भारतवर्ष में आज भी विद्यमान हैं जो लाखों श्लोक ऋषियों के नामपर बनाते चले आते हैं तो फिर नेत्र युक्त मुहम्मद का कुरान की रचना करना कौन असम्भव बात है।

मुहम्मद की युक्तियां और अनेक घटनायें जिससे मुहम्मद ने अपना मत प्रचार करने में सफलता प्राप्त की।

अब कुछ वर्णन इस बात का करेंगे कि किस किस उपाय से मुहम्मद ने सफलता प्राप्त की और कौन २ सी घटना उनके अनुकूल उपस्थित हुई। पहिले तो उन्हों ने यही सोचा कि अपने घरवालों को अपने मत में लाकर पीछे और के साथ यत्न करना उचित होगा। हीरा पर्वत की गुफा में अपने कुटुम्ब को भी लेगये वहां अपनी बीबी खादीजाह से अपना प्रथम भेद बताया कि जिब्रईल फ़िरिश्ते ने आकर कहा है कि परमेश्वर ने हम को अपना पैग़म्बर मुक़र्रर किया है और पहिली आयतों को भी पढ़कर सुनाया कि फ़िरिश्ते के द्वारा यह कलाम परमेश्वर ने भेजा है। खादीजाह ने बड़े हर्ष से इस सुख समाचार को सुना और कहा मुझे विश्वास है कि आप अपनी जाति के अवश्य पैग़म्बर होंगे। इसके बाद उसने

अपने भाई बराकाह इब्न नवफाल से जो ईसाई थे और यहूदी भाषा में लिखना जानते थे और जिनको बाईबिल का अच्छा ज्ञान भी था उनसे यह संदेशा कहा। उन्होंने इसपर पूरा विश्वास करलिया और कहा कि मूसा के निकट जो फिरिश्ता आया था वही अब मुहम्मद के पास भी भेजागया है। यह घटना मुहम्मद की चालीसवीं वर्ष में रमज़ान के महीना में हुई और इसीहेतु से यह वर्ष सामान्यतः संदेशों की वर्ष प्रसिद्ध है। इस सफलता से उत्साहित होकर मुहम्मद ने विचार किया कि पहिले निजके तौर पर लोगों को समझा कर आजमाना अच्छा होगा बनिस्बत इसके कि आमतौर से लोगों को यकायक प्रगट करने की जोखों उठावें। अतः अपने घरमेंही खादीजाह को चेला बनाकर अपने गुलाम जैद इब्न हारेथ को चेला बनाया और उसको गुलामी से भी मुक्त करदिया। तबसे यह नियम मुसलमानों में होगया है कि जिसको चेला बनाते हैं उसे आज़ादी भी बख्शते हैं। अब अपने ताऊ अबूतालेब के पुत्र अली को जो उनका शिष्य और उस समय बालक ही था उसे मुसलमान बनाया। अली अपने को सबसे पहिला मुरीद कहनेलगा। इसके पीछे मुहम्मद ने कुरेश क़ौम के एक प्रधान पुरुष अब्दुल्लाह इब्न अबी काहाफ जिसका उपनाम अबूबक्र था चेला बनाया जिसके दबाव से उनको आगे बहुत मदद मिली क्योंकि अबूबक्र ने उथमान, इब्न अफ़फ़ान अब्दुलरहमान, इब्न आफ़, सआद इब्न अबीवक्कास, अलजुबेर इब्न अलअवाम और टेल्हा इब्न उबदुल्लाह जो मक्का के प्रधान पुरुष थे मुसलमान होने के लिये प्रेरणा की—तीनवर्ष के बीच में यह छैः मुख्य संगी और कुछ और लोग भी जब मुरीद होगये तब मुहम्मद ने विचारा कि अब इन सबके बलपर आमतौर से लोगों में अपने चाहे मनोर्थ को प्रगट करें और लोगों में यह बात प्रकाशित की कि हमको परमेश्वर की आज्ञा मिली है कि अपने समीपी नातेदारों को शिक्षा उपदेश

करें। इसमें पूरी कामयाबी पाने के लिये उन्होंने अली से कहकर एक भोज्य (ज्योनार) में अब्दुल मुत्तालिब के पुत्र और संतान को निमन्त्रण देकर बुलवाया जिसमें लगभग ४० मनुष्य इकट्ठे हुए परन्तु मुहम्मद को अपना अभिप्राय प्रकट करने का अवसर मिलने से पूर्वही उनके चचा अबूलाहिब के कहने से सब लोग उठकर चलेगये जिससे फिर दूसरे दिन निमन्त्रण देना पड़ा और जब इकट्ठे हुए तो मुहम्मद ने यह वाक्य उनसे कहे "जो वस्तु मैं इस समय आप सबको देनेके लिये उद्यत हूं उससे उत्तम पदार्थ सम्बन्धियों को देनेवाला सम्पूर्ण अरबमें मुझे अन्य कोई नहीं दीखता। मैं इसलोक और परलोक के लिये सुख तुम्हारी भेंट करूंगा। मुझे परमेश्वर की आज्ञा हुई है कि उसके समीप तुमको पहुंचाऊं। अब आप सबमेंसे मेरी सहायताके लिये मेरा प्रतिनिधि (क़ायम मुक़ाम) इस कार्य में कौन बनेगा? यह सुनकर जब सबलोग आगा पीछा सोचनेलगे और किसीने प्रतिनिधि बनना स्वीकार न किया तो अलीने उठकर कहा मैं आपका नाइब बनूंगा और जो मेरे विरोधी इस कार्य में होंगे उनको दण्ड प्रहारभी करूंगा। इसपर मुहम्मदने अलीको बड़े प्यारसे गले लगालिया और उपस्थित लोगोंसे कहा कि यह हमारा नाइब है इसकी बात सबकिसी को माननी चाहिये। यह सुनकर लोग हंसपड़े और हँसीमें अबूतालिब से कहनेलगे कि अब तुम अपने पुत्रके आज्ञाकारी सेवक बनो।

मुहम्मद ने इस विपरीत घटनासे निरास न होकर सर्व साधारण में उपदेशदेना प्रारम्भ करदिया और लोगभी कुछ धैर्य्य से उनके उपदेश सुनतेरहे परन्तु जब उनके मूर्तिपूजन हट और अकड़ पर मुहम्मद ताना मारकर आक्षेप करनेलगे तो लोग इतने भड़के कि दुश्मनरूप होकर मुहम्मद को हानि पहुंचाने पर उतारू होगये। कुरेश क़ौम के सर्दारने अपने भतीजे अबूतालिब से अपने भतीजे का संग त्याग करनेको कहा कि यह शख्स नई २ बातोंका प्रचार करने

चाहता है और धमकाया भी कि जो तुम मुहम्मद को इससे निवृत्त न करोगे तो खुला खुल्ली तुम्हारे साथ हम वैरभाव करेंगे। इसपर अबूतालेबने मुहम्मदको बहुत कुछ समझाया कि ऐसाकरनेसे अपने संगियों को भयमें डालोगे इससे इस कार्यको छोड़ो परन्तु मुहम्मद उनकी धमकी में क्यों आनेवाले थे उन्होंने अपने चाचाजीसे साफ़ कहा कि यदि लोग एक सूर्यको हमारे दाहिनी ओर और चन्द्रमा को बाईंओर हमारे विरुद्ध खड़ा करदेवें तो भी हम इस कार्य से हटनेवाले नहीं। जब ऐसी दृढ़ता इनमें देखी तो अबूतालिब ने भी और कुछ न कहा वरन प्रतिज्ञाकी कि जो हो हम तुम्हारे सब बैरियों के विरुद्ध होकर तुम्हारा संगदेंगे।

कुरेशवालों ने भी यह देखकर कि धमकी और खुशामद दोनों में से एकसे भी काम नहीं चलता तो मुहम्मद के संगियों को इतना सताना आरम्भ किया कि अब मक्कामें उनको रहना कठिन होगया और पैग़म्बरी की पांचवीं वर्षमें उनमेंसे १६ मर्द औरतें हबशियापिया को भागगये और इन भागे हुओं में मुहम्मदकी लड़की रुकीआ और दामाद उथमान इब्न अफान भी थे इसके पीछे और भी लोग भागने लगे। ८३ मर्द और १८ औरतें और बहुतेरे बच्चोंने हबशियोपिआके बादशाहकी शरणली। कुरेशवालों ने आदमी भेजकर बादशाह से इनलोगों के दे देनेको कहा परन्तु उसने इनको उनके हवाले नहीं किया वरन स्वयंभी मुसलमान होगया और इनसबको बड़ी खातिरदारी में रक्खा।

पैग़म्बरी की छठवीं वर्षमें मुहम्मद को अपने योग्य और सूरबीर चचा हमज़ा तथा उमर इब्नखत्ताब जो बहुत प्रतिष्ठित पुरुष और पहिले मुहम्मद का भारी विरोधी था मुसलमान होजाने से बड़ाही संतोषहुआ। यह प्रायः देखागयाहै कि मतके प्रचारमें जितनी रुकावट और विरोध प्रकटकियजाता है उतनाही वह मत औरभी अधिक

बढ़ता है इसलिये अरबामें इसका बिस्तार इतना शीघ्र बढ़ा कि कुरेश. वालोंने (प्रतिज्ञा पत्र) पैगम्बरी की सातवीं बर्ष में टांग दिया कि हाशिम और अलमतालिबके बंशसे किसाप्रकारका बर्ताव वा बिवाहादिक सम्बन्ध कोई न करे इससे दो पक्ष बनगये । हाशिम के बंशने अबूतालिब को अपना सर्दार बनाया और दूसरे पक्षका सर्दार अबू सुफियान इब्न हर्ब हुआ जो उमेया के बंशका था । मुहम्मद के चचा केवल अबूलाहेब को ही अपने भतीजे से अत्यन्त द्वेषथा और वह उनके इस मतका भी पूरा विरोधी था इससे वह प्रतिकूल पक्ष में जा मिला । तीनबर्ष तक यह फूट जारीरही उसके अन्तमें मुहम्मद ने अबूतालिब से कहा कि परमेश्वरको यह पहदनामा अति बुरालगा है इससे कोड़े सब अक्षरों को चाटिगये केवल ईश्वरका नामही इस अहदनामामें शेष रहगयाहै । शायद इसकी खबर मुहम्मदको पोशीदा तौर से मिलगई होगी परन्तु यह सुनकर तुरन्त अबूतालिब कुरेश वालों के पास गये और यह हाल उनको कह सुनाया और यह प्रण किया कि यदि यह बात झूठी निकले तो हम अपने भतीजे को पकड़ कर तुम्हारे हवाले करदेंगे वरन यदि सच्ची निकले तो बैर छोड़कर इस पहदनामा को मन्सूख कर देना चाहिये । इस पर वह राज़ी होगये और ज्योंही लोग काबा में देखने को गये तो अबूतालिब के कहने को सत्य देख कर बहुत आश्चर्यमें आये और पहदनामा फ़सख़ करदिया । इसीबर्षमें अस्सी बर्षकी उम्रमें अबूतालिब का देहान्तहुआ और उसके तीन दिन पीछे खदीजाह जिनकी बदौलत मुहम्मद धनी हुए थे मरगई । इसीकारण यह बर्ष "शोक का बर्ष" कहाता है उन दोनों के मरने पर मुहम्मद को कुरेशवाले और भी अधिक सतानेलगे यहां तक कि अब अन्यत्र भागने की नौबत आगई । पहिले तो मक्का से ६० मील पर एक स्थान तायेत में मुहम्मद अपने नोकर ज़ैद के साथ भागकर गये और इस स्थान के दो मुखियों से जा थाकिफ

क़ौम के य शरण चाही परन्तु उनसे सत्कार न पाकर किसीतरह एक मास वहां रहे। कुछ लोगों ने थोड़ा बहुत वहांपर इनका सन्मान भी किया अन्त में वहां के छोटे लोग और ग़ुलामों ने इनको इतना तंग किया कि नगर की दीवाल पर लाकर इनको मक्का लौटने के लिये लाचार किया। यहां आनेपर अलमुतआम इब्न अदीने इनकी रक्षाकी।

इस दुर्दशा से बहुतेरे साथी इनके बेदिल होगये परन्तु इन्होंने साहस न छोड़ा। यात्रियों के समूह में खुल्लमखुल्ला अपना उपदेश करते थे और बहुत से चेला भी नये होते गये। याथरेब नगर निवासी यहूदी खज़राज क़ौम के ६ मनुष्य इनके ऐसे मोतक़िद होगये कि यात्रा से लौटकर अपने घर पहुंचने पर उन्होंने इसलाम मतकी बहुत प्रशंसा की और अपने नगर निवासियों को भी मुसलमान बना लिया।

मुहम्मद की युक्ति का उलटी पड़ना परन्तु अबूबकर द्वारा साधाजाना।

पैग़म्बरी की बारहवीं वर्ष में मुहम्मद ने यह प्रकाश किया कि हम मक्का से रात्रि के समय बैतुलमुक़द्दस और वहां से स्वर्ग में गये थे इसका वर्णन उनके पक्ष के सब लेखकों ने किया है। इस से मुहम्मद का अभिप्राय यही मालूम होता है कि ऐसा प्रकट करने से लोगों का विश्वास अधिक बढ़ेगा कि साक्षात् मूसा की तरह इन से भी परमेश्वर की बात चीत हुई। अभीतक तो जो कुछ आज्ञा आती थी जिबरील फ़िरिश्ते के द्वाराही आती रही थी। परन्तु उनके साथियों पर इसबनावट के क़िस्से का प्रभाव बिपरीत हुआ और यदि अबूबकर इसकी सचाई के स्वयं साक्षी प्रमाण न बनते और यह न खोलकर कहते कि जो बात मुहम्मद कहते हैं उसकी सत्यतापर हमको पूरा विश्वास है तो शायद सब किया कराया मुहम्मद का

नष्ट भ्रष्ट होजाता । परन्तु इससे इतना प्रभाव उनका बढ़गया कि आगे जो कुछ वह कहते उस सबको उनके साथी पूरा प्रणाम मानने लगे। और यह भी एक ऐसी चाल निकली जिसके द्वारा मुहम्मद का नाम संसार में इतना प्रसिद्ध हुआ है।

इसी वर्ष में जिसको मुसलमान "साल मक़बूला" कहते हैं बारह आदमी याथरेब या मदीना के जिनमें से दस क़ौम खज़राजके थे और दो क़ौम अव्स के थे मक्कामें आये और उन्होंने अलअक़ाबा पहाड़ीपर जो शहर से उत्तर में है मुहम्मद का संग निबाहने की शपथ प्रतिज्ञा की—यह स्त्रियों की शपथ इस हेतुसे कहाती है कि इस शपथ के अनुसार किसी मनुष्य को मुहम्मद या उनके मतके पक्षमें हथियार नहीं चलाने पड़ेंगे और यही शपथ का रूप क़ुरान में लिखा है जिसको पीछेसे औरतें भी करती थीं अर्थात् "हम मूर्ति पूजन त्यागेंगे चोरी और व्यभिचार न करेंगे न बच्चों को मारेंगे (जैसा कि अरब लोग प्राचीन काल में जब देखते थे कि बच्चोंका पालन पोषण न कर सकेंगे तो मार डालतेथे) न किसी का मिथ्या अपवाद करेंगे" और मुहम्मद का हुक्म सब उचित बातों में मानेंगे जब उन लोगोंने विधि पूर्वक यह प्रतिज्ञा करली तो मुहम्मद ने उनके साथ उनके घरपर एक अपना शिष्य मसाब इब्न उमेर भेजा कि उन लोगों को अच्छीतरह इस नये मतके आचरण और व्यवहार सिखादेवें। मसाब जब मदीना में पहुंचा तो जो लोग पहिले से मुसलमान होचुके थे उनकी सहायतासे और भी बहुत से नये चेले किये विशेषता उसेद इब्न हो देश जो उस नगर का प्रधान था और सआद इब्न मुआध जो क़ौम अव्स का बादशाह था यह दो बड़े आदमी मुसलमान होगये। अब मुसलमानी मत की इतनी शीघ्र वृद्धि होती गई कि कोई घर न शेष रहा जिसमें कुछ लोग मुसलमान नहों।

यह पैग़म्बरी की तेरहवीं साल थी कि मसाह ७३ मर्द और

दो स्त्रियों के साथ मदीना से मक्का वापिस आया। यह लोग पहिले से मुसलमान होचुके थे कुछ इनमें से मुसलमान न थे आतेही उन्हों ने मुहम्मद को बुला भेजा और अपनी सहायता देने के लिये उससे प्रतिज्ञा की। इसकी मुहम्मद को बहुत ही आवश्यकता थी क्योंकि अब उसके वैरी इतने अधिक होगये थे कि मक्का में रहना भयजनक (खतरनाक) होगया था। एक रात्रि के समय इन सब का समागम अल अकाबा पहाड़ी पर मुहम्मद के साथ हुआ और उस स्थान पर उस [illegible] अल अब्बास भी मौजूद थे यह अपने भतीजे के शुभचिंतक थे और उन्हों ने मदीना वालों से [illegible] कहा कि मुहम्मद को अपनी [illegible] [illegible] और मदद प्रतिज्ञा लो [illegible] रक्षा करनी [illegible] तो उसका [illegible] किया जाय [illegible] [illegible] बचाव [illegible] [illegible] [illegible] उत्तर [illegible] [illegible] [illegible]

मु[illegible] का [illegible] मुसलमानों [illegible] के प्रचार की [illegible] देना।

अबतक मुहम्मद केवल उपदेश [illegible] अपने मत को फैलाते बल का प्रयोग नहीं किया जाता था क्योंकि अल अकाबा की [illegible] की प्रतिज्ञा से पहिले उनको बल का प्रयोग करने की आज्ञा परमेश्वर के यहां से नहीं मिली थी और कुरान के कई स्थलों में जो वह

कहते हैं कि मक्का में उतरे थे उनका स्पष्ट कथन है कि हमारा काम उपदेश और शिक्षा का है हमें किसी को मजबूरन अपना मत स्वीकार कराने की आज्ञा नहीं है लोग मानै या न मानैं इससे हमें कुछ प्रयोजन नहीं यह केवल ईश्वर का काम है। अपने मत वालों कोभी वह अबतक यही उपदेश करते रहे थे कि मत के कारण कोई अत्याचार उन पर करै तो धीरज और क्षमा से उसे सहनकरैं और स्वयं उनको भी जब लोग बहुत सताते थे तो अपनी जन्मभूमि छोड़कर मदीना हट जाना अच्छा समझते थे न कि बल से औरों पर घात करके आत्मा रक्षा करें परन्तु यह सहन शीलता तभी तक रही जब तक कि बल उनके पास काफ़ी तौर से न होगया क्योंकि पैग़म्बरी को १२ बर्षों तक उन के बैरी बहुत प्रबल थे। परन्तु ज्योंही मदीना वालोंकी सहायता से वह अपने को अपने बैरियोंके साथ बराबरी से लड़ने के योग्य होगये त्योंही उन्हों ने यह प्रकाश करदिया कि परमेश्वर ने हमें और हमारे साथियों को अपनी रक्षा के लिये बैरियों पर आघात करने की आज्ञा देदी है और जैसा २ उनका बल बढ़ता गया है तैसा तैसा उन्हों ने यह ईश्वरी आज्ञा का होना भी प्रकट किया कि मूर्ति पूजन का नाश करो और तलवार से इसलाम को बढ़ाओ। उनको इस बात का अनुभव अच्छीतरह हो गया था कि यदि बलका प्रयोग किया जायगा तोही उनका कार्य शीघ्र सिद्ध होसकेगा और ऐसा करने में किसीप्रकार का जोखों भी नहीं है क्योंकि पूर्व में भी जिन २ पैग़म्बरों ने हथियार का सहारा लिया था वह अपने कार्य में शीघ्र सिद्धि प्राप्त करसके थे। मूसा, साइरस, थीसीयूस और रोम्यूलस यह सब लोग अपने नियमों को चिरकाल तक कदापि स्थापित न करसक्ते यदि हथियारों का प्रयोग न करते। पहिला वाक्य कुरान में हथियार द्वारा मत फैलाने के अधिकार मिलने का २२ वीं सूरत और पीछे से और भी इस प्रकार के वाक्य उतरे थे।

जिन लोगों ने अन्याय से मुहम्मद को सताया उनके प्रति तो मुहम्मद को अपनी रक्षा करना हथियार द्वारा उचित था परन्तु पीछे से उन्हों ने इस के प्रयोग से क्यों अपने मत को स्थिर किया इसकी व्यवस्था यहांपर करना ठीक नहीं है क्योंकि इस विषय में लोगों के विचार भिन्न २ हैं। जो लोग दूसरे मतके हैं उनकी दृष्टि में तो किसी अन्यमत का बिस्तार हथियार के बल से होना अच्छा कदापि नहीं लगसक्ता परन्तु यही लोग अपने मत को बलात् पुष्टि करना स्वीकार करलेते हैं क्योंकि उसी पक्ष को वे सत्य मानते हैं औरों को मिथ्या समझते हैं। जिनपर मत के कारण अत्याचार होता है वह तो बुराही मानेंगे और जिनके हाथमें अधिकार है वह उस अधिकारके बलको प्रायः सदैव धर्म समझकर अपने मतकी वृद्धि में प्रयोग करते ही हैं। यह एक पूरा सबूत और प्रमाण इस्लाम मतके मनुष्यद्वारा कल्पित होने का है कि उन्होंने तलवारके बलसे उसकी स्थिति और विस्तार किया।

मुहम्मद मदीना वालों से जब अहमदनामा (प्रतिज्ञापत्र) आत्मरक्षा और प्रहार करने का करचुके तो उनको मदीना चले जाने को कहा और स्वयं मुहम्मद अबूबकर और अलीके साथ मक्का ही में बने रहे क्योंकि उनका कथन था कि हमको अभी मक्का छोड़-कर अन्त जाने की आज्ञा परमेश्वर से नहीं मिली है। कुरेश वालोंने इस नये एहदनामे से भयभीत होकर पहिले तो साधारण उपायों से चाहा कि यह मक्का से मदीना को न जाने पावे परन्तु अन्त में यह विचार दृढ़ किया कि मुहम्मद को जान से मारने के निमित्त हर एक मनुष्य सब कौमों में से खड्गप्रहार मुहम्मदपर करें जिससे हत्या एक क़ौम के सिरपर न होवे वरन समान रूप से सब कौमों में थोड़ी थोड़ी बट जाय और मुहम्मद की क़ौम हस्माइटके लोग उनकी मृत्यु का बदला लेनेके लिये इकट्ठी सब क़ौमों पर कदापि सामर्थ्यवान न हो सकेंगे और न उसका साहस करेंगे।

यह कुरैश वालों का गुप्तविचार मुहम्मद को किसीप्रकार मालूम होगया लोगों से तो उन्हों ने यही प्रकाश किया कि फ़िरिश्ता जिबरील हम को यह भेद बताकर कह गया है कि तुम अब मदीना चले जाओ। उनके घरको तो बैरियों ने घेर लिया था। मुहम्मदने अपना हरा लबादा अली को पहिना कर अपने स्थान में लिटादिया और स्वयं किसीप्रकार से वैरियों से अदृष्टि होकर अबूबकरके मकान में पहुंचगये। वह तो इसको भी दैवी माया के बलसे निकलकर चलेजाने का दावा करते हैं। बैरियों ने झरोके से अली को देखकर मुहम्मद को सोया हुआ समझकर कुछ छेड़ छाड़ न की प्रातःकाल तक उसीप्रकार पहरा देते रहे परन्तु जब अली सोकर उटे तब जाना कि धोखा होगया।

मुहम्मद अबूबकर के मकान से अली के संग और अनुग करके एक नोकर अमर इब्न फ़ोहिरा और अब्दुल्ला इब्न उरेकतको जो मूर्ति पूजक था अपने साथ लेकर मका के दक्षिण पूर्वके पहाड़ थूर की गुफा में जा छिपे। यहां पर भी कईएक दैवी माया के सहारों से ही तीन दिन रहकर एक पगडंडी राहसे चलकर कुशल पूर्वक मदीना पहुंच गये। लोग कहते हैं कि गुफा में भी वैरी लोग ढूँढने के लिये पहुचे थे परन्तु दैवीगति से वह अन्धे होगये और गुफ़ा का द्वार न सूझा। वाजे लिखते हैं कि गुफ़ा के द्वार पर दो कबूतरों ने अंडा रक्खे थे और एक मकड़ी ने जाला पूर दिया था जिस के कारण किसी मनुष्य का उस गुफ़ा के भीतर होना असम्भव समझ कर बाहर से ही देखकर लोग लोटगये थे। मदीना के रास्ते में भी जो लोग इनके खोज में पीछे पीछे गये थे उनको भी इसी प्रकार की दैवी मायासे मुहम्मद न हाथ लगे। तीन दिन पीछे अली भी मका में कुछ आवश्यक काम कर धर के मुहम्मद के समीप जा पहुंचे।

मदीना में पहुंचते ही एक मंदिर अपने पूजन के लिये और एक घर अपने रहने के लिये अमरू (बढ़ई) के अनाथ बालकों सहल और सुहेल की भूमिपर बनाया। उनके प्रति पक्षी लोग कहते हैं कि उस भूमिका कुछ भी मूल्य न देकर अन्याय से लेकर बनवाया था परन्तु मुसल्मान् लेखक इसको इस भांति लिखते हैं कि अनाथ बालक एक कुलीन वंश कौम नज्जार के थे जो अरब में बहुत प्रतिष्ठित थी न कि बढ़ई के और मुहम्मद ने भूमि के दाम देने चाहे थे परन्तु बालकों ने भेंट कर दिया अथवा मोल ही लिया था जिसका मूल्य अबूबकरने चुकाया था।

मदीना में स्थिर होकर मुहम्मद ने अपने वैरियों के प्रहार से बचने तथा उनपर प्रहार करने के योग्य भी अपने बलको जानकर कुरैश वालों पर छोटी छोटी जमाइतोंके हमले करना आरम्भ किया। पहली बार सिर्फ़ नौ आदमियों ने जाकर उस क़ौम के एक क़ाफ़िले को रास्ते में पकड़ कर लूटा और दो आदमियों को क़ैदी भी बना लिया। सन् २ हिजरी में बिद्रकी लड़ाई जीतने से मुहम्मद की आगामी वृद्धि की नीव जमगई और २७ बार हमले किये जिनमें से कुछमें स्वयं मुहम्मद वर्तमान थे और ६ लड़ाइयां भी हुई। अपनी सेनाके खर्च का निर्वाह कुछ तो अपने साथियों से ज़कात के नामसे उन्होंने लिया जिसका करना उन्होंने अपने मतवालों के लिये सत्यधर्म स्थापन किया था और कुछ लूटके धनसे जिसका पंचमांश अपने कोष सिर्कारी में लिया करते थे इसके लिये भी उनका कथन था कि परमेश्वर ही से आज्ञा मिली है।

थोड़े ही वर्षों में अपनी जय द्वारा उन्होंने अपने बल और मान प्रतिष्ठा को बहुत कुछ बढ़ा लिया। सन् ६ हिजरी में वह मक्का को १४०० मनुष्य लेकर वैरबिरोधके निमित्त नहीं वरनयात्रा के शुद्धशान्त बिचार से चले परन्तु अलहुदेबिया स्थानपर पहुंचतेही जिस का

कुछ भाग तो तीर्थ रूपी पवित्र भूमि के अन्तर्गत और कुछ उससे बाहर था उनसे कुरेश वालों ने कहला भेजा कि बलसे तुम भलेही आओ परन्तु हम मक्का में तुमको इच्छा पूर्वक कदापि नहीं घसने देंगे इस पर उन्होंने अपनी सेना को बुलाकर वफ़ादारी की प्रतिज्ञा शपथली और मक्का पर आक्रमण का निश्चित विचार किया परन्तु मक्कावालों ने थाकीफ़ क़ौम के राजकुमार अराइब्न मसऊद को दूत बनाकर उनके पास सन्धि करने को भेजा जिस से १० वर्ष के लिये उनमें सन्धि होगई उसके अनुसार जिस किसी को जैसी इच्छा हो मुहम्मद से अथवा कुरेश वालों से यथा रुचि मेल करने में मना-हो न रही।

मुहम्मदका गौरव और मान उनके साथी इतना करने लगे थे कि जब यह राजकुमार दूत लौटकर गया तो उसने कुरेश वालों से कहा कि हमने रूम के और फ़ारिस के सम्राटों का दर्बार देखा है परन्तु किसी बादशाह का इतना सम्मान प्रजा वर्ग की ओर से नहीं देखने में आया जितना मुहम्मद का उनके साथी करते हैं उनके (वजू) के जल को अर्थात् जो जल नमाज़ पढ़ने से पहिले मुँह हाथ धोने से शेष रहजाता था उसको लोग दौड़ दौड़ कर लेने जाते थे और उनके थूक खखार को लोग तत्काल चाट जाते थे तथा उनके शरीर से गिरे हुये बालों को बड़े आदर से उठा कर संचय करते थे।

सन् ७ हिजरी में मुहम्मदने अरब से बाहर भी अपने मतको फैलाना विचारा। अड़ोस पड़ोस के बादशाहों के पास पलची और चिट्ठियां मुसल्मान् हो जाने के निमित्त भेजीं कुछ सफलता भी हुई। खुसरो परवीज़ फ़ारिस के बादशाह ने बहुत निरादर से उस पत्र को क्रोध में आकर फाड़डाला और पलचो को भी सीधा वापिस कर दिया। मुहम्मदसे जब उस दूत ने लौटकर वृत्तान्त कहा तो मुह

म्मद ने शाप दिया कि उसके राज्य को परमेश्वर चीर डालेगा। उस के थोड़े ही काल पीछे यमान के बादशाह बधान ने जो फारिसवालों के आधीन था मुहम्मद के पास दूत द्वारा कहला भेजा कि तुम को खुसरो के पास भेजने के लिये हुक्म हमारे पास आया है। इसका उत्तर उसी दिन देने से मुहम्मद ने टालकर दूसरे दिन प्रातःकाल दूत से कहा कि हमको रात्रि में अनुभव द्वारा मालूम हुआ है कि खुसरो को उसके पुत्र शिरूयेह ने क़त्ल करदियाहै। दूतके लौट आने के थोड़ेही दिन पीछे बधान के पास शुरूयेह का भी पत्र खुसरो के मृत्यु के समाचार का पहुंचा और यह भी कि पैग़म्बर से किसी प्रकार की छेड़छाड़ आगे को न करें-तिसपर बधान और उसके सँग के फ़ारिस वाले भी मुसलमान् होगये। साम्राढ हैरेक्लियस ने बड़े आदर से मुहम्मद के पत्र को लेकर अपने तकिया पर रक्खा और मानपूर्वक दूत की बिदाई की। बाज़ लोग कहते हैं कि वह मुसल्मान् भी होजाता परन्तु उसको भ्रम यह था कि ऐसा करने से लोग उस को राज्य से उतार देंगे।

इथूथोपिया के बादशाह को भी इसी निमित्त मुहम्मद ने पत्र भेजा जोकि बाज़ अर्बी इतिहास लेखकों के कथन से पूर्व में ही मुसल्मान् हो चुका था और मिश्र के गवर्नर मेक़ावक़ास के पास भी पत्र भेजा जिसने बहुत मान से पत्र लेकर मुहम्मद के पास बहु-मूल्य भेंट भेजी और २ बांदिया भी भेजी जिनमें से एक का नाम मेरी था जो बाद को मुहम्मद की परम प्यारी होगई थी। अरब के भी बहुतेरे बादशाहों को इसी विषय में पत्र भेजे विशेष करके घस्सान के बादशाह अलहरेट इब्न अबी शमर के पास पत्र पहुँचा तो उसने उत्तर दिया कि मैं स्वयं मुहम्मद के पास जाऊँगा तिसपर मुहम्मद ने कहा कि परमेश्वर करे उसका राज्य नष्ट होजाय। यमामा के बाद शाह हवधा इब्न अली ईसाई से मुसलमान् होगया था और हाल में

फिर उसे छोड़कर ईसाई मत अवलम्बन करनेलगा था। उसने शुष्कउत्तर भेजा तिसपर मुहम्मद के शाप से वह थोड़ेही काल में मरगया। अल्मुन्देर इब्न सावा बिहरीन के बादशाहने इसलाम स्वीकारकरलिया उसकी देखा देखी उसके देश के सब अरब भी मुसलमानहोगये।

सन् ८ हिजरी इसलाम के लिये बहुत अनुकूल वर्षहुई। खालेद इब्न वलीद जिसने पीछे से शाम आदिक देशों को फ़तह किया और और अमरू इब्न अलआस जिसने मिश्र को जीता था ये दोनों बड़े वीर सिपाही थे वर्ष के आरम्भ में ये दोनों मुसल्मान् होगये। थोड़े ही दिन पीछे मुहम्मद ने तीन हज़ार मनुष्यों की सेना यूनानियों पर एक एलची की मौत का बदला लेने के लिये भेजी। इसको घस्सान क़ौम के एक अरब ने म्यूटा नगर में जो सीरिया के बल्का देश में है मारडाला था। जब वह बसरा के हाकिम के पास मुसल्मान् होने के निमित्त पत्र लेकर जारहा था। यूनानियोंके दलमें १ लाख मनुष्य थे इस युद्ध में पहिले तो लगातार मुसल्मानों के ३ सेनापति मारेगये परन्तु अन्त में खालिद इब्न वलीद ने यूनानियों को पराजय करके बहुतों को क़तल किया और बहुत धन लूटकर अपने साथ लेकर लौटा इसको मुहम्मदने "सेफमिन सोयूफ़ अल्लाह" अर्थात् परमेश्वर को एक खड्ग (तलवार)" की प्रतिष्ठित पदवी दी।

इसी साल में मुहम्मद ने मक्का को अपने हाथ में कर लिया। जिसके निवासियों ने दो वर्ष पहिले की हुई सन्धि को तोड़ा था। कुरेश क़ौम के पक्षवाले बक्र क़ौम के लोगों ने मुहम्मद के पक्षवाले खोज़ाह लोगोंपर आक्रमण कर उनमेंसे बहुतेरोंको मारडालाथा और उनकी सहायता पर स्वयं कुछ कुरेश वाले भी थे। इस सन्धि भंगसे भयभीत होकर उनका प्रधान अबूसोफ़ियान स्वयं मदीना को आया परन्तु मुहम्मद ने यह अपने मतलब का अच्छा अवसर देखकर उस से बात चीत न की। अली और अबूबकरने भी कुछउत्तर

उनको न दिया तो लाचार होकर मक्का को वैसाही लौट गया।

मुहम्मद ने चढ़ाई की तय्यारी आरम्भ की कि मक्का वालों को सचेत होने से पहिलेही जा दबावें। मक्का पहुंचते २ दशहज़ार लश्कर इकट्ठा होगया था इतने भारी लश्कर का सामना करने में अपने को असमर्थ समझकर कुरेश लोगों ने मुहम्मद की आधीनता स्वीकार करली और अबूसोफियान की जान मुसल्मान् होने से बची। खालिदकी अध्यक्षता में सिपाहियों ने २८ मूर्तिपूजकों को मारडाला परन्तु यह घटना मुहम्मद की आज्ञा के विरुद्ध हुई थी क्योंकि मुहम्मद ने नगर में प्रवेश करने पर सब कुरेश वालों को जिन्होंने आधीन होना स्वीकार करलिया था क्षमाकर दिया था सिर्फ़ ६ मनुष्य और चार स्त्री जो अधिक कट्टर थीं और जिन्होंने अपना मत छोड़ दिया था उन्हीं के मारने की आज्ञा दी थी। जिसमें भी सिर्फ़ ३ मर्द और एक स्त्री मारीगई शेष को मुसल्मान् हो जाने पर छोड़ दिया गया और इनमें से एक स्त्री निकलकर भाग भी गई थी। हिजरी की ६ वीं वर्ष जिसको मुसल्मान् "साल एलची गीरी" कहते हैं क्योंकि अब तक अरब लोग मुहम्मद और कुरेश के युद्ध का परिणाम देख रहे थे। ज्योंही कुरेश क़ौम के लोग जो अरब भर में मुखिया और इस्माइल की सच्ची सन्तान थे और जिनके अधिकार और विशेष हक़ में किसी को संदेह न था जब यह आधीन होगये तो बहुतों को निश्चय होगया कि अब मुहम्मद से मुक़ाबिला करने योग्य कोई नहीं रहा। अतःबहुतायत से समूह के समूह मुहम्मद के पास उनके आधीन होने के लिये आनेलगे। मक्कामें भी जब तक वहां रहे और पश्चात् मदीने में जब वहां पर इस वर्ष में वह चले गये थे अन्य बहुतेरे लोगों से हमियार क़ौम के ५ बादशाहों ने एलची भेजकर अपना मुसल्मान् होना स्वीकार किया।

१० वीं वर्ष में अलीको यामान भेजा गया और वहां पर उन्होंने

इसवाम की कुल जातिको एकही दिनमें मुसलमान् करलिया उस सूबे के और सब निवासियोंने भी देखादेखी इस्लाम स्वीकार किया सिर्फ़ नजरान के क़ौमवाले जो ईसाई थे उन्होंने करदेना स्वीकार किया।

इसप्रकार मुहम्मद के जीते ही इसलाम स्थापित होगया और सब अरब में मूर्ति पूजन निर्मूल करदिया गया दूसरी बर्ष में मुहम्मद का परलोक होगया। केवल एक यमामा का सूबा बच रहा था जहांपर मुसलेमा नक़ली पैग़म्बर बनकर मुहम्मद का बादी खड़ा हुआ था इसके पक्ष में बड़ी जमाअत थी और अबूबकर की ख़लीफ़ाई तक यह सर नहीं हो पाया था। इस तरह अब अरब वाले एक मत और एक राजा के आधीन हुये जिससे उनको अपनी जय और मत पृथ्वी के इतने बड़े भाग पर फैलाने की सामर्थ्य हुई।

———:*:———

तीसरा खण्ड।

कुरान और उसके साहित्य सम्बन्धी विशेष बातें। उसके लिखे जाने और प्रकाशित होने का प्रकार उसका ढंग और उद्देश।

"क़ुरआ" शब्दका अर्थ अरबी भाषामें पढ़ना है अथवा पठनीय (पदार्थ) इस नामसे मुसलमान् केवल समग्र कुरान ग्रन्थ कोही नहीं वरन उसके किसी खण्ड और अध्यायको भी कहते हैं जैसे कि यहूदी अपने धर्मग्रन्थ वा उसके किसी भाग को "कराह" वा "मिकरा" नाम से बोलते हैं। यह दोनों शब्द एकही धातु से निकले हैं और समान अर्थ बोधक हैं। कुरान के नामान्तर "अलफ़ुरक़ान" "अल मुसहाफ़" "अल किताब" आदि भी हैं।

कुरान ११४ सूरतों (अध्यायों) में बिभक्त है जिनका बिस्तार बहुत न्यूनाधिक है। अरबीमें इनको "सुरा" बहुबचन "सुवार" कहते

है जिसका अर्थ " पंक्ति " है जैसे इमारत में ईंटों की पांक अथवा सेना में सिपाहियों की क़तार होती है। यह अध्याय हस्त लिखित ग्रन्थों में संख्याऽनुसार अंकित नहीं किये गये हैं वरन् विशेष नाम कहीं विषयाऽनुसार और कहीं विशेष पुरुष के नामसे जिसका वर्णन उस अध्याय में है रक्खा गया है परन्तु (साधरणता से) अधिकतर अध्याय वा सूरत के पहिले मुख्य शब्दही से सूराका नाम रक्खा गया है। बाज़े बाज़े सूरे के कईएक नाम भी हैं जो प्रतियां के भेद से हो गये हैं। कुछ अध्याय मक्का में और कुछ मदीना में उतरे थे कुछ ऐसे भी हैं जिनका स्थान निश्चय नहीं मतभेद है। स्थान भेद प्रकट करने के लियेभी सूराके नामका अक्षरादिनुसार रक्खा गयाहै सूरत आयतों में बिभक्त है और यह आयतें कोई बहुतबड़ी कोई बहुतछोटीहैं। "आयत" शब्दका अर्थ " संकेत " वा " अद्भुत है क्योंकि परमेश्वर के रहस्य, गुण, कृत्य, लीला, आज्ञा, नियम आदि जो आयतों में वर्णन किये गये हैं वह अद्भुतही हैं उसी के अनुसार बहुतेरी आयतों के नाम भी रक्खे गये हैं। क़ुरान के भिन्न भिन्न छापे की प्रतियों में मुख्य भेद आयतों की संख्या और बिभाग में है। क़ुरान की सात प्राचीन मुख्य प्रतियां मानी जाती हैं। दो मदीना में प्रकाशित होकर काम में आयी थीं। तीसरी मक्का में, चौथी क्यूफा में, पांचवीं बसरा में, छटवीं शाम में, और सातवीं को सामान्य प्रति कहते हैं। इनमें से मदीना की पहिली प्रति में आयतों की संख्या ६००० है, दूसरी और पांचवीं प्रति में ६२१४, तीसरी में ६२१६, चौथी में ६२३६, और सातवीं में ६२२५ है परन्तु शब्दों की संख्या सब में समान ७७६३९ है और अक्षरों की संख्या भी ३२३०१५ सब में समान है। बाज़ों ने यह भी गिन डाला है कि एक एक अक्षर कितने कितने बार क़ुरान में आया है। मुसल्मानों ने क़ुरान के ६० समान विभाग भी किये हैं और इनको " हिज़ब " बहुवचन में " अज़हाब " कहते हैं और

प्रत्येक हिज़्ब के चार समान अनुभाग भी किये हैं। परन्तु आमतौर से कुरान के ३० समान भाग "अजज़ा" वा पारा के नाम से प्रचलित हैं और प्रत्येक "जुज़" के चार अनुभाग बराबर के किये गये हैं। कुरान के पढ़ने के लिये बादशाहो जिनकी मसजिदों में अथवा बड़े आदमियों की कबरगाहों के समीप ३० मनुष्य मिलकर एक एक जुज़ को पृथक् पृथक् पढ़ने के लिये रहते हैं जिस से कुरान की एक परायण एक दिन में होजाती है और एक एक जुज़ का एक एक काण्ड पृथक रहता है। नवें अध्याय को छोड़कर शेष सब अध्यायों के आदि में "बिस्मिल्ला अलरहमान अलरहीम" रक्खा गया है। मुहम्मद ने यह फारस के "मेज़ाई" की नकल की है जिन के ग्रन्थों के आदि में "बनाम यज़दान बख़्शिशगर दादार" रहा करता था। इस मंगलाचरण वाक्य को तथा अध्यायों के नामों को भी इसलाम मत के विद्वान और भाष्यकार भी देवी ही ग्रंथ की तरह उतरा हुआ मानते हैं परन्तु साधारण लोग इसको भगवान वाक्य नहीं वरन मनुष्य कल्पित कहते हैं। कुरान के २९ अध्यायों में यह विशेषता है कि उनके आदिमें एक वा अधिक अक्षर उनकी वर्णमाला का है। इन अक्षरों को मुसलमान् रहस्य संकेत मानते हैं। जिनका अर्थ किसी मनुष्य को सिवाय पैग़म्बर के नहीं बताया गया है। इन रहस्य रूप अक्षरों के अर्थ अपनी अपनी मति के अनुसार अनेकों ने किये हैं परन्तु भिन्न २ होने से लोगों का यह अनुमान मात्रही है। किसी विद्वान् ईसाई का मत है कि यह अक्षर लेखकों ने लिखने के समय जिनसे यह कुरान लिखवाया गया था अपने अपने संकेत रखदिये हैं। कुरानकीभाषा अत्यन्त शुद्ध और उत्तम शैली की कुरैश क़ौमकी बोली है कहीं कहीं दूसरी क़ौमोंकी भाषाओं को किञ्चितमात्र मिला दिया है परन्तु कुरान अरबी भाषा की अति उत्तम और अद्वितीय रचना होने में संदेह नहीं है। इसी कारण इस

को दैवी वाक्य मुसलमान मानते हैं। उनका कथन है कि ऐसे चमत्कार युक्त लेख मनुष्य की लेखनी से असम्भव है। अपनी पैग़म्बरी के प्रमाण में मुहम्मद ने भी दावा के साथ अरब के विद्वानों से प्रण किया था कि कुरान जैसा एक अध्याय भी कोई निर्माण कर देवै। अरब में लिखने पढ़नेवालों की प्रतिष्ठा अधिक होती थी इस भाषा के अच्छे अच्छे विद्वान् कवि भी उस समय में थे। लबिद इब्न रबीआ ने जो उस समय का कविरत्न गिना जाता था अपनी कविता को मक्का की मसजिद के फाटक पर टांग दिया था इस अभिप्राय से कि कोई उसके तुल्य दूसरी रचना करके दिखावे। किसी कवि का साहस न देखकर मुहम्मद ने कुरान के दूसरे अध्याय को उसके बराबर उसी स्थान पर लगा दिया। लबिद उसे पढ़कर इतना प्रसन्न हुआ कि उसने मुहम्मद का मत ग्रहण कर लिया। इससे मुहम्मद को पीछे बहुत सहायता मिली। अमरो अलक़ैस बादशाह क़ौम कसाद् जो "मुअल्लक़ात" नामी प्रसिद्ध सात कविताओं में से एक का रचयिता था और जिसने इस्लाम मत के विरुद्ध अपवादिक और सोपहास लेख लिखे थे उनका खण्डन लबिद ने अच्छी तरह करके उसे परास्त किया। लेख की शैली कुरान की सुन्दर और धारा प्रवाह है विशेषतः जिन स्थलों में धर्म ग्रन्थों के वाक्य और पैग़म्बरी प्रकार का अनुकरण है। पदमूर्ति संक्षिप्त और गम्भीर, उच्चप्रकार के अलंकारों से भूषित, विचित्र और अर्थ युक्त वाक्यों से पूर्ण और जहां परमेश्वर के गुण और शक्ति का वर्णन अति उत्कृष्ट और प्रभावशाली है। यमक (क़ाफ़ियाबन्दी) और अलंकृत रचना का अरबवालों को इतना व्यसन है कि कुरान के वाक्यों को बहुधा लोग अपनी वक्तृता और लेखों में उद्धृत करते हैं। यह भी अनुमान होता है कि सिद्धान्त जो कुरान में लिखे गये हैं उनके ग्रहण करने में इस रचना शैली का प्रभाव लोगों पर बहुत हुआ है मुहम्मद को अच्छी तरह

मालूम था कि शब्दों की उचित योजना से मनोहर गान की तरह मनुष्यों के चित्त मोहित होजाते हैं और उन्होंने कुरान के रचने में अपना पूर्ण बल और बुद्धि का प्रयोग किया है जिससे इस अपूर्व ललित मनोहारी रचनाका कर्त्ता परमेश्वर सम्पूर्ण शक्तिशाली समझा जावे और यथार्थ में इस अद्भुत ग्रन्थके द्वारा उनके मनका विस्तार और आदर इतना शीघ्र सुननेवालों के चित्तपर मोहित होनेसे हुआ करता था कि जादूगरी और ऐन्द्रजालिक होने का आक्षेप भी उनके वैरी उनपर लगाते थे।

एकबड़े विद्वान् के कथनके अनुसार अभिप्राय(और उद्देश)कुरान का सामान्य रीति से यह मालूम होता है। "इस आबाद और स्वतंत्र मुल्क अरब में तीन भिन्न मतों के लोग जो अधिकतर संकीर्ण रूप से रहा करते थे। जिनको कोई शिक्षक या मार्ग दर्शक गुरु भी न था और बहुतेरे जिनमें से मूर्ति पूजक और शेष यहूदी और ईसाई बहुधा मिथ्या पंथ और सिद्धान्तोंपर चलनेवाले थे इन सब को एक करके एक परमात्मा की उपासना सिखाना जो नित्य स्वरूप अगोचर अपनी शक्तिसे संसार का कर्त्ता, धरता और साक्षी और फल का दाता है। और इस नये मत को नियमबद्ध करके कुछ ऊपरी रीति रिवाज और रसम तथा आचरण कुछ प्राचीन कालके और कुछ नवीन कल्पना करके इस प्रकार के बनाये जांय कि जिनसे पुण्य पाप का भय और आशा सांसारिक और पारलौकिक, लोगोंके चित्तों में स्थापित हो जिससे लोग मुहम्मद को परमेश्वर का पैग़म्बर और एलची मानकर उनकी आज्ञा में रहें और यह मत पहिले तो पिछले युगों की धमकियां, वादे, और शिक्षाओं से, और पीछेसे हथियार के ज़ोरसे विस्तार कियाजावै और मुहम्मद को लोग धर्म सम्बन्धी कार्य्यों में अपना मुख्य गुरू और सांसारिक व्यवहारों में सबसे बड़ा अधिकारी और सर्दार स्वीकार करें।"

मुहम्मद का प्रथम मुख्य सिद्धान्त था कि सुधामत एकही रहा है और सदैव एकही रहैगा। यद्यपि विशेष विशेष नियम और आचरण समयाऽनुसार बदलेत रहते हैं परन्तु सब का सार रूप सत्य एकही रहता है वह नहीं बदलता है। मुहम्मदने लोगों को सिखाया कि जब जब समय के परिवर्त्तन से इस एक सच्चे मत से लोग भ्रष्ट होते गये तब २ परमेश्वर ने कृपाकरिके मनुष्यों की शिक्षा और सुधार के निमित्त अनेक पैग़म्बरों को भेजा है जिन में मूसा और ईसा प्रधान हुये हैं और सब से अन्तिम पैग़म्बर स्वयं मुहम्मद को भेजा है इसके पीछे अब दूसरा कोई पैग़म्बर नहीं आवेगा। लोगों के चित्तपर उनके उपदेश का अधिक प्रभाव पड़े इस निमित्त कुरान में अधिकाश उनभयभीत दण्डों का वर्णन किया है जो पैग़म्बरों की अवज्ञा करनेवालोंको परमेश्वर की ओर से पहिले काल में दिये गये थे। इन में से कुछ कहानियां और घटनाएं तो प्रचीन और नवीन बाइबिल से ली गई हैं और अधिकतर उस समय के यहूदी और ईसाइयों के धर्म ग्रन्थों की और रिवाइतों से लेकर कुरान में रखदी हैं जो बाइबिल के बिरुद्ध हैं और जिन को मुहम्मद का कथन था कि यहूदी और ईसाइयों ने बदल दिया है। जहांतक समझ में आता है तहांतक यह सब मुहम्मद की स्वयं कल्पित नहीं मालूम होतीहैं क्योंकि सम्भव है जिन ग्रन्थों से यह ली गई हैं उस समय में वर्त्तमान थे अब लुप्त होगये हैं खोज करने से अवश्य पता लगसक्ता था। कुरान के शेष भाग में आवश्यक नियम और शिक्षा, तथा नीति और धर्म के उपदेश हैं प्रधानतः एकही सत्य स्वरूप परमात्मा की उपासना करना और उसकी इच्छाको सर्वोपरि मानना यही मुख्य उपदेश दिया है और इसमें बहुत से ऐसे उत्तम सिद्धान्त भी हैं जिनको ईसाई भी पढ़कर लाभ उठा सक्ते हैं।

परन्तु इन सब बातों के अतिरिक्त बहुतेरे सामयिक वाक्य लिखे गये हैं जिनका सम्बन्ध उसी समय की घटनाओं से था। क्योंकि जब कोई घटना ऐसी आन पड़ती जिससे मुहम्मद घबड़ा जाते थे और उसे पार करनेका अन्य उपाय उन्हें नहीं दीखता था तो उनका यही मामूल था कि ऐसे पेचके मामलों में वह एक नवीन आज्ञा का परमेश्वर से मिलना प्रकट करदेते थे और इससे उनका अभीष्ट मनोरथ सिद्ध भी होजाता था। यह उनकी बड़ी भारी चतुराई की चाल थी कि उन्होंने स्वर्ग के सबसे नीचे के परत पर समग्र कुरान का आजाना वर्णन कियाहै। न कि पृथ्वी पर जैसाकि शायद कोई कच्चा और अनाड़ी पैगम्बर होता तो कह बैठता। क्योंकि यदि सम्पूर्ण कुरान का एक संगही पृथ्वीपर आना बयान करतेतो उनको लोगोंकी अनेक शंकाओं का समाधान करना कठिन होजाता परन्तु टुकड़े टुकड़े करके उनका उतरना जब जब जितना परमेश्वर ने लोगों को शिक्षार्थ देना उचित समझा तो इससे उनको जो कठिनाई जिस समय उपस्थित होजातीथी उसके उत्तर देने का और उससे प्रतिष्ठा पूर्वक निकल कर बचजाने का अवसर बहुत अच्छा निश्चय रूप से मिल जाताथा। मुसल्मानों का विश्वास है कि कुरान नित्य है। यदि कोई इसमें शंका उठावे तो सहज में इसका उत्तर उनके पास रहता है कि परमेश्वर ने सबबातें पहिले से निश्चय करक्खी हैं और जिन जिन घटनाओं के लिये विशेष विशेष वाक्य उतरे हैं उन सबको आदि सेही परमेश्वर ने नियत कर रक्खा था।

मुहम्मद ही इस कुरान के निर्माण करता तथा प्रधान रचयिता थे इस में संदेह नहीं है। थोड़ी थोड़ी सहायता इसके रचने में औरों से भी उन्हों ने ली इसका आक्षेप बाज़े २ अरबवाले ही उनपर लगाते हैं परन्तु किसी ख़ास २ मनुष्यों का नाम नहीं साबित करसक्के कि किससे किस विषय में कहां पर सहायता ली। इससे

उनके अनुमान इस विषय में निर्मूलहैं इससे यह प्रतीत होता है कि महम्मदने इस बातको किया भी है तो ऐसा सावधानी और दूरन्देशी के साथ किया है कि किसी को भेद इसका कदापि न खुल सके।

जो कुछ हो मुसल्मान तो क़ुरान का निर्माण होना क्या मुहम्मद से और क्या अन्य किसी से मानते ही नहीं हैं। उनका तो पूर्ण विश्वास है कि यह साक्षात् परमेश्वर का अंश है सदा से नित्य है रचा नहीं गया है। पहिली प्रति इसकी लिखी हुई परमेश्वर के सिंहासन के समीप एक बहुत विशाल पीठ (मेज़) पर लिखी हुई थी उसी मेज़पर और भी परमेश्वर की आज्ञारूप इच्छायें प्राचीन और भविष्य लिखी हुई हैं एक प्रति (जिल्द) क़ुरान की काग़ज़ पर लिखी हुई जिबरील फ़िरिश्ता के हाथ स्वर्ग के सबसे नीचे परत पर रमज़ान के महीना में ".शक्ति" की रात्रि में भेजी गई थी। वहां से मुहम्मद को थोड़ा थोड़ा करके भिन्न भिन्न अवसरों पर २३ वर्ष में जब जैसी आवश्यकता हुई जिबरीलने प्रकाश किया था परन्तु मुहम्मदको वर्ष में एक बार समग्र क़ुरान देखने का संतोष देदिया करता था महम्मद के जीवन की केवल अन्तिम वर्ष में उनको क़ुरान दो बार दिखाया गयाथा। लोगों के कथन से मालूम होता है कि यह प्रति रेशम से वेष्टित जिल्द स्वर्ग के अमूल्य रत्नों से अलंकृत थी। कोई कोई अध्याय ही एक संग समग्र प्रकाशहुए हैं शेष अध्यायों के थोड़े थोड़े भाग ही मुहम्मद को प्रकाश किये जाते थे और वह उनको अपने लेखकों से इस अध्याय का यह खंड उस अध्याय का वह भाग इस प्रकार लिखवाया करते थे जब तक कि सम्पूर्ण ग्रंथ जिबरील की आज्ञानुसार लिख कर न तैयार होगया। ९६ वें अध्याय को पहिली पांच आयतेंही पहिले प्रकाशकी गई इसमें सर्व सम्मति है।

प्रकाशित वाक्यों को जब मुहर्रिर लिख चुकते थे तो वह मुहम्मद के अनुयायियों (साथियों) को प्रकट कर दिये जाते थे

जिन में से कोई कोई अपने निज के लिये उनकी नक़ल कर लेते थे परन्तु बहुधा लोग कण्ठस्थही कर लेतेथे और मूल प्रतियां बिना किसी प्रकार के क्रम के एक बक्स में बन्द करदी जाती थीं जिन में कोई नियम समय का नहीं रहता था और कोई अंक के न होने से अब निश्चय बहुतेरे वाक्यों का नहीं होता कि किस समय प्रकाशित हुए थे। मुहम्मद के मरने तक इसीतरह यह सब बिना सिलसिला के पड़े रहे उनके पीछे अबूबक़र ने इस कामको पूरा किया। बहुतेरे लोग जिन्हें यह वाक्य कण्ठस्थ थे युद्ध में मर भी गये थे इससे अबूबक़र ने मुहम्मद के सब संगियों को जो शेष रह गये थे इकट्ठा करवाया और जिन जिन का जो जो वाक्य कण्ठस्थ थे तथा जो ताल वृक्ष के पत्रों पर और चमड़ों पर लिखे हुए दो तख्तियों के बीच में सुरक्षित थे उन सबको संग्रह करके एक प्रति लिखवा कर उमर की बेटी हाफ़ज़ा जो पैग़म्बर की विधवा थी उसकी सुपुर्दगी में रखवा दिया। इसी सम्बन्ध के कारण लोग अबूबक़रको क़ुरान का मूल रचयिता अनुमान करते हैं परन्तु यथार्थ में मुहम्मदही सब अध्यायों को पूर्ण जैसे कि अब मिलते हैं स्वयंही छोड़ मरे थे हां कुछ वाक्योंमें जहां तहां न्यूनाधिक संशोधन भलेही जिन लोगों का कण्ठस्थ थे उनसे सुनकर कर दिया हो। इस से अतिरिक्त अबूबक़रने इन अध्यायों को क्रम बद्ध अवश्य किया है सो भी समय का क्रम उनमें भी नहीं दीखता पहिले सबसे बड़े अध्यायों को रक्खा है उसके पीछे छोटों को इतना ही उनका कृत्य मालूम होता है।

सन् ३० हिजरी में जब उथमान ख़लीफ़ा थे तो जुदी २ प्रतियों में बहुत अन्तर देखकर उन्हों ने हाफ़िज़ा के पास जो अबूबक़र की लिखाई हुई प्रति थी उससे बहुतेरी प्रतियां लिखवा डालीं और इसकी अध्यक्षता (निगरानी) के लिये ज़ैद इब्न थाबित

अब्दुल्ला इब्न ज़ुबेर सैद इब्न अलआस और अब्दुलरहमान इब्न अलहारेथ क़ौम मखज़ूम वाले को नियत किया और यह उनको समझा दिया था जिस शब्द के पाठ में उन सबका परस्पर मतभेद होवे तो कुरेश भाषाही का शब्द लिख दिया करें जिस में पहिले पहिल लिखागया था । इस प्रकार अपने साथियों की सलाह से उन्हों ने राज्य के बहुतेरे सूबों में इन प्रतियों को बटवादिया और पुरानी सब प्रतियों को जलवादिया या दबा डाला । यद्यपि इन निरीक्षणों ने हाफ़ज़ा की प्रतिकी भूलों को संशोधन कर दिया था तथा कुछ पाठ भेद अब भी पाये जाते हैं । अरबी भाषा में स्वर न होने के कारण यह आवश्यकता हुई कि उसकी परायण करने वाले मुकरिसलोग रक्खे जायँ जो स्वरों के सहित शुद्ध पाठ क़ुरान का किया करें । (लोगों का कथन है कि मुहम्मद के बहुत वर्षों के पीछे स्वरों के चिह्न निर्माण किये गयेथे) परन्तु इन पाठ करनेवालों के पढ़ने में और भी पाठ भेद बढ़ते गये जैसा कि अब स्वरों सहित लिखे हुये क़ुरान में है । इस कारण से पाठ भेद बहुधा क़ुरान में उत्पन्न हुआ है । इन भेदों में ७ मुख्य मुकरिसोंको भाष्यकार प्रमाण मानते हैं । क़ुरान में एक दूसरे के विरुद्ध वाक्य भी हैं उसका उत्तर मुसलमान देते हैं कि मनसूख़ कर दिये गये है अर्थात् पहिले परमेश्वर ने उन वाक्यों को उचित समझा था पीछे से समय के अनुसार प्रत्यादेश कर दिया । प्रत्यादेश रूप वाक्य तीन प्रकार के हैं एकतो वह जिनका अक्षर और अर्थ दोनों विलुप्त (मनसूख़) किये गये हैं, दूसरा वह जिनका अक्षर मनसूख़ हो गया है परन्तु भाव बना हुआ है और तीसरे जिनका भावार्थ मनसूख़ होगया है परन्तु अक्षर बना है । पहिले प्रकार की बहुत सी आयतें ऐसी हैं कि पैगम्बर के समय में उनका पाठ पश्चाताप (तोबा) अध्याय में प्रचलित था परन्तु अब उनका प्रचार उठगया है

इन में से अपनी स्मृति से एक को मलिक इब्न अनस इसप्रकार बताते हैं "यदि आदम की सन्तान को दो नदी सुवर्ण की प्राप्त होवें तो वह तीसरी की तृष्णा करेगा। और तीन हुईं तो चौथी के लिये उसकी इच्छा बढ़ेगी। आदमी का पेट सिवाय राख के और किसी वस्तु से नहीं भर सक्ता पश्चाताप करनेवाले को परमेश्वर अभिमुख होता है। इसीप्रकार की आयतों के उदाहरण में अब्दुल्ला इब्न मसऊद की कहावत चली आती है कि मुहम्मद ने उनको एक आयत लिखवाई थी। जब सबेरे उस पुस्तक को देखा कि जिसमें यह आयत लिखली थी तो वह आयत लोप होगई कोरी जगह रहगई थी। मुहम्मद से कहा तो उन्हों ने उत्तर दिया कि उसी रात्रि में वह आयत प्रत्यादेश करदी गई थी।

मुहम्मद के बाद आयत का लुप्त होना।

दूसरे प्रकार के उदाहरण में खलीफ़ा उमर की कहावतके अनुसार एक पत्थर मारने की आयत थी जो मुहम्मद के समय तक तो विद्यमान थी उसके उपरान्त लुप्त होगई " अपने माता पिता की घृणा मतकरो इससे कृतघ्नता का दोष लगताहै कोई स्त्री और पुरुष व्यभिचार करें तो उनदोनों को पत्थरों से मारो। यह दंड परमेश्वर ने नियत किया है परमेश्वर सर्वशक्तिमान और सम्पूर्ण बुद्धिमान् है।

तीसरेप्रकार के उदाहरण में २२५ आयतें ६२ भिन्न भिन्न अध्यायों की बताते हैं जैसे " बैतुल मुक़द्दस की ओर मुख करके नमाज़ पढ़ना, पुरानी रीति के अनुसार व्रत करना, मूर्ति पूजकों के साथ सहन शील होना, मूर्खों का संग न करना, " इसीप्रकार की और भी हैं। इसप्रकार के वाक्य बहुतेरे लेखकों ने संग्रह किये हैं।

यद्यपि सुन्नियों का विश्वास है कि क़ुरान बिना रचा हुआ और नित्य परमेश्वर का सत्य स्वरूप है और इसके विरुद्ध जो मानता है

इसको स्वयं मुहम्मद ने काफ़िर और नास्तिक मानने को कहा है तथापि बहुतेरों का इस विषय में भिन्न मत है। मुतज़ैलाइट लोग और ईसा इब्न सुबेह अबू मूसा के अनुयायी जिसका लकब अल-मुजदेर भी था। यह लोग कुरान को नित्य न मानने वालों को काफ़िर नहीं कहते क्योंकि कुरान को भी नित्य मानें तो दो नित्य पदार्थ हो जाते हैं ऐक्यता नहीं रहती। इस विषय में इतना प्रचंड वादाविवाद हुआ था उसके कारण अनेक आपत्तियां अब्बास बंश के खलीफ़ोंके समयमें उपस्थित हुईं। (खलीफ़ा) अलमामूं ने यह इश्तिहार जारी किया था कि कुरान निर्मितही है और उनके पीछे उनके पदाधिकारी (जानशीन) अल मुतासिम और अल वाथेक इसबातको न मानने वालों को कोड़े से पिटवाते, कैद करते, और जान से भी मरवा-डालते थे। परन्तु अन्त में अलमुतवक्केल जो अलवाथेक के पीछे गद्दी पर बैठे उन्होंने इन अत्याचारों को बन्द करके पहिले इश्तहारों को मनसूख करके जो इस कारण क़ैद किये गये थे उन सबको मुक्तकर दिया और प्रत्येक मनुष्य को अधिकार अपने इच्छाऽनुसार इसबात के मानने अथवा न मानने का देदिया।

अलगज़ाली ने दोनों सिद्धान्तों को इसप्रकार एक करदिया कि कुरान पढ़ा तो मनुष्य की जिह्वा से जाता है और पुस्तकरूप में लिखा जाता है अथवा मनुष्यों को स्मृतियों द्वारा कण्ठस्थ किया जाता है इससे निर्मितही हुआ परन्तु यथार्थ में परमेश्वरही का स्वरूप होने के कारण मनुष्यों की स्मृति में अथवा पुस्तक के पत्रों में रहने के कारण इससे पृथक् नहीं होसक्ता है। अलज़हेद का मत इस विषय में यह है कि कुरानका शरीर द्विआत्मकहै कभी मनुष्य और कभी पशुरूप हो जाता है और यह मत उन सिद्धान्त वालों से मिलता है जो कुरान के दो मुख बताते हैं एक मानुषी दूसरो पशुवत् अर्थात् अक्षरार्थ और भाव दो प्रकार से इसका अर्थ होसक्ता है।

जिसप्रकार लोगों ने कुरान को (मनुष्य कृत) कृत्रिम माना है इसीतरह ऐसे भी लोग हैं जो कहते हैं कि कोई बात इस ग्रन्थकी रचना, लेखन शैली या तर्ज़ तहरीर में ऐसी अपूर्व असाधारण और अद्भुत नहीं कि उसकी भविष्य वाणी और पूर्व कालिक घटनाओं के पैग़म्बराना वृत्तान्त के अतिरिक्त अरब वाले इसके समान और इससे बढ़कर भी फसाहत "तर्ज तहरीर" और शुद्ध भाषाकी रचना न कर सक्ते यदि परमेश्वर की ओर से उनको ऐसा लिखने का अधिकार स्वतंत्रता पूर्वक मिलता और उनको निषेध इसविषयमें न होता। मतज़ेलाईट क़ौम और विशेषतः अलमजदार और अलनुधाम का यह पक्ष था।

मुसल्मानों के दीन और आचारण का मुख्य ग्रंथ होनेके कारण कुरान के भाष्य और व्याख्या भी बहुतेरी हैं उसके अर्थ करनेमें एक बड़े विद्वान् भाष्यकार के अनुसार कुरान का विषय दो प्रकार का है एक अलंकार रूप और दूसरा अक्षरार्थ। पहिले प्रकारमें ऐसे सम्पूर्ण वाक्य अन्तर्गत होते हैं जो संदिग्ध, (तमसीली) उदाहरण रूप कथायें और पहेलियां कैसे हैं तथा वह सबभी जो मंसूख करदिये गये हैं दूसरी श्रेणी में शेष स्पष्टार्थ, असंदिग्ध, और पूर्ण रूपसे प्रचलित सब वाक्य आजातेहैं। इन सब का यथोचित अर्थ करने में ठीक समय जिस वाक्य के मिलने का जो होय उसको कहावतों तथा ग्रंथों के देखने से निश्चित करलेना उसका सम्बन्ध, दशा, इतिहास और कारण वा आवश्यक प्रयोजन जिसके लिये वह प्रकाशित हुआ इनसब बातोंका जान लेना अवश्यहै अर्थात् मक्का या मदीनाके किस स्थान में अमुक वाक्य प्रकाशित हुआ था। वह स्वयं मंसूख होगया अथवा उस के द्वारा अन्य वाक्य मंसूख हुये। वह समय के क्रम से पीछे प्रकाशित हुआ जिसकी सम्भावना पहिले से थी अथवा प्रकाशित होनेपर मुल्तवी रहा जब तक कि उसका यथोचित समय न

आया ग्रन्थ के अन्तर्गत विषय से वह वाक्य अतिरिक्त है अथवा उसी का अनुयायी और सम्बन्धी है, सामान्य है वा विशेष है और उसका अर्थ अक्षरों से स्पष्ट है अथवा भाव से अर्थ निकलता है। इस वर्णन से इतना तो प्रत्यक्ष है कि मुसलमानों में यह कुरान बहुत पवित्र और अत्यन्त आदरणीय धर्म ग्रन्थ माना जाता है। शरीर को शुद्ध करके हाथ पैर मुंह धोकरही उसका स्पर्श करते हैं और उसके ऊपर के पट्टे पर यह लिखा रहता है कि कोई मनुष्य जो शुचि न हो इसका स्पर्श न करैं " जिस से कोई धोखे से उसे न छू लेवें। उस का पाठ लोग बड़ी सावधानी और आदर से करते हैं कमर से नीचे उसे कभी नहीं रखते, उस से न शपथ करते हैं, भारी भारी अव-सरों पर उससे शगुन विचारते हैं। युद्ध में अपने संग उसे लेजाते हैं अपने झंडोंपर उसके वाक्य लिख लेते हैं सोने और मणियों से उसे भूषित करते हैं। और जानबूझ कर अन्य मतवाले के पास उस को नहीं आने देते। अनुवाद से उसका भ्रष्ट होना मुसल्मान् नहीं मानते बल्कि फारसी और अन्य भाषा जावा मलायी आदिमें इसका अनुवाद करवाया गया है।

———:*:———

चौथा खंड ॥

इसलाम शब्दका अर्थ दीन और ईमानकावर्णन।

इसलाम मत का आधार जिस पर मुहम्मद ने मुसलमानों के धर्म का भवन स्थापित किया है यही है कि सृष्टि के आदि से अन्त पर्य्यन्त सदैव एकही सत्य आस्तिक सिद्धांत रहा है और सदैव रहैगा भी अर्थात् एक सच्चे परमात्मा का मानना और जिन जिन पैग़म्बर अथवा एलचियों को वह संसार में अपनी इच्छा के प्रकाश निमित्त प्रमाणिक सनद सहित जब २ भेजना उचित समझे

उन सब आज्ञाओं को विश्वास पूर्वक मानना और तदनुसार आचरण करना। न्याय अन्याय तथा पाप पुण्य के नित्य स्थायी नियमों के अनुसार आचरण करना और उनके साथ कुछ सामयिक उपदेश तथा विधियों को भी परमेश्वर युग युग के अनुसार प्रचार करता है। वह स्वभाव से नित्य नहीं हैं परन्तु उनका मानना उतने ही काल और अवधि के लिये उचित होता है जितने के लिये उस की आज्ञा विशेष रूप से हो और जो उसकी इच्छा के अनुसार परिवर्त्तन शील भी हैं। इस मिष (हीले) से कि यह धर्म इस समय भ्रष्ट होगया है और एक भी सम्प्रदाय इसका यथार्थ आचरण नहीं करता है मुहम्मद ने अपने को परमेश्वर का भेजा हुआ पैग़म्बर होने का दावा किया कि हमारे द्वारा जो भ्रष्टता इसमें होगई है वह संशोधन होकर प्राचीन आदि की शुद्धता को यह धर्म प्राप्त होगा। और इसके साथही कुछ तो प्राचीन कालही के व्यवहृत और कुछ नवीन विशेष नियम और रीति रिवाज़ भी स्थापित करके अपने सिद्धान्त का निचोड़ दो बातों में रक्खा कि परमेश्वर एक है और हम उसके रसूल संदेशिया हैं और इस रसूली के कारण जो नियम हम स्थापित करैं उनको सब लोग दैवी समझ कर पालन करैं।

मुसलमान अपने मतमें दो बिभाग मानतेहैं "एक ईमान" अर्थात् विश्वास और आगम और दूसरा "दीन" अर्थात् प्रयोग और आचरण। पहिले में अर्थात् "ईमान" में परमेश्वरही सत्य स्वरूप एकहीहै और मुहम्मद उसके रसूल हैं इस सिद्धान्त का स्वीकार मुख्य है। इसके अन्तर्गत छः विस्पष्ट शाखा हैं। १ आस्तिकता परमेश्वर में बिश्वास २ उसके फ़रिश्तों में ३ उसके धर्म ग्रंथ में ४ उसके पैग़म्बरों में ५ क़यामत के दिन में जिसदिन सबका न्याय होगा और ६ परमेश्वर की आज्ञा का अखण्ड रूप होना तथा दैवाधीनता अर्थात् भवितव्य भला बुरा सब पहिले से नियत हो चुका है इसमें बिश्वासरखना।

इसी प्रकार "धर्म" के भी चार विभाग हैं १ निमाज़ और उस के लिये आवश्यक शौचादिक क्रिया (ग़ुसल) २ दान (ज़कात खैरात); ३ व्रत (रोज़ा) ४ मक्का की तीर्थयात्रा (हज्ज); । कुरान और मुसलमान आचार्यों (मुरशिदों) के लेखों से यह स्पष्ट है कि मुहम्मद और उनके सच्चे ईमानदार अनुयायियों को परमेश्वर और परमेश्वर के गुणों का यथार्थ और सच्चा अनुभव (ख्याल) आदि से रहा हो। केवल (तसलीस) त्रिमूर्ति, अर्थात् टिजिरीके सिद्धान्त को वह हठ वश नहीं स्वीकार करते हैं।

फ़िरिश्तों का वर्णन।

फ़िरिश्तों का अस्तित्व और उनकी शुद्ध स्वरूपता में विश्वास करने की आज्ञा कुरान में पूर्ण रूप से है। वह काफ़िर (नास्तिक) समझा जाता है जो इनको न माने अथवा उनकी घृणा करे या उन में स्त्री पुल्लिंगका भेद आरोपण करे। मुसलमानों का विश्वास है कि फ़िरिश्तों के शरीर शुद्ध और सूक्ष्म अग्नितत्त्व से निर्मित हैं न वह खाते हैं न पीते हैं न सन्तान उत्पादन करते हैं। उनके भिन्न २ कार्य्य और आकारहैं। उनमेंसे बाज़े परमेश्वरकी उपासना भिन्न भिन्न आसनों में करते हैं। बहुतेरे उनमेंसे परमेश्वरकी स्तुति करते रहतेहैं वा मनुष्यों के निमित्त परमेश्वर से कृपा करने का परार्थ बाद करते हैं। मुसलमानों का मत है कि कुछ फिरिश्ते मनुष्यों के कर्मों को लिखा करते हैं और कुछ परमेश्वर का सिंहासन उठाया करतेहैं और अन्य सेवा कार्य्य में भी नियुक्त रहते हैं। इनमें चार मुख्य फ़िरिश्ते जिनको लोग परमेश्वर के विशेष कृपापात्र समझते हैं और जिन का वर्णन प्रायः कुरान में है उनमें से एक जिब्रील के कई नाम रक्खे हैं पवित्र आत्मा, अथवा दैवीवाणी का लाने वाला फिरिश्ता, और यह अनुमान करते हैं कि उसको परमेश्वर अधिक विश्वासपात्र मानते हैं और दैवी आज्ञाओं का लिखना उसके सुपुर्द किया गया है।

दूसरा माइकेल फ़िरिश्ता यहूदियों का रक्षक और मित्र है। तीसरा अजराईल फ़िरिश्ता (यम दूत) मृत्यु का अध्यक्ष है वह मनुष्यों की रूहों को शरीरों से अलग करता रहता है। चौथा इसराफ़ील है जो कयामत के समय बिगुल बजाकर सबको विज्ञप्ति देवेगा। लोग दो फ़िरिश्तों को सदैव प्रत्येक मनुष्य के समीप रहना और कर्मों को लिखना बताते हैं प्रतिदिन यह बदला करते हैं इसी से इनकी संज्ञा "मुअक्क़िबात" है। यहूदियों ने यह फिरिश्तोंका क्रम फ़ारिसवालों से लिया है इसे वह स्वीकार करते हैं और उनसे मुहम्मद और उनके शिष्यों ने उद्धृत किया है। प्राचीन फारिस वालों का फिरिश्तों के मन्त्रियत्व में दृढ़ विश्वास है उनके मतानुसार संसार के कार्य्यों की अध्यक्षता फिरिश्तों के ज़िम्मे है। उनके नाम और कार्य्य जुदे जुदे मानकर महीनों और दिनों के नाम भी उन्हीं के अनुरूप रक्खे गये हैं। जिबरील को वह "सुरुश" और "रिवान बख़श" (अर्थात् रूहों का देनेवाला) नाम से लिखते हैं। और फ़िरिश्ते मौत को मुर्दाद के नाम से लिखा है। माईकेल का नाम उन के यहां "बेहतर" है जिसके द्वारा मनुष्योंको आहारादिक मिलतेहैं। यहूदी लोगों के मत में फिरिश्ते अग्नि तत्त्वके निर्मित हैं भिन्नरकार्य्य करतेहैं और मनुष्योंके अर्थ परमेश्वरके समीप मध्यस्थताकरतेहैं और मनुष्यों की सेवा में उपस्थित रहा करतेहैं। मृत्युके फिरिश्ते का नाम उनके यहां डच्मा है जो मनुष्यों को अन्त समय में प्रत्येक का नाम ले लेकर बुलाता है। शैतान जिसका नाम मुहम्मद ने "इबलीस" (निराश) रक्खा है "अज़ाज़ील" पूर्व में परमेश्वर के समीपवर्ती गण में था जिसका आदम का मान सत्कार परमेश्वर की आज्ञानुसार न करने के कारण स्वर्ग से पतन क़ुरान में लिखा है।

जिन्नों का वर्णन।

मध्यम श्रेणी के जीव जिन्न कुरान में और भी माने गये

हैं जिनका शरीर फ़िरिश्तों से कुछ अधिक स्थूल अग्नि तत्त्व का ही माना है यह खाते पीते और सन्तान उत्पन्न करते हैं और मरणशील होते हैं। मनुष्यों की तरह यह धर्मात्मा और पापी दोनों प्रकार के होते हैं और कर्मों के अनुसार नरक स्वर्ग में जाते हैं। मुहम्मद का दावा है कि हमारा अवतार मनुष्य और जिन्न दोनों के संशोधन निमित्त हुआ है। पूरबवाले लोग कहते हैं कि जिन्नों की बस्तियाँ आदम के जन्म से पहिले संसार में बहुत युगों तक रही थीं और उनके राजा भी अनेक लगातार होते आये जिनका साधारण नाम सुलैमान होता था परन्तु जब यह सब भ्रष्ट होने लगे तो इवलिस को भेजा गया था कि इन सब को पृथ्वी के दूरस्थ भाग में खदेड़ कर वहाँ पर यह बन्द करदिये जायँ। कुछ उनकी नसलें शेष भी रहगईं थीं जिनके साथ युद्ध करके फारिस के प्राचीन कालिक बादशाह तहमूरथ ने कोह क़ाफ़ में हटा दिया। इन सब युद्धों और गद्दियों की बहुत सी कल्पित कहानियां भी चली आती हैं। इन में भिन्न भिन्न जाति और नसलें भी मानी गई हैं कोई जिन्न, कोई परी, कोई देव, दानव, (राक्षस), और तकवीन, इत्यादिक प्रसिद्ध हैं। मुसलमानों की कल्पना जिन्नों के विषय में यहूदियों की "शेदीम से जो एक प्रकार के भूत पिशाच लिखे हैं पूर्णतः मिलती है। तूफ़ान से पूर्व में अज़ा और अजाईल दो फिरिश्तों ने इनको लामेक की कन्या "नआमा" ने उत्पादन किया था। मंत्री स्वरूप फिरिश्तों से "शेदीम" तीन बातों में सदृश्य हैं अर्थात् उनके पर होते हैं पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक वह उड़ा करते हैं। और कुछ भविष्य का ज्ञान भी उनको होता है। और तीन बातें उनमें मानुषी होती हैं खाते पीते है, सन्तान उत्पादन करते हैं और मरते हैं। यह भी मानते हैं कि इनमें से कुछ लोग मूसा के धर्मके अनुयायी हैं अतः धर्मात्मा पुण्यशील हैं शेष नास्तिक होते हैं।

मुसल्मानी धर्म ग्रन्थों की संख्या तथा उनके सम्बन्ध में विचारा विचार।

धर्म ग्रन्थों में मुसल्मानों को कुरान की शिक्षा है कि युग युग में परमेश्वर ने लेखवद्ध अपनी इच्छारूप आज्ञाओं को अनेक पैग़म्बरों द्वारा प्रकट कियाहै। सच्चे मुसल्मानको एक एक अक्षर इसका सत्य मानना चाहिये। उनके अनुसार यह १०४ धर्म ग्रन्थ हैं जिनमें से १० आदम को, ५० सेठको, ३० इद्रिस या ईनाक़ को १० इब्राहीम को दिये गये थे शेष ४ पैन्टाच्यूक, साम्स, वाईबिल (गौस्पैल) और कुरान क्रमाऽनुसार मूसा, दाऊद, ईसा, और मुहम्मद द्वारा उतरे हैं। कुरान पैग़म्बरों की छाप मुहर है उसके पश्चात् अब कोई धर्म ग्रन्थ के उतरने की सम्भावना नहीं है। यह चार ग्रन्थ ही अब शेष रहगये हैं और सब १०० ग्रन्थ लुप्त होगये और उनके विषयों का भी पता नहीं लगता है। सेबिअन लोगों के पास तूफ़ान से पूर्व कालिक पैग़म्बरों के ग्रन्थों का होना अब भी बताते हैं।

इन चार अवशिष्ट ग्रन्थों में से पैन्टेच्यूक, साम्स, और वाइबिल जो यहूदी और ईसाइयों के पास हैं उन में इतना परिवर्त्तन और भ्रष्टता अन्तर्गत होगई है कि यद्यपि परमेश्वर की सच्ची आज्ञा स्वरूप वाक्य उनमें जहां तहां होवें भी तथाऽपि अब वह विश्वासके योग्य नहीं रहेहैं। कारण यह बताते हैं कि वर्त्तमान् प्रतियां इन ग्रन्थों की पक्षपाती यहूदी और ईसाइयों के पास हैं। कुरान में यहूदियों पर विशेष करके अपने धर्म को भ्रष्ट और मिथ्या कर डालने का आक्षेप प्रायः लगाया गया है। मुसल्मान् ग्रन्थकार इन भ्रष्ट क्षेपकों के उदाहरण भी कुछ देतेहैं परन्तु सबमें पक्षपातका अवलम्बन करके कल्पित मिथ्या बनावटी कथाओंका आधारही रक्खाहै। मुसल्मानों के पास कोई प्रति "पैन्टाच्यूक" की यहूदियों की प्रतिसे भिन्न हैं या

नहीं इसका निश्चय नहीं है परन्तु एक शख़्स जो पूरबके इन देशों में सफ़र करने को गयाथा उसका कथनहै कि यह लोग मूसाके धर्म ग्रन्थों का बहुधा भ्रष्ट रूप मेंही अपने पास होना बताते हैं परन्तु कभी किसी ने इनको आंख से नहीं देखा है दाऊद के "साम्स" (भजन) तो अवश्य उनके पास "अरबी" और "फारसी" भाषा में है जिनको वह निज के तौर पर पाठ करते हैं और उसमें मूसा, जोनास और औरों के स्तोत्र भी पढ़ा दिये गये हैं। रीलेन्ड साहिब और मुशियोडी हर्बीहलौट इन दोनों विद्वानों का इस विषय में भिन्न भिन्न वर्णन है कारण जिसका यही होसक्ता है कि जुदी जुदी प्रतियां इन्हों ने देखी होंगी जिसके अनुसार अपनी अपनी राय भिन्न भिन्न लिखी है।

मुसल्मानों के पास अरबी भाषा में "बाइबिल" सेन्टबरन-बास की भी है जिसमें ईसा का वृत्तान्त मूल (असली) बाइबिलसे भिन्न है और उन कहावतों के अनुसार किया गया है जिनको क़ुरान में मुहम्मद ने आधार बनाया है। अफ़्रिका वाले मौरिस्कोज़ लोगों के पास स्पेनी भाषा में इस प्रिसयूजिनी बाईबिल का अनुवाद है और सेवाई के शहज़ादे के पुस्तकालय में एक प्राचीन हस्त लिखित इटे-लिअन भाषा में इसी बाइबिल का अनुवाद भी है (जो अनुमान से उनके निमित्त लिखा गया था जिन्होंने अपना मत छोड़कर दूसरा मत स्वीकार करलिया था)।

मुसल्मानों का बनाया हुआ जाली यह ग्रंथ नहीं है जहां तहां उन्हों ने अपने अभीष्ट (मतलब) के लिये क्षेपक वा अदल बदल पीछे से करदिया है विशेष करके "पैरेक्लीट" या "कम्फर्टर" शब्द के स्थान में इस अप्रमाणिक ग्रंथ में "पैरिक्लाइट" जिसका अर्थ "प्रसिद्ध" है इस अभिप्राय से लिखा प्रतीत होता है मुहम्मद का नाम मानों पहिले से भविष्य वाणी के रूप में इस ग्रंथ में पाया

जाता है क्योंकि अरबी भाषा में यह नाम मुहम्मद का "प्रसिद्ध" है। कुरान के जिस वाक्य में अहमद नाम से ईसा की भविष्य वाणी मुहम्मद के पैदा होने की विधिवत् वर्णन की गई है मानो उसका समर्थन इस शब्द द्वारा करते हैं। इस प्रकार की मिथ्या बनावटी कल्पनाओं द्वारा मुसल्मान् अनेक वाक्य उद्धृत करते हैं जिनका पता नाम निशान भी "न्यूटैस्टेमैन्ट" में नहीं पाया जाता है। परन्तु इससे यह नहीं मान लेना कि मुसल्मान् या उनमें से सबही इन अपनी प्रतियों को असली प्राचीन धर्म ग्रन्थ होना स्वीकार करते हैं। जब कोई यह शंका वाद करै कि जैसे पैन्टेव्यूक और बाईबिल का भ्रष्ट होजाना वह बतलाते हैं तैसेही कुरान में भी क्षेपक आदिक वा मिथ्या वाक्य क्यों न मिलादिये गये हों तो इसके उत्तर में लोग कहते हैं परमेश्वर ने इस बात की प्रतिज्ञा करदी थी कि कुरान को स्वयं परमेश्वर रक्षा करके उसमें न्यूनाधिक व अपभ्रश नहीं होने देंगे। तथापि उसमें पाठ भेदों का होना तो स्वीकार करते हैं। पैन्टेव्यूक और बाईबिल को बतलाते हैं कि मनुष्यों की सपुर्दगी में रहने के कारण मनुष्यों ने उनको स्वार्थ वश बिगाड़ दिया है। "दाना" (डेनियल) और अन्य पैग़म्बरों के ग्रन्थों का ज़िक्र मुसल्मान् करते हैं परन्तु उनको दैवी रचना अथवा धर्म सम्बन्धी प्रमाण स्वीकार नहीं करते।

पैग़म्बरों का वर्णन।

मुसल्मानों की एक कहावत के अनुसार पृथ्वीपर २२४००० और दूसरी कहावत से १२४००० पैग़म्बर होचुके हैं जिनमें से३१३ "एपोसिल्स" विशेष आज्ञा पत्रद्वारा मनुष्योंके पलची स्वरूपहुये हैं। और इनमें से ६ नये नियमोंके प्रचार करने के निमित्त उतरे हैं जिनसे पुराने नियम मंसूख किये गये हैं यह छः पैग़म्बर आदम, नूह, इब्रा-

हीम, मूसा, ईसा, और मुहम्मद हैं । मुसलमानों के मताऽनुसार सबही पैग़म्बर सामान्य रूप से बड़े बड़े पाप और भ्रमों से रहित रहे हैं और सब एकही मत अर्थात् इसलाम के अनुयायी थे उनके नियम और विधियां भलेही प्रथक् प्रथक् थीं । इन में सब श्रेणी के हैं किसी को अधिक प्रतिष्ठित और उत्तम किसी को कम अधिकारी मानते हैं। नई प्रथा और नियमों के स्थापकों को सबसे बड़ी श्रेणी का माननीय और उनके पीछे " ऐपोसिल्स का दर्जा मानते हैं ।

पैग़म्बरों की इस वृहत् संख्या में भिन्न २ आचार्य और महत् पुरुष जिनका नाम धर्मग्रंथ (बाइबिल) में आया है वही नहीं वरन् अन्य भी आजाते हैं जिनको पैग़म्बर की पदवी नहीं दीगई है जैसे आदम, सेठ, लौट इशमाईल, नन, जौशूआ आदि और ईनौक, हीबर, जेहरो इनका क़ुरान में नामान्तर इद्रीस, हूद, शोआब रखकर लिख दिया है और बहुतेरे ऐसे भी हैं जिनका नाम बाईबिल में नहीं आया परन्तु क़ुरान में सालेह, खेद्र, धूलकैफल आदि लिखा गयाहै।

मुहम्मद ने पैन्टेट्यूक, साम्स, और बाईबिल की उत्पत्ति दैवी मानी है अतः क़ुरान को भी बहुधा इन्हीं के सदृश होने का प्रयत्न किया है और अपनी पैग़म्बरी के प्रमाण में उन ग्रंथों की भविष्य वाणियों का हवाला दिया है । प्रायः यहूदी और ईसाइयों को इस बात का दोष भी लगाया है कि उन बचनों को अपने धर्म ग्रंथों में से लोगों ने दबा रक्खा है जिनमें मुहम्मद के पैग़म्बर होने की सूचना थी । मुसलमान अब भी प्राचीन और नवीन टेस्टैमेंट की वर्तमान प्रतियों में से भी इस विषय के प्रमाण रूपी वाक्य पेश करने के उद्योग में नहीं चूकते हैं जिन से मुहम्मद की पैग़म्बरी की भविष्य बाणी साबित होजाय । दूसरी बात जिसपर विश्वास करने का क़ुरान में आदेश है क़यामत अर्थात् अन्तिम न्यायका दिवस लिखा है मृत्यु के उपरान्त रोज़ क़यामत तक शरीर और आत्मा की दशा

इस अन्तर में क्या होगी उसको इस भांति मानने के लिये कुरान में उपदेश है।

मृतक शरीर की कब्र में दशा।

कब्र में जिस समय देहधारी का मृतक शरीर रक्खा जाता है उसके पास एक फिरिश्ता आकर सूचना दो परीक्षकों (जांच करने वालों) के आने की देता है यह मौनकर और नकीर नामी भयानक रूपधारी श्यामवर्ण के दो फिरिश्ते हैं जो आकर मृतक से कहते हैं सीधा बैठकर परमेश्वर की ऐक्यता और मुहम्मद की पैग़म्बरी के विषयक प्रश्नों का उत्तर दे। यदि इनका उत्तर ठीक २ दिया तो मृतक को शान्ति पूर्वक लेटने देते हैं और स्वर्ग की वायु का स्पर्श उसे प्राप्त कराते हैं और जो मृतक पुरुष उत्तर ठीक न दे सका तो अपने लोहे के डंडों से उसकी कनपटी पर प्रहार करने लगते हैं जिसकी व्यथा से पीड़ित होजाताहै और इतना वाह वैला मचाता है कि उसकी ध्वनि पूरब से पश्चिम तक मनुष्य और जिन्नों को छोड़ कर शेष सब जीव सुनते हैं। तत्पश्चात् मिट्टी से लाश (मृतकदेह) को दबा देते हैं और सात शिर वाले ६६ अज़दहा (भयानक पक्ष युत सर्प) उसे रोज क़यामत तक काटा और चबाया करते हैं अथवा इसको अन्य लोग इस प्रकार कहते हैं कि उनके पापही विषैले जन्तु बनकर जैसा पाप भारी वा हलका हुआ तदनुसार अज़दहा सर्प वा बिच्छू के रूप में काटा करते हैं। बाज़े लोग इसको लक्षज अलंकार मानते हैं कब्र का यह वृत्तान्त मुहम्मद की लरीही कहावत पर ही निर्भर नहीं है उसका स्पष्ट संकेत कुरानमें भी है यद्यपि उसे स्पष्ट उपदेश रूप से नहीं वर्णन किया है परन्तु साधारण रूपसे सब सच्चे मुसल्मान् इसपर विश्वास करके अपनी कब्रों को पोला बनाते हैं जिससे फिरिश्तों की परीक्षा लेने के समय वह सीधे आराम से उठ

में बैठ सकें । मुतज़ैलाइट फ़िर्क़ा के तथा बहुतेरे और लोग भी इस सिद्धान्त को किञ्चित् मात्र भी नहीं मानते ।

मुहम्मद ने इस कल्पना को यहूदियों से ही निस्सन्देह लिया है और उन लोगों में इसका प्रचार बहुत प्राचीन समय से था । उनके मताऽनुसार ज्यों हीं फिरिश्ता क़ब्रपर आकर बैठता है त्यों-हीं आत्मा लाश में प्रवेश करके शरीर धारी को पैरों पर खड़ाकर देती है और फिरिश्ता प्रश्नकरने लगता है और लोहे और अग्निकी बनी हुई शृंखला (जंजीर) से मृतक को मारता है। पहिले प्रहार में सब अंग प्रथक् २ होजाते हैं दूसरे प्रहार से अस्थि समूह तितर बितर होजाताहै और तीसरे में शरीर चूर्णहोकर धूल बनकर क़ब्रमें फिर लौटि जाताहै । इस यातना और वेदना का नाम हिब्बूत हक़ेवर अर्थात् "क़ब्र की मार" उनलोगों में है और उनके मतसे सबहीको यह भोगनी पड़ती है सिवाय उनलोगों को जो या तो रविवार के संध्याकाल में मरते हैं या जो इज़रईल के देश के निवासी हैं ।

मुसल्मानों से यह शंका की जाती है कि लोगोंकी इस परीक्षा के समय को वेदना की चिल्लाहट कभी किसी ने सुनी तो नहीं है अ-थवा जिनके शरीर भस्म होजाते हैं या जिन्हें जीव जन्तु या पक्षी खाजाते हैं या बिना दफ़न किये हुये नष्ट होजाते हैं उनकी परीक्षा कैसे सम्भव होसक्ती है ? तो इसका समाधान लोग इस प्रकार करते हैं कि क़ब्र के उस ओर क्या होता है मनुष्य जान नहीं सक्ता और शरीर के किसी अङ्ग में प्राण आने से फिरिश्तों के प्रश्नों का उत्तर देने योग्य प्राणी हो सक्ता है ।

आत्मा के विषय में यह लोग कहते हैं कि पुण्यात्मा की रूह को तो फिरिश्ता मौत (अर्थात् यमराज) शरीर से बहुत धीरे २ मुलाइमिअत से प्रथक् करता है और पापियों की आत्मा को तीक्ष्णता से बलात्कार निकालता है जिस के उपरान्त जीव "अल-

बर्ज़ख़ " दशा में रहता है। आस्तिक और धर्मात्मा को दो फ़िरिश्ते स्वर्ग में लेजाकर यथोचित स्थान वहां देते हैं। ईमान वालों के लिये तीन श्रेणी मानी गई हैं। प्रथम स्थान पैग़म्बरों को जिनका प्रवेश मरनेपर तत्कालही स्वर्ग में होताहै दूसरा दर्जा शहीदों का है जिनकी आत्मा मुहम्मद की कहावत के अनुसार हरे पक्षियों के जौज (crops घोसलों) में रहती हैं जो स्वर्ग के फलों को खातेहैं और स्वर्गीय नदियों का जल पीते हैं। तीसरे दर्जे में वह ईमान वाले लोग हैं जिनके विषय में अनेक मत लोगों केहैं १ बाज़े मानतेहैं कि क़िया-मत के दिनतक इन लोगों की आत्मायें कब्र के आस पास फिराकरती हैं और जहां चाहैं तहां आनेकी स्वतंत्रता रखती हैं। इसके प्रमाण में मुहम्मद कब्रों में लोगों से सलाम करने का तरीक़ा बतलाते हैं मुह-म्मद इसबात को कहते थे कि यद्यपि मुर्दा उत्तर नहीं देसक्ते परन्तु जीवित और मृतक सलाम को तुल्य रूपसे सुनते हैं। इसी के अनु-सार मुसल्मानों में अपने निकट के सम्बन्धियों की कब्रों पर जानेकी रीति इतनी प्रचलित है।

(२) अन्य लोगों का मतहै कि सब जीवोंकी आत्मा (रूह) " आदम " के साथ स्वर्गके सबसे नीचेके भागमें रहती है और इस के प्रमाण में मुहम्मद का कथन बतलाते हैं कि जब उन्हों ने रात्रि के समय अपनी स्वर्ग यात्रा की थी तब उन्हों ने स्वर्गीय जीवों को आदम के दाहिनी ओर नरकीय जनों को बांई ओर बैठा हुआ देखा था। (३) कुछ लोग कहतेहैं कि आस्तिकोंकी आत्मायें कूप ज़मज़म में रहती हैं और काफ़िरों की आत्मा सूबा हद्रमौत के एक बरहूत नामी कूपमें रहा करतीहैं। (४) बाज़ोंके मतसे सात दिनतक आत्मा कब्र के समीप रहती है परन्तु फिर कहां जातीहै इसका निश्चय नहीं। (५) और लोगोंका मतहै कि यह सब आत्मायें उस तुरही (बिगुल) में रहती हैं जो क़ियामत के दिन मुर्दों को उठाने के लिये बजाई

जायगी। (६) और लोगों के मत से पुण्यात्माओं की आत्मायें श्वेत पक्षी के रूप में परमेश्वर के सिंहासन के नीचे निवास करती हैं और पापात्माओं को फिरिश्ते स्वर्ग में लेजाते हैं परन्तु वहां से मलीन होने के कारण वह निकाल दिये जाते हैं पृथ्वी में फिर पटके जाते हैं यहां भी उनको स्थान नहीं मिलता अन्त में सातवें तलमें साजीन नामक अन्धरूप आगार में एक हरे चट्टान के नीचे डाले जाते हैं या मुहम्मद की एक कहावत के अनुसार शैतान के दंष्ट्र (डाढ़) के नीचे रहकर पीड़ित हुआ करते हैं जबतक कि क़यामत के दिन फिर अपने शरीर में प्रवेश न करें।

क़यामत का वर्णन ॥

यद्यपि कुछ मुसल्मानों ने क़यामत को अध्यात्मिकही माना है कि जहां से जीव आया है वहीं फिर लौट जायगा (इस मतका पक्ष इब्नसीना ने भी किया है और इस मत को कुछ लोग तत्व ज्ञानियों का मत कहते हैं) और कुछ लोग कहते हैं कि मनुष्य स्थूल शरीर धारी है आत्मिक नहीं है ऐसा मानते हैं। तथाऽपि साधारण सम्मति के अनुसार शरीर और आत्मा दोनोंही क़यामत के दिन उठेंगे और मुसलमानी विद्वान् शरीर के पुनरुत्थापन की सम्भावना पर विशेष आग्रह करते हैं और जिस प्रकार यह पुनरुत्थान होगा उसको न्याय (दलील) से पुष्ट भी करते हैं परन्तु मुहम्मद ने एक अङ्ग का बना रहना बड़ी सावधानी पूर्वक बतलाया है जिसके आधार पर आगे चलकर समग्र शरीर फिर बन जायगा अर्थात् यह खमीर रूप रहेगा शेष अंग चाहे कुछ हो जायँ पीछे से सम्पूर्ण अङ्ग इसमें मिल जायंगे। उनकी शिक्षाऽनुसार और सब अंग मिट्टी में मिल जाते हैं केवल एक " अलअब्ज " नामी हड्डी (अस्थि) जिसको अंगरेज़ी में " औस कोकीजिस " या (नितम्बभाग) पुट्ठा की हड्डी कहते हैं जो सबसे पहिलेही निर्माण होती है अखंडित बनी

रहैगी और इसी बीज रूप से समस्त शरीर फिर से क़यामत के दिन बन जायगा। यह पुनरुत्थान शरीरों का ४० दिन की वर्षा द्वारा होगा जिससे बारह हाथ ऊंचा जल पृथ्वी को आच्छादन करलेगा जिस प्रकार पौधे फूटकर निकलते हैं उसीतरह शरीर भी मनुष्यों के इसी जल में से अंकुरित होकर निकलेंगे। यहभी मुहम्मद ने यहूदियों के मतसे लिया है उनके मताऽनुसार " लूज़ " नामक हड्डी बनी रहती है सिर्फ़ इतना अन्तर है कि ४० दिनकी वृष्टि के स्थान उनके मतसे ओस (शीत) से धरती की धूल तर हो जायगी उसी के प्रभाव से शरीरों का पुनः उद्भव होगा।

क़यामत कब होगी इसका भेद केवल परमेश्वरही जानते हैं। जिब्राईल से मुहम्मद ने पूछा था तो उन्होंनेभी इस विषय में इसका ज्ञान अपनी शक्ति से परेही बताया था। परन्तु कुछ चिह्नों से क़यामत की सूचना पहिले से होजायगी और यह सूचक चिह्न छोटे बड़े दो प्रकार के डाक्टर पौकौक ने बयान किये हैं।

क़यामत होने के छोटे चिह्न॥

छोटे चिह्न यह हैं—

"१ मनुष्यों में विश्वास और ईमान का हिरास।

२ नीचों का उच्च पदवी प्राप्त करना।

३ लौंडी से मालिक या मालिकिनी की उत्पत्ति जिसका अभिप्राय यह मालूम होता है कि संसार का अन्त जब आने को होगा तब मुसलमान बहुत व्यभिचारी होजायँगे अथवा बहुतों को क़ैदी बनाकर उनको अपना लौंडी गुलाम करलेंगे।

४ बलवा, फ़िसाद, राज द्रोहकी बहुल्यता।

५ तुर्कों के साथ युद्ध।

६ पृथ्वी में इतना दुःख और क्लेश की वृद्धि कि जब आदम

किसी क़ब्र के पास होकर निकलैगा तो यह कहने लगेगा कि हे परमेश्वर हम भी क़ब्र में होते तो अच्छा था।

७ ईराक और शाम के सूबे करदेना बन्द कर देंगे।

८ मदीनाकी इमारतें अहाव वा याहावके पास पहुँच जायंगी।

क़यामत होने के बड़े चिह्न।

अब बड़े चिह्नों का इस प्रकार वर्णन किया है।

१ सूर्य का पश्चिम में उदय होना। बाज़ लोगों का अनुमान है कि (सृष्टि के) आदि में भी सूर्य पश्चिम में ही उदय होता था।

२ मक्का की मसजिद में अथवा सफा पर्वतपर अथवा तायेफ़ के देश में वा किसी अन्य स्थान में ६० हाथ ऊंचा पशु पृथ्वी में से निकलैगा। बाज़े कहते हैं कि इस पशु का सिरही इतना लम्बा होगा कि बादलों में और स्वर्गतक पहुंचैगा। यह पशु तीन दिन तक प्रकट रहैगा परन्तु उसके शरीर का तृतीयांशही नज़र आवेगा। यह घोर राक्षस रूप कई एक जन्तुओं के मिश्रित आकार का होगा अर्थात् उसमें सांड़ का सिर, सूकर की आंखें, हाथी के कान बारहसिंहा के सींग, शुतुर्मुर्ग की गर्दन सिंह (शेर) का वक्षस्थल (छाती) चीते का रंग, बिल्ली की पीठ, मेढ़े की पूंछ, ऊंट की टांगें और गदहा की बोली होगी। कोई कहते हैं कि यह स्त्री जाति पशु कई स्थानों में तीनबार दीख पड़ैगी और अपने संग मूसा का सोटा और सुलेमान की मोहर छाप लावैगी। इतनी वेगगामी होगी कि न कोई उसको पकड़ सकेगा और न उससे बच सकैगा। मूसा के सोटे से तो मार कर सब ईमानवाले आस्तिकों के चेहरेपर निशान "मोमेन" शब्द का करदेगी और छाप से सब नास्तिकों के मुंह पर "काफ़िर" शब्द छापदेगी जिससे ज्ञात हो जायगा किस योग्य कौन मनुष्य है। यह भी कहते हैं कि यह पशु

अरबी भाषा बोलैगी और इसलाम मतको छोड़ कर सब मतों की व्यर्थता और मिथ्यारूप प्रकाश करदेगी। प्रतीत होता है कि यह पशु बाईबिल के पशु को ही अस्तव्यस्त रूप से समझ कर कल्पना किया गया है।

३ यूनानियों के साथ युद्ध और इसहाक के वंशज ७०००० मनुष्य कुस्तुन्तुनिया पर आधिपत्य कर लेंगे। बल द्वारा इसको यह नहीं ले सकेंगे परन्तु "परमेश्वर महा शक्तिशाली सिवाय परमेश्वर के कोई अन्य देवता नहीं है" यह शब्द जब आप से आपही लोग उच्चारण करेंगे तो नगर की दीवालें गिर पड़ैंगी। लूटके मालको बांटने लगेंगे तो ईसा के प्रतिवादी के प्रकट होने के समाचार उन को मिलैंगे तिसपर वह सब छोड़कर लौटि जयँगे।

४ अलमसीह अलदज्जल अर्थात् मिथ्यावादी झूंठा ईसा (अथवा केवल "अल दज्जाल") का प्रकट होना। वह काना (एक आंख) का होगा और उसका मुख "काफ़िर" शब्द से अङ्कित होगा लोग कहते हैं कि यहूदी उसका नाम मसीह बिन दाऊद बताते हैं और सृष्टि के अन्त में प्रकट होकर वह समुद्र और भूमि का अधिपति होगा और यहूदियों का राज्यशासन फिर से पूर्ववत् स्थापन करैगा। मुहम्मद की कहावतों के अनुसार पहिले वुह ईराक और शाम के मध्य किसी स्थान में प्रकट होगा या औरों के कथनाऽनुसार खुरासान के सूबा में। यह भी कहते हैं कि वहगदहा पर सवार होगा उस के संग ७०००० इसपहान के यहूदी रहैंगे और वह चालीस दिन तक पृथ्वी पर रहैगा। इन चालीस दिनों में एक दिन एक वर्ष के प्रमाण का, दूसरा दिन एक मास का, तीसरा एक सप्ताह का, और शेष साधारण दिन होंगे। वह सब स्थानों को विनाश कर देगा केवल मक्का और मदीना फिरिश्तों से रक्षित होने के कारण बच जायँगे। अन्त में ईसा उसको ल्यूड के द्वार पर युद्ध

में मार डालेंगे। कहते हैं कि मुहम्मद ने तीस मिथ्या ईसाओं के प्रकट होने की भविष्य वाणी कही है परन्तु इन सब में औरों की अपेक्षा विशेष प्रसिद्ध एकही होगी।

५ पृथ्वीपर ईसाका अवतरण। लोगों की कल्पनाहै कि दमस्क नगर के पूरब की ओर के श्वेत बुर्ज के समीप जिस समय लोग कुस्तुन्तुनियां से लौटि आवेंगे वहां ईसा उतरेंगे मत इसलाम स्वीकार करेंगे, बिवाह करके सन्तान उत्पादन करेंगे मिथ्या ईसा को मार डालेंगे और ४० वर्ष व औरों के अनुसार २४ वर्ष पृथ्वी पर निवास करके मृत्यु को प्राप्त होंगे। उनके राज्य में संसार में शान्ति और बड़ी समृद्धि रहैगी द्वेष ईर्षा और डाह बिल्कुल उठ जायगी। सिंह और ऊंट, रीछ और भेड़ आपस में मेल से रहैंगे और बच्चे सर्पों के साथ बे खटके खेला करेंगे।

६ यहूदियों के साथ युद्ध। धर्म के निमित्त मुसल्मान यहूदियों का संहार करैंगे। केवल एक वृक्ष जो धारकद कहलाता है और यहूदियों का बृक्ष है उसके अतिरिक्त जिन बृक्ष और पत्थरों के नीचे यहूदी जाकर छिपेंगे उन्हें यही वृक्ष और पत्थर बताय बतायदेंगे।

७ याजूज और माजूज जिनको अंगरेज़ी में गोग और मेगोग कहते हैं और जिनके विषयक बहुत बातें कुरान तथा मुहम्मद की कहावतों में बर्णन की गई हैं इन जंगली क़ौमों की चढ़ाई वैतुल मुक़द्दस पर होगा रास्ते में इनकी हरावल सेना के अग्रभाग के लोग टाई बीरीयास झील का पानी पीयेंगे और वह सूख जायगी। वैतुल मुक़द्दसमें पहुँचकर ईसा और उनके अनुयायियों को यह लोग बहुत हैरान करैंगे अन्त में ईसा की प्रार्थना पर परमेश्वर उनका नाश करैगा और उनकी लहाशों से पृथ्वी आच्छादित हो जायगी। कुछ काल के पीछे परमेश्वर ईसा और उनके साथियों की प्रार्थना से पक्षियों द्वारा उनकी लहाशें हटवादेगा। मुसल्मान इनकेतीर कमान

और तरकशों को सात वर्ष लगातार जलावेंगे और अन्त में पृथ्वी के संशोधनके निमित्त और उसेउपजाऊ करनेकेलिये दैवी वृष्टि होगी।

८ धुआं से सम्पूर्ण पृथ्वी मंडल छाजायगा।

६ एक चन्द्रग्रहण होगा। मुहम्मद की भविष्य वाणी है कि क़यामत के अन्तिम घंटे से पूर्व तीन ग्रहण होंगे एक पूर्व में, एक पश्चिम में, और एक अरबमें।

१० अरब लोग अल्लात और अलअज्ज़ा तथा औरभी अपनी प्राचीन मूर्तियों का पूजन करने लगेंगे। जिस मनुष्य के हृदय में सरसों मात्र भी ईमान रहिजायगा उसके मरनेके पीछे महा दुष्ट लोग ही शेष बच रहेंगे। क्योंकि लोग कहते हैं कि परमेश्वर सिरिया डेमेसीना की ओर से एक शीतल सुगन्ध युक्त पवन चलावेंगे जिस के द्वारा क़ुरान और सब ईमानवालों की रूहें उड़ जायंगी। सौ वर्ष पर्य्यन्त घोर अज्ञान के अन्धकार में लोग पड़े रहेंगे।

११ दजलानदी के हटजाने से बहुत सोना चांदी मिलैगा और उससे बहुतों का नाश होगा।

१२ यूथोबिअन लोग कावा अर्थात् मक्का की मसजिद को विध्वंस करेंगे।

१३ पशु और जड़ पदार्थ बोलने लगेंगे।

१४ सूबा हिजाज़ में अथवा बाज़ों के कथन से यामान में आग का लगना।

१५ कहतान के वंश में से एक मनुष्य का प्रकट होना जो अपनी लाठी से सब आदमियों को खदेड़कर निकाल देगा।

१६ "मोहदी" अर्थात् अधिष्ठाता का उत्पन्न होना। इसके विषय में मुहम्मद ने भविष्य वाणी कही है कि संसार का अन्त तब तक नहीं आवैगा जब तक उन्हीं के वंश का एक मनुष्य अरबों पर राज्य न करैगा मुहम्मद के नामही का होगा और उसके बाप का

नाम भी उन्हीं के पिता का नाम होगा और वह संसार का धर्म से परिपूर्ण करदेगा। शिश्रा लोगों को बिश्वास है कि यह मनुष्य अब भो जीवित है और किसी गुप्त स्थान में रहता है जब तक कि उस के प्रकट होने का समय न आवैगा तब तक गुप्तही रहैगा उनके अनुमान से यह द्वादश इमामों में से अन्तिम इमाम मुहम्मद अबू उलकासिम जो स्वयं मुहम्मद का अवतार यह लोग मानते हैं और हसन अल असकरी ग्यारहवें इमाम के पुत्र हैं । उनका जन्म सन् २५५ हिजरी सरमन राय स्थान में हुआ था। इसी कहावत के अनुसार ईसाइयों की अनुमति प्रचलित हुई है कि मुसल्मान अपने पैग़म्बर के लौटिआने की प्रतीक्षा करते हैं।

१७ दशवें चिह्न में जो वर्णन हो चुका है ऐसी प्रचण्ड पवन चलैगी कि जिन लोगों के हृदय में लेशमात्र भी ईमान रहिजायगा उन सबकी आत्माओं को उड़ा ले जायगी। लोगोंके मताऽनुसार यह सब बृहत् चिह्न तो क़यामत के सूचक होंगे परन्तु उसका घंटा वा ठीक समय तौ भी निश्चय नहीं है। तात्कालिक उसके आ पहुँचने की सूचक पहिली ध्वनि तुरही की होगी जो तीनबार बजेगी। इस प्रथम ध्वनि को लोग "त्रास विसमय ध्वनि" कहते हैं जिसको श्रवण करते ही आकाश और पृथ्वीके सब जीव भयभीत हो जायँगे केवल वही बचेंगे जिन्हें परमेश्वर अपनी कृपा से रक्षा करैगा। इस प्रथम ध्वनि में अत्यद्भुत घटनायें उपस्थित होंगी। पृथ्वी डगमगा जायगी, सब मकानही नहीं वरन समग्र पर्वत धूल में मिल जायँगे आकाश पिघल जायगा, सूर्य अन्धकार युक्त होजायगा फिरिश्तों के मरजाने पर तारागणों का पतन होगा क्योंकि बाज़े लोगों का अनुमान है कि आकाश और पृथ्वी के बीच की "द्यावा भूमि" को यह फिरिश्तेही थांबे हुये हैं। समुद्र खलबलाकर शुष्क हो जायगा अथवा कुछ लोगों का मत है कि समुद्र का जल अग्नि स्वरूप हो

आयगा सूर्य, चन्द्रमा, और तारागण उसमें गिर पड़ेंगे । इस की भयानकता के बर्णन में कुरान में लिखा है कि दूध पिलाने वाली स्त्रियां अपने बच्चों की रक्षा करना भी छोड़ देंगी । और उटनियोंको भी जो दश मास की गर्भवती होंगी लोग परित्याग करदेंगे ।

कुरान में पशुओं के जमावका जो बर्णनहै वह भी सब एकत्रित हो जायंगे इसके बिषय में बाजे लोगों को संदेह भी हैपरन्तु जिनका बिश्वास है कि यह पशुओं का जमाव क़यामत से पूर्व में होगा उन के अनुमान से सब प्रकार के पशु अपनी २ स्वभाविक क्रूरता और भीरुता को भूल २ करके एक स्थान में तुरही के अचानक शब्द से भयभीत भागकर इकट्ठे होंगे ।

मुसल्मान कहते हैं कि पहिली तुरही के पीछे दूसरी तुरही बजेगी जिसका नाम " परीक्षा की ध्वनि " रक्खा है उसके बजतेही आकाश और पृथ्वी के सब जीव जन्तु नष्ट हो जायँगे केवल वही बचेंगे जिन्हें परमेश्वर बचाना उचित समझैगा । और यह सब एक क्षणमात्र में ही नष्ट हो जायँगे । केवल परमेश्वर, स्वर्ग, नरक और उनके निवासी और परमेश्वर का तेजस्वरूप सिंहासन रहजायगा । सबसे पीछे फिरिश्ता मौत भी मृत्यु को प्राप्त होगा ।

इसके ४० वर्ष उपरान्त क़यामत की तुरही को इसरफील जिब्राईल और माइकेल के संग पुनर्जीवित होकर बैतुल मुकद्दस के मन्दिर के चट्टान पर खड़े होकर परमेश्वर की आज्ञानुसार बजावेगा, उसकी ध्वनि से सम्पूर्ण सूखी, सड़ी, गली हड्डियां तथा बिखरे हुये शरीरों के अङ्ग और बाल भी न्याय के लिये एकत्रित और उपस्थित हो जायँगे । तुरही को अपने मुख में लगाकर परमेश्वर की आज्ञाऽनुसार इसरफील सब भागों से जीवों को बुलाकर अपनी तुरही के भीतर जब जमाकर लेगा तब परमेश्वर की आज्ञा अन्तिम ध्वनि बजाने की होगी जिसपर सब जीवतुरहीसे निकलकर आकाश

और पृथ्वी के बीच की सम्पूर्ण ठौर का मधु मक्खियों की तरह उड़ कर पूर्ण करदेंगे और तब अपने २ शरीरों में जो पृथ्वी में से निकलेंगे प्रवेश करेंगे। मुहम्मद की कहावत के अनुसार सब से प्रथम स्वयं मुहम्मदही का शरीर चैतन्य होगा। इस पुनरुत्थान के लिये ४० वर्ष की लगातार वृष्टि से जिसका वर्णन पहिले हो चुका है पृथ्वी प्रस्तुत हो रहैगी यह वर्षा मनुष्य रूपी बीज कीसी होगी और यह पीयूष सदृश जल इस वृष्टि के निमित्त परमेश्वर के सिंहासन के नीचे से आवेगा जिसकी सत्ता से लाशें कब्रों में से जैसे कि माता के गर्भ से निकली थीं उसी तरह जैसे साधारण वृष्टि से अन्नादिक उत्पन्न होजाते हैं निकल खड़ी होंगी और पूर्ण अङ्गवान् होजाने पर उनमें श्वास फूकी जायगी जिसके उपरान्त अपनी२ क़ब्रोंमें निद्रा की अवस्था में रहैंगी। फिर जब अन्तिम ध्वनि तुरही की बजेगी तब चैतन्य जीवित होकर उठेंगी। क़यामत के दिनका प्रमाण कुरान के एक स्थल में एक हजार वर्ष का लिखा है और दूसरे स्थल में पचास सहस्र वर्ष का इस अन्तर के विषय में मुसल्मान ग्रंथकार यह समाधान करते हैं कि परमेश्वर ने इन वाक्यों में काल का परिणाम किसी को ज्ञात नहीं किया कुछ लोग कहते हैं कि इन वाक्यों को लक्षण अलंकार मानना चाहिये न कि अक्षरार्थ केवल उसदिन की भयानकता के प्रकाश निमित्त ऐसा लिखा गया है। दुःख रूपी घटनाओं को अरब वाले चिरकालीन और सुख सम्पति को अल्प स्थायी रूपमें वर्णन करते हैं। कुछ लोग इस प्रकार इसका निर्धार करते हैं कि परमेश्वर ठीक अवधि करदेता तो मनुष्य उसको सहस्रों वर्षों में भी पार न कर सके इसलिये उसने इस भेदको स्पष्ट नहीं खोला है। अब इस क़यामत के प्रकार 'विधि' अभिप्राय आदिक के विषय में मुसल्मानों का प्रचलित सर्व साधारण विश्वास यह है कि उस दिन फिरिश्ते, जिन्न, मनुष्य, और पशु सबही जीवों का

पुनरुत्थान होगा परन्तु कुरान का वाक्य जो इसका प्रमाण है उसका अर्थ पशुओं के विषय में बाज़ लोग भिन्न रीति से करते हैं। जिन आत्माओं के भाग्य में नित्य आनन्द का भोग होगा वह सब प्रतिष्ठा और कुशलपूर्वक उठेंगे और जिनको आगे चलकर दुखभोगना है वह अपमान और खेद युक्त उठाए जायंगे। मनुष्यों के लिये लोग कहते हैं कि जैसे माता के गर्भ से नंगे और बिना सुन्नत के निकले थे वैसेही सब अङ्गों से पूर्ण उठाये जायंगे। मुहम्मद ने इस प्रकार मनुष्यों के नंगे उठने का अपनी स्त्री अयेशा से जब कहा तो उसने बहुत घृणा की कि स्त्री और पुरुषों का एकसंग नग्न अवस्था में परस्पर होना बहुत लज्जा का हेतु होगा। इसके उत्तर में पैग़म्बर ने उसे समझाया था कि वह दिन इतना भयानक होगा कि मनुष्यों को उस समय लज्जा आदिक का बिचार चित्त में नहीं समासक्ता। बाज़ लोग पैग़म्बर का कथन अन्य प्रकार से वर्णन करते हैं जिसके अनुसार जैसे वस्त्र पहिने हुये कब्र में गाड़े गये थे उसी परिधान (पोशाक) युक्त क़यामत के दिन उठैंगे। इसके सम्बन्ध में मनुष्यों का यह विचारहै कि कब्रमें गाड़ी हुई पोशाक से उठना सर्वथा असम्भव है हां जैसी अवस्था जिस मनुष्यके ज्ञान, अज्ञान, आस्तिकता, कुफ्र, पुण्य, पाप की है उसी के अनुसार कब्र से प्रत्येक मनुष्य उठैगा यह लिखदेते तो मान लिया जाता। मुहम्मदकी शिक्षा इस बिषयमें दूसरी कहावतके अनुसार लोग यह बताते हैं। कि क़यामत के दिन मनुष्य तीन श्रेणी के रहैंगे। एक पैदल, दूसरे सवार, तीसरे धरती में नीचे को मुख किये हुये घसिटते चलैंगे। जिन लोगों के पुण्य अल्पहैं वह पैदल रहैंगे जो परमेश्वरके अधिक लाड़िले हैं वह सवार होंगे और तीसरे दर्जेके पापी काफ़िर होंगे जो अंधे, गूंगे, बहरे, होकर धरती में नीचे को मुख करेहुये उठाए जायंगे। पापियों के दश प्रकार के बिभागों में मुहम्मद की कहावतके अनुसार अङ्क किये जायँगे।

क़यामत में पापियों का स्वरूप।

१ लंगूरों के आकार के वह होंगे जो जैन डिसिज्म मत के अवलम्बी थे।

२ सूकर रूप के वह होंगे जो मनुष्य अति लोभी थे और सर्व साधारण पर अत्याचार करके जिन्होंने धन इकट्ठा किया था।

३ उनके शिर नीचे को कर दिये जायँगे और पैर अमेंठ दिये जायँगे जिनकी ब्याज खाने की वृत्ति थी।

४ वह अन्धे होकर घूमेंगे जो अन्यायी हाकिम न्यायाध्यक्ष थे।

५ वह बहिरे, गूंगे, अंधे, विचार शून्य होंगे जिन्होंने अपनी करणी का अभिमान किया था।

६ जिह्वा छाती तक लटकैगी और उसे वह चबाया करेंगे और रुधिर उनके मुख से थूक की तरह निकला करैगा जिसे देखकर सब घृणा करेंगे यह दशा उन पण्डित विद्वानों की होगी जो कहते कुछ थे और करते कुछ थे।

७ उनके हाथ और कटे होंगे जिन लोगों ने अपने पड़ोसियों को सताया था।

८ वह लोग ताल वृक्ष के पींड़ अथवा काठ के स्तम्भ रूप होंगे जिन लोगों ने औरों पर मिथ्या अपवाद लगाया और जो झूंठे भेदिया थे।

९ उनके शरीरों से सड़ी हुई लाश से भी अधिक दुर्गन्ध निकलैगी जिन लोगों ने विषय भोग में जीवन बिताकर परमेश्वर के अर्पण अपने धनका उचित भाग नहीं किया।

१० उन लोगों को राल से पोते हुये वस्त्र पहिनाये जायंगे जो मिथ्याभिमानी अहंकारी और गर्वीले मनुष्य थे। किस स्थान में क़यामत के दिन सब इकट्ठे होंगे इस विषय में क़ुरान और मुहम्मद

ने पृथ्वीपर होना निश्चय किया है परन्तु किस भाग में होगी इसके निर्णय में एक मत नहीं है। कोई कहते हैं मुहम्मद ने शामदेश इस के लिये बताया है। कोई कहते हैं वह स्थान समधरातल और श्वेत होगा जहां न कोई निवासी न इमारत का चिह्न होगा। अलगज़ाली का अनुमान है कि दूसरी पृथ्वी होगी जो चांदी की बनी हुई है। बाज़लोग यह भी कहते हैं कि पृथ्वी दूसरीही होगी जिसका नाम मात्र हमारी पृथ्वी के सदृश होगा परन्तु और कोई बात इसके सदृश उस में न होगी। सम्भव यह है कि इसको बाईबिल के नवीन स्वर्ग और नवीन पृथ्वी का वर्णन सुनकर कुरान में यह वाक्य लिखा गया है कि " जिसदिन पृथ्वी परिवर्त्तन होकर दूसरी पृथ्वी होजायगी "।

अभिप्राय क़यामत का यह बताते हैं कि जो लोग उठेंगे अपने कर्मों का लेखा देकर उसके अनुसार फल के भागी होंगे। केवल मनुष्यही नहीं किन्तु जिन्न और पशु भी उस दिन न्याय के अन्तर्गत होंगे। शास्त्र हीन पशु सींग वालों पर अपना बदला ले सकेंगे और सताये हुओं को संतोष पूरे तौर से करदिया जायगा।

मनुष्यों का न्याय शीघ्रही नहीं हो जायगा। फ़िरिश्ते सब मनुष्यों को अपने अपने स्थानों में क्रमाऽनुसार खड़ा रक्खेंगे और कोई कहते हैं ४० वर्ष कोई ७० वर्ष, ३०० वर्ष, कोई ५००००वर्ष की अवधि इस न्याय की बताते हैं और पैग़म्बर का प्रमाण भी इस विषय में देते हैं। इस सम्पूर्ण काल पर्यन्त आकाश की ओर मुख किये हुये ही सब लोग खड़े रहेंगे परन्तु स्वर्ग से कोई समाचार वा कोई आज्ञा नहीं प्राप्त होगी नाना प्रकार की वेदना भोगते सब लोग पुण्यात्मा और पापात्मा खड़ेही रहेंगे। इतना अन्तर होगा कि जिन अङ्गों को नमाज़ पढ़ने के पूर्व धोया करते थे वह अङ्ग पुण्यात्माओं के चमकेंगे और उनको कष्ट उतनेही काल तक होगा जितना काल नमाज़ के पढ़ने में लगता था परन्तु पापियों के मुख काले कर

किये जायंगे और शोक और कुरूपता के चिह्नों से अङ्कित होंगे और सबसे अधिक क्लेश उनको पसीने से होगा जो इतना निकलैगा कि मुखतक उससे बन्द हो जायंगे पापों की न्यूनाधिकता के अनुसार किसी को पसीना एड़ियों तक, किसी को घुटनोंतक और किसी के कमर, मुख और कानों तक बहैगा। पसीना मनुष्यों की भीड़ और परस्पर धँस से पिचने के कारण उत्पन्न होगा क्यों कि सूर्य भी और अतिही समीप उतरि आवेगा उसकी गर्मी से भी लोगों के कपाल (भेजे) उबलने लगेंगे और पसीने से तरबतर हो जायंगे। इसके निवारण के लिये परमेश्वर के सिंहासन की छाया धर्मात्माओं के ऊपर तो हो जायगी परन्तु पापियों के दुःख का तो ठिकाना नहीं रहैगा। भूख, प्यास, और दम घोंटने वाली वायु से व्याकुल होकर पापी चिल्लायेंगे कि परमेश्वर हमें नरक की अग्नि में डाल परन्तु इस कष्ट से मुक्तकर। यह कहानी मुसल्मानों ने यहूदियों से नक़ल की है जिनके यहां लिखा है कि पापियों के दण्ड के लिये सूर्य जिस कोष में स्थित है अन्तिम दिवस उस कोष से बाहर निकाल लिया जावेगा जिससे ऐसा न हो कि उसको अत्यन्त उष्णता के कारण सबही पदार्थों को भस्म करडालें। उठे हुये लोग निर्मित अवधि पर्यन्त प्रतीक्षा कर चुकैंगे तब अन्त में परमेश्वर न्याय के लिये प्रकट होगा। आदम, नूह, इब्राहीम, ईसा यह सब अपनी अपनी आत्मा का उद्धार परमेश्वर से मागेंगे औरोंके लिये मध्यस्थ बनने से यह लोग इन्कार करदेंगे तब मुहम्मद परार्थवादी (बिचमानी) का पद स्वीकार करेंगे। इस असाधारण अवसर पर परमेश्वर फिरिश्तों के सहित बादलों में प्रकट होगा और जिन ग्रन्थों में प्रति मनुष्य के कर्म रक्षक फिरिश्तों ने लिखे हैं उन्हें दिखलावेगा और जो जो पैग़म्बर जिन जिन लोगों के उपदेश को भेजे गये थे उनकी साक्षी (गवाही) उन उन लोगों के प्रति लेगा। तब प्रत्येक

मनुष्य की जांच अपनी अपनी वाणी और शरीर द्वारा किये हुए कर्मों की परीक्षा के अर्थ की जायगी इस निमित्त कि परमेश्वर को अपनी सर्वज्ञता से स्वयं सबका वृत्तांत तो विदित ही है परन्तु सब के साम्हने प्रत्येक मनुष्य अपने कर्मों को स्वीकार करके परमेश्वर के न्याय को अंगीकार करै। मुहम्मद के कथन के अनुसार यह बातें पूछी जायँगी अपना समय कैसे व्यतीत किया, धन किस प्रकार उपार्जन किया और किस काम में लगाया, शरीरों को किस प्रकार के उद्योगों में लगाया, ज्ञान और विद्या को किस काम में प्रयोग किया। कहते हैं कि मुहम्मद ने कहा है कि ७०००० उनके अनुयायी स्वर्ग में बिना परीक्षाही के प्रवेश करेंगे, यह ऊपर के वर्णन से विरुद्ध है। जो प्रश्न लोगों से किये जायँगे उनके उत्तर में अपने २ बचाव के लिये सब कोई औरों पर दोष डालने का प्रयत्न करेगा यहांतक कि आत्मा और शरीरमें झगड़ा उत्पन्न होगा। आत्मा परमेश्वर से कहैगा कि "शरीर मुझे तूने दिया था मेरे तो न हाथ पैर न आंख न बुद्धि शरीर में प्रवेश होने से पूर्व थी इस कारण इस शरीर को सदैव के लिये दण्ड दे मुझे मुक्तकर"। शरीर कहैगा "हे स्वामी मुझे तो काष्ठ की तरह जड़वत् निर्माण तूने किया था न मेरे हाथ था जिस से कुछ धरता न पैर जिससे चलता, जब तक कि यह आत्मा मेरे में ज्योतिःस्वरूप प्रवेश हुई जिससे मेरी जिह्वा बोलने लगी, नेत्र देखने लगा, पैर चलने लगा अतः इस जीव को सदैव के लिये दण्ड दे मुझे मुक्तकर"। परन्तु परमेश्वर उन दोनों से अंधे लंगड़े का दृष्टान्त कहैगा। यह क़िस्सा भी मुसलमानों ने यहूदियों से नकल कियाहै। किसी राजा के यहां मनभावना बाग़ था जिस में पक्के फल लगेथे एक अन्धे और एक लूले दो आदमियों को रखवारी के लिये नियत किया। लंगड़े ने फलों को देखकर अन्धे से कहा कि मुझे अपने कन्धे पर सवार करले और उसके कन्धे पर

चढ़कर फलों को तोड़ कर आपस में बांट लिया । जब राजा ने आकर पूछा तो दोनों अपनी अपनी क्षमा कराने के लिये छल करने लगे एकने कहा कि मैं देखही नहीं सक्ता दूसरे ने कहा मैं वृक्षों तक पहुंच नहीं सक्ता तब राजाने अन्धे के ऊपर लंगड़े को रखवा कर दोनों को दण्ड दिया। इसी प्रकार परमेश्वर भी शरीर और आत्मा दोनों ही को दण्ड देगा। उसदिन इसप्रकार के छल युक्ती ले काम न देंगे इसलिये अपने पापोंसे मुन्किर होनाव्यर्थहै। क्या मनुष्य, क्या फिरिश्ते और क्या अपने शरीर के अङ्ग तथा स्वयं पृथ्वी कर्मों की साक्षी होगी। यद्यपि मुसल्मान् इस न्याय के लिये इतनी बड़ी अवधि नियत करते हैं तथापि यह भी कहते हैं कि मुहम्मद् का कथन है कि यह न्याय भेड़ के दोहन काल में ही समाप्त हो जायगा अथवा जितने अन्तर में दो बार ऊंटनी दुही जाती है। क़ुरान का वाक्य है कि " लेखा (क़यामत के दिन) परमेश्वर शीघ्र लेलेगा " जिसका अर्थ बाज़ लोग आधा दिन औरबाजे। पलकमात्र से भी कम लगाते हैं। इस लेखे के समय प्रति मनुष्य को अपने २ कर्मों की लेखा वही देदीजायगी धर्मात्माओं को उनके दाहिने हाथमें और पापियों को बायें हाथ में। धर्मात्मा तो उसे प्रसन्नता पूर्वक पढ़ेंगे और पढ़कर संतुष्ट होंगे। पापी उसे लेने से संकुचित होंगे वलात्कार उनके बायें हाथमें दीजायगी जो उनकी पीठके पीछे बँधा रहैगा उनके दाहिने हाथ उनकी गर्दनोंसे बँधेरहैंगे। न्याय की यथार्थताके वर्णनमें कहते हैं कि तुला जिसमें क़यामतके दिन सब पदार्थ तोले जायंगे उसे जिब्रील थामेंगे वह इतनी बड़ी होगी कि दोनों पलड़ों में पृथ्वी आकाश दोनों समाइ सकैंगे। एक पला स्वर्ग प और दूसरा नरक पर लटकैगा। कुछ लोग तो इसे अलंकार रूपक ही मानते हैं परन्तु बहुतेरे इसका अक्षरार्थ लेकर कहते हैं कि कर्म तो पदार्थ न होने के कारण तुल नहीं सक्के पाप और पुण्यों की

किताबें पलड़ों में रक्खी जायँगी जिनके पुण्य का पला भारी निक- लैगा वह मुक्त होंगे जिनके पाप का पला भारी निकलेगा सो दंड भोगेंगे। इसबात का दोष लगानेका अवसर भी किसी को नहीं मि- लैगा कि परमेश्वर किसी पुण्य कर्म का फल बिना दिये रहता है क्योंकि पापियों को पुण्य कर्म का फल इस लोक में मिल जाता है इसलिये परलोकमें उसकी आशा नहीं करसक्के। यहूदियोंके प्राचीन ग्रन्थकारों ने उन किताबों का वर्णन किया है जिनमें मनुष्योंके कर्म अङ्कित रहते हैं और जो क़यामतके दिन दिखलाई जायंगी और उस तुला को भी लिखा है जिसमें वह तुलैंगी। बाईबिलमें इनदोनों बात की प्रथम भावना दीहुई है। परन्तु मुहम्मदका वर्णन फारिसके मेजाई से अधिक मिलता है। उनका वर्णन है कि दो फिरिश्ते मिहर और सुरूश पुलपर खड़े होकर प्रत्येक मनुष्य को ज्योंहो वह उसपर पार करने को आवैगा जांचते जायँगे। एकतो परमेश्वर का दिया स्वरूप प्रतिनिधि अपने हाथमें तुला लिये रहता है उसमें प्रति मनुष्यके कर्म तोलकर परमेश्वर के निकट उसकी सूचना देते हैं जिनके पुण्य कर्म एक बालभर भी भारी होंगे वे विना रोक टोक स्वर्ग में चले जायँगे और दूसरा परमेश्वर का न्याय स्वरूप प्रतिनिधि धर्मराज है वह उन लोगोंको पुलपरसे नरकमें पटकदेगा जिनका पापका पला भारीहोगा॥

इस जांच के होचुकने पर जब कर्म सबके तुला में तुल जायँगे तब आपस में एक दूसरे के साथ बदला दिलाया जायगा। अब उस समय कोई रीति ऐसी तो होही नहीं सकी जिससे जैसा किसी ने किया है तद्रूपही उसके साथ बदले में दिया जासके इसलिये जिस कसी ने दूसरे को सताया है उसके पुण्य में से एक अंश उस कर्म के तुल्य लेकर सताये हुए को दिया जाता है। फिरिश्ते जिनके द्वारा यह कार्य होता है जब परमेश्वरसे कहते हैं कि स्वामी हमने सबको सबका यथार्थ अंश देदिया इस मनुष्य का पुण्य रूप अंश चोटी भर

अधिक है तो परमेश्वर आज्ञा देकर उस अंशको दूना करके स्वर्ग में उसे प्रवेश करादेता है। यदि किसी के पुण्य का अंश सम्पूर्ण चुक जाय और पापही शेष रहिजाय और ऐसेभी लोग रहिजांय जिनको उससे बदला पावना है तो उसके पापका अंश लेकर जिसने सताया है उसके पापोंमें मिला दियाजाता है और उसके बदलेमें वह सताये हुये के पाप का फल नरक में जाकर स्वयं भोगता है यह प्रकार तो मनुष्यों के साथ परमेश्वरी न्यायके बर्त्ताव का है॥

पशुओं का आपस में बदला लेने का वर्णनकरही चुके हैं। जब वह अपना २ बदला ले चुकेंगे तब परमेश्वर की आज्ञा से सब पशु धूल में परिवर्त्तन होजाते हैं। इसको देखकर पापी जिनको अधिक कष्टकारी घोर यातना भोगनी है पुकारने लगते हैं कि हे परमेश्वर हम भी धूल होजाते। जिन्नों के लिये बहुतेरे मुसल्मान् कहते हैं कि उन में से नच्याई माननेवाले जिन्न तो पशुओं की तरह बर्त्ते जायँगे और धूल में परिवर्त्तन से उनको अन्य कोई फल अधिक नहीं मिलैगा। इसमें देगम्बर का प्रमाण भी देते हैं परन्तु मनुष्यों की तरह जिन्न भी ईमानवाले आस्तिक होते हैं। इसलिये उनको भी बाज़े लोगों की अनुमति है कि यद्यपि स्वर्ग के भीतर नहीं जाने पावेंगे परन्तु स्वर्ग की सीमा के समीप स्थान मिलैगा। जहां यथेष्ठ सुख का अनुभव होजायगा। परन्तु नास्तिक जिन्न के निमित्त सर्व सम्मति है कि स-दैव के लिये दण्ड भोगेंगे और काफ़िर मनुष्यों के सदृश नरक में डाले जायँगे। नास्तिक जिन्नों की गणना में शैतान और उसके संगी भी अन्तर्गत हैं। जांच परीक्षा समाप्त होजानेपर (जमाइत) सभा भंग होजायगी। उसके उपरान्त स्वर्गीय दाहिने हाथ के मार्ग से स्वर्ग में प्रवेश करेंगे। नारकीय प्राणी बायें हाथ के मार्ग से नर्क में जायँगे एक पुल जिसका नाम अरबी में "अल सिरात" है नरक के ऊपर बाल से भी सूक्ष्मतर और खड्ग धारा से भी अधिक तीव्र बनाहुआ

है उसपर होकर दोनों प्रकारके जीवों को आना पड़ैगा इस।र खड़ा होना ही असम्भव समझकर मुतज़ैलाईट लोग इसवाक्य को कल्पित कहानी मात्र मानकर तिरस्कार करते हैं परन्तु धर्म परायण मुसल्मानों का उसकी सत्यता पर अचल विश्वास है और मुहम्मद का कथन मानकर उसे कदापि मिथ्या नहीं समझते बल्कि उसे और भी कठिनता बढ़ाने के निमित्त उसे मार्ग के कंटकों से दोनों ओर घिरा हुआ बताते हैं। इसपर होकर पुण्यात्मा तो तड़ित वा पवन की तरह विना खटका अतिशीघ्र और सुख पूर्वक पार होजायँगे। मुहम्मद और उनके सच्चे अनुयायी मार्ग दर्शक होकर आगे २ रहेंगे। परन्तु पापी प्रकाशक दीप के बुझजाने से अन्धकार में इस संकुचित चिकने कांटों में उलझकर सीधे नरक में जो नीचे मुख बाए हुए स्थित है पैर फिसल २ कर गिर पड़ैंगे। इस घटना को भी मुहम्मद ने मेजाई लोगों से नकल की है जिनका मत है कि "पुलचिनावद" दूसरे लोक जाने में सब मनुष्यों को क़यामत के दिन पार करना पड़ैगा उसके बीच में फ़िरिश्ते खड़े रहैंगे और प्रत्येक मनुष्य की करणी का लेखा लेकर उसके कर्मों की तुला उपरोक्त प्रकारसे करैंगे। यहूदी भी पुलको तो नरक के ऊपर धागे की बराबर चौड़ा लिखते हैं परन्तु उसपर मूर्त्ति पूजकों कोही नरकमें पतन करनेके लिये पार करना पड़ैगा सब को नहीं ऐसा लिखते हैं॥

पापियोंके लिये नरकमें तर ऊपर सातखण्ड हैं। पहिला खण्ड जहन्नम है जिसमें एक परमेश्वर को मानने वाले मुसल्मानों में जो दुष्ट हैं रहैंगे परन्तु अपने २ कर्माऽनुसार दण्ड भोगकर वहां से मुक्त कर दिये जायँगे। दूसरा "लदुता" नामक यहूदियों के लिये निरूपण किया है। तीसरा "अलहुतामा" ईसाइयों के लिये है। चौथा "अलसाईर" सेविअन्स के लिये। पांचवां "सक़र" मेजिअन्सके लिये; छठवां अलजहीम मूर्तिपूजकोंके लिये ठहराया है और सातवां

"अलहाबियात" जो सबसे नीचे और सबसे घोरतम है उसमें पापी लोग पड़ेंगे जो बाहर किसी मतको स्वीकार करतेथे परन्तु अन्तष्करण में किसी मतको नहीं मानते थे। यानी मुनाफिक थे प्रति खण्ड पर उनईस २ फिरिश्तों का पहिरा रहैगा जिनके साम्हने नारकीय जीव परमेश्वर की न्याय शीलता को सराहेंगे और उनसे निवेदन करेंगे कि परमेश्वर से प्रार्थना करके हमारे क्लेशों को अपनी विद्यमानी से कुछ कम करवा देउ अथवा हमें (नेस्तनाबूद कराके) सम्पूर्ण नाश द्वारा ही मुक्त करादेउ ॥

नरक का वर्णन।

मुहम्मद ने कुरान तथा कहावतों द्वारा नरक की वेदना का वर्णन बहुत यथार्थता पूर्वक करने की चेष्टा की है। वहां गरमी सर्दी दोनों की प्रचण्डतासे प्राणियों को क्लेश भोगना पड़ैगा नरकके जिस खण्ड में जो प्राणी रहैगा और जैसे पाप कर्म उसके होंगे तद्नुसार वेदना भिन्न २ प्रकार की दीजायँगी। अत्यन्त लघु वेदनावाले के भी पैरों में अग्नि के उपानह (जूते) जड़े रहैंगे जिससे उसका (मास्तिष्क) भेजा कपाल कड़ाह (देग) की तरह उबलैगा। उससमय इन प्राणियों की दशा न जीवित की होगी और न मृतक की तिसपर भी इस असह्य निराश का क्लेश होगा कि कभी भी उससे मुक्त न होंगे। इस यातना का भोग नास्तिक काफिरों के लिये तो सदैव का होगा परन्तु मुसल्मान् अपने २ पाप कर्म का भोग भोग कर मुक्तकर दिये जायँगे। इस मतसे विरुद्ध मानना मुसल्मानों के लिये कुफ् होता है क्योंकि मुसल्मानों को अचल विश्वास इस सिद्धान्त पर है कि नास्तिक और मूर्ति पूजक ही सदैव के लिये नरक भोग करैंगे। मुसल्मान् अर्थात् जो परमेश्वर की ऐक्यताके मानने वाले मनुष्य जन्म पाकर हुये हैं उनको सदैव का नरक वास

नहीं होगा। मुहम्मद की कहावतके अनुसार जिन लोगोंके पाप कर्म पुण्य कर्मों से अधिक निकलेंगे उनके चर्म झुलसाकर और जलाकर वह काले कर दिये जायंगे तब पश्चात् स्वर्ग के अधिकारी होंगे। स्वर्ग में जाने पर वहां के जीव इनको नरकवासी कहि कर घृणा करेंगे। तब उनकी प्रार्थना से परमेश्वर उनको "नारकीय" का नाम छुटवादेगा। बाज़ लोग कहते हैं कि मुहम्मद का उपदेश यहथा कि नरक में इन प्राणियों को मूर्च्छा अथवा गहिरी निद्रावस्था रहैगी जिससे इन को वेदना का अनुभव कम होगा और स्वर्ग में पहुँचने से पूर्व येह अमृतधारा जल से धोये जायँगे जिससे प्राण संज्ञा इन की हो जायगी। बाज़े कहते हैं कि उन में प्राण नरक से छूटने के कुछ पहिलेही आजायँगे जिस से यातना का कुछ अनुभव भी बना रहै। नरक में रहने का काल ९०० वर्ष से कम नहीं होगा और न ७००० वर्ष से अधिक। जिन अङ्गों को नमाज के समय झुका कर भूमि स्पर्श करते थे उन अङ्गों पर प्रणिपात अथवा क्लेश के चिह्न करदिये जायँगे जिससे अग्नि का प्रभाव कुछ भी न हो सकैगा और मुहम्मद तथा अन्य पुण्यात्माओं की परार्थवादता (बिचमानी) से परमेश्वर दया करके उनको क्लेश से मुक्त कर देगा और तब जीवित होकर स्वर्ग में प्रवेश करेंगे। नरक की अग्नि तथा ज्वाला और धूमसे जो मल और कज्जल इनके शरीर पर छा जायगा वह स्वर्ग के प्राणदायक किसी नदी में स्नान करने से धुल जायगा जिस से मुक्त से अधिक स्वच्छ हो जायँगे। यह वृत्तान्त कुछ तो यहूदियों की ओर कुछ मेजियन्स की गाथाओं से लिया गया है। दोनों के सिद्धान्त में सात पृथक् खण्ड नरकके हैं अन्तर और बातोंमें यह है कि यहूदियों के अनुसार प्रति खंड पर एक एक फिरिश्ता रक्षक रहता है जो अपने २ खण्ड के पापियों की ओर से जब वह परमेश्वर की न्याय शीलता निष्कपट होकर स्वीकार करलेंगे परमेश्वर से उनपर

कृपा का प्रार्थी होगा। दण्ड भी पापों के अनुसार न्यूनाधिक होते हैं घोर असह्य गर्मी सर्दी द्वारा दंड मिलते हैं मुख काले हो जाते हैं उनके मतावलम्बी भी अपने २ पापों के अनुसार दंड भागी नरक में होंगे क्योंकि ऐसी करनी किसी की भी सम्भव नहीं कि दंड से सम्पूर्ण मुक्त हो सकै परन्तु इतना भेद उन्होंने माना है कि उनके मत के लोगों का छुटकारा शीघ्रही पापों का भोग करके उनके पितामह इब्राहीम अथवा किसी अन्य पैगम्बर की परार्थ मध्यस्थता से हो जायगा। मेजिअन्स के मताऽनुसार एकही वानाद यज़ाद नामक फिरिश्ता नरक के सातों खण्डों का अध्यक्ष है जो प्रत्येक प्राणी को उसके पापों के सदृश दंड देता है और शैतान की क्रूरता और उपद्रव से भी उनकी रक्षा करता है क्योंकि शैतानकी चलै तो प्राणियों के पापों के योग्य दंड से अधिक मनमाना क्लेश देता रहै। इस मतके लोग घोर सर्दी से क्लेश पाना नरक में एक प्रकारका दंड मानते हैं परन्तु अग्निको परमेश्वर का स्वरूप मानते हैं। इससे नरक में इसके द्वारा दंड नहीं मानते हैं और २ प्रकारों के दंड वर्णन किये हैं। असह्य दुर्गन्ध, सर्प और अन्य पशुओं के डंक और दांत से काटना, शैतान उनके मांस को काटता और चीड़ता है अत्यन्त क्षुधा, पिपासा तथा ऐसेही क्लेशों का वर्णन है॥

स्वर्ग और नरकके बीच दीवालका वर्णन।

स्वर्ग और नरक के विभागार्थ मुसलमानों ने बाईबिल में जो विभाजक बृहत् खाड़ी लिखी है उसकी नकल करके एक दीवाल की कल्पना की है उसका नाम "अलउर्फ़"। (बहु बचनमें अल अराफ़) भेद करने के अर्थ में रक्खा है बाज़ भाष्यकार इस नामका मूल यह बताते हैं। कि लोग इसपर खड़े होकर पापी और पुण्यात्माओं को अंकित चिह्नों से पहिचान लेतेहैं। कुछ लोग यह कहते हैं कि ऊँचाई

के कारण दीवाल का यह नाम रक्खा गया है। मुसल्मान् ग्रंथकारों का मत भेद इस बात में है कि इस दीवाल पर किन लोगों को खड़े होने का अधिकार होगा। कुछ लोग तो इसे एक कारागारमानकर आचार्य पैगम्बर, तथा शहीदों और अन्य धर्मात्माओं और मनुष्य रूप फिरिश्तों के लिये बताते है। औरों का यह मत है कि इस पर वह लोग रहते हैं जिनके पुण्य पाप समाने हैं जिस कारण से न स्वर्ग में सुखभोग सकते हैं और न नरक में दुःख भोगने को जा सकते हैं परन्तु क़यामत के दिन कोई पुण्यकर्म ऐसा कर लेने पर जिससे उनके पुण्य का पलड़ा भारी हो जायगा तो स्वर्ग में प्रवेश के अधिकारी हो जायँगे। बाज़े इसको मध्यस्थल उन लोगों के लिये मानते हैं जो युद्ध में माता पिता की आज्ञा विना जाकर धर्मार्थ प्राण त्यागते हैं क्योंकि स्वर्ग में तो आज्ञा उलंघन के दोष से और नरक में शहीद होने के पुण्य के कारण पतन होने के अधिकारी नहीं होते। चौड़ाई इस दीवाल की बहुत अधिक नहीं हो सक्ती क्योंकि इसपर खड़े होनेवाले जनभी स्वर्ग और नरक दोनों स्थानों के निवासियों से वार्तालाप करेंगे और स्वर्गीय और नारकीय जीवभी परस्पर बात चीत कर सकेंगे। यदि इस वृत्तान्त को बाईबिल से इन्हों ने स्पष्ट रूप से न भी नकल किया हो तो यहूदियों ने इसकी नक़ल करके जो एक (पतली) सूक्ष्म दीवाल स्वर्ग और नरक के बीच में मानी है उनसे मुहम्मद ने निस्संदेह इसको लिया है। इन सब कठिनाइयों को पार करके धर्मात्मा जीव तीव्रधार पुलको पार करने के उपरान्त स्वर्ग में प्रवेश होने से पहिले मुहम्मद के तड़ाग का जल जिसका वर्गरूप एक मास की यात्रा के बिस्तार में है पीकर बिश्रान्त और सुखी हो जायँगे। इस तड़ागमें जल जो अल कौथर नामी स्वर्ग की एक नदी से दो मोरिओं द्वारा आता है, दूध वा चांदी से भी अधिक सफ़ेद और कस्तूरी से भी अधिक सुगंध

युक्त है जिसके चारों ओर असंख्य आकाश के तारागणों की तरह प्याले रक्खे हैं उसे पीकर सदैव के लिये उनकी पिपासा निवृत हो जायगी यह आगामी समीपवर्ती स्वर्गीय सुखका प्रथम अनुभव धर्मात्माओं को होगा ॥

स्वर्ग का वर्णन ।

स्वर्ग का वर्णन तो कुरान में बहुधा हुआ है परन्तु इस बात का निर्णय मुसलमानों में अबतक नहीं हुआ कि स्वर्ग निर्माण हो चुका है अथवा आगे रचा जायगा । मुतज़ैलाइटस और कुछ अन्य समाजों का तो यह मत है कि सृष्टि में रचा हुआ स्वर्ग अभीतक नहीं है और जिस स्वर्ग से आदम बहिष्कृत हुए थे (निकालेगये थे) उससे भिन्न धर्मात्माओं के निवासार्थ स्वर्ग होगा परन्तु धर्म परायण मुसलमानों का बिश्वास है कि स्वर्ग की रचना संसार की रचना से भी पूर्व में ही हो चुकी है और उसका वर्णन पैग़म्बर की कहावतों द्वारा इस भांति करते हैं कि इसकी स्थिति सातोंलोकों से ऊपर अथवा सातवें लोक में परमेश्वर के सिंहासन के नीचे उसके निकट में है । उसकी भूमि अति कोमल मैदा वा शुद्धतम कस्तूरी वा केसर की है । पत्थर उसके मोती और प्रवाल हैं । उसकी दीवालें सुवर्ण और रजत (चांदी) मय हैं उसके सम्पूर्ण वृक्षों की पीड़ें सुवर्ण की हैं जिनमें से एक वृक्ष बिशेष आनन्द वृक्ष " त्यूबा " नामक है । इस बिषय में लोग कहते हैं कि यह वृक्ष मुहम्मदके रंगमहल में है उसकी एक एक शाखा प्रति सच्चे मुसलमान् के घरमें पहुँचैगी, अनार, अंगूर छुहारे और अन्य बिस्मय युक्त बिशाल फलों से लदा है जिनका स्वाद मनुष्यों ने कभो नहीं अनुभव किया है । इस कारण जिस बिशेष फलके खाने की इच्छा किसी को होगी उसी समय उसको प्राप्तहोगा । यदि मांस खाने की चाह हो तो पक्षी उसको इच्छाऽनुसार पके

प्रकाये उसके साम्हने उपस्थित होंगे। इसकी शाखा स्वयं झुककर लोगों के हस्त गत हो जायँगी जिससे फलों को तोड़ लेवैं। इस बृक्ष से केवल फल भोजन के लियेही नहीं परन्तु रेशमी पोशाकें भी मिलैंगी और सवारी के लिये पशु भी फलों से फूटकर भूषणों से सजे हुये निकलैंग। यह बृक्ष इतना बिशाल है कि इसकी छाया को शीघ्र से शीघ्रगामी घोड़े पर सवार होकर भागता हुआ एकसौ वर्ष में भी मनुष्य पार न जा सकैगा॥

जलकी बाहुल्यता स्थान की शोभा का मूल होती है इससे कुरान में स्वर्गीय नदियों का विशेष भूषण रूप से वर्णन है किसी में जल, किसी में दुग्ध, किसी में मदिरा और अनेकों में मधुकी धारा वहती है और यह सब "त्यूबा" की मूल से निकलती हैं जिन में से अल कौथर और (पियूष) संजीवनी नदी का बर्णन पहिले हो चुका है। इनके अतिरिक्त अनेक छोटे २ चश्में और तालों से भी यहां की भूमि बाटिका सिंचती रहती है। इनके नीचे के कंकड़ पत्थर सब लाल, पन्ना, मरकत हैं भूमि कपूर की है कियारीयां कस्तूरी की और तट केसरि के। इनमें से दो बहुत प्रसिद्ध हैं सलसबील और "तसनीय" परन्तु वहांकी दे दीप्यमान और अत्यन्त मनोहारी अप्सराओं के साम्हने उपरोक्त सब चमत्कार फीके पड़जाते हैं। उन की बड़ी बड़ी काली आंखों के कारण उनको "हूर अल ओयून" कहतेहैं उनका संगम ईमान वालोंके लिये मुख्य सुखका हेतु है मानुषी स्त्रीयों की तरह वह मिट्टी की नहीं वरन शुद्ध कस्तूरी की बनी हुई हैं। जिनमें कोई स्वाभाविक अपवित्रता, दोप व स्त्री जाति सम्बन्धी बाधाय नहीं होती वह यथार्थरूप से लज्जावान् होती है और सर्व साधारण की दृष्टि से अलक्ष्य पोले मोतियों के विशाल मंडपोंमें रहा करती हैं एक एक मंडप साठ साठ मील लम्बा चौड़ा होता है। स्वर्ग का नाम मुसलमानों की भाषा में अल जन्नत अर्थात् उद्यान है और

भी जन्नत "अल फिरदौस" "जन्नत अदन" जन्नत अलमावा "जन्नत अल नाईम आदि अनेक नामों के हैं। लोग इन नामों के पृथक् २ वाटिका, बन मानते हैं जहां भिन्न २ क्रमके सुख भोग हैं। उनके यहां एक शतसे कम स्थान नहीं मानेगये हैं इनमेंसे छोटेसे छोटे दर्जे का भी इतना सुख सम्पति से पूर्ण है कि वहां के निवासी विषय सुख में मग्न होजायँ परन्तु मुहम्मद ने इसके निर्धार में बताया है कि परमेश्वर एक एक धर्मात्मा को सौ सौ प्राणियों की शक्ति प्रदान करता है जिससे पूर्णरूप स्वर्ग के सुखोंका अनुभव करसकें। मुहम्मदके तड़ागका वर्णन तो होही चुकाहै इसके अतिरिक्त कुछ ग्रंथकार दो चश्मे और भी लिखते हैं जो स्वर्ग के द्वार के समीप के एक वृक्ष के नीचे से निकले हैं एक के जल पीने से सब बाहिर का मल दूर होकर शरीर निर्मल शुद्ध हो जांयँगे और दूसरे चश्मों में स्नान करने पर स्वर्गके द्वार पर पहुंचते ही उनके स्वागतके लिये दो सुन्दर युवा जो प्रति मनुष्यके साथ रहिकर सेवा करनेके लिये नियतहैं आकर उसे प्रणाम करेंगे। उनमेंसे एक दौड़कर उसके आगमन का समाचार उसके निमित्त जो गृहिणी स्त्रियां निरूपितहैं उनके पास लेजायगा। दो फिरिश्ते परमेश्वरका भेजाहुआ उपहारलिये हुये द्वारपर मिलेंगे उनमें से एक स्वर्गीय वस्त्र पहिनावैगा और दूसरा अंगुलियों में अंगूठियां पहिनादेगा जिनपर उसके सुख और आनन्दकी दशाके संकेत अंकित रहेंगे। स्वर्गके आठ फाटक बतातेहैं जिससे जिसका प्रवेश हो परन्तु मुहम्मदने यह कहाहै कि स्वर्गके प्रवेशमें किसी के केवल पुण्य कर्म ही काम न देंगे अपने लिये भी कहाहै कि अपने पुण्य बलसे नहीं वरन् परमेश्वर की अनुग्रह मात्र से ही उनका प्रवेश होगा। परन्तु क़ुरान का नित्य सिद्धान्त यह है कि प्रत्येक मनुष्य का सुख उसके कर्मों के अनुरूप रहैगा। भिन्न २ सुख के अनुक्रम पूर्वक निवास स्थान हैं। सर्वोत्तम श्रेणी का स्थान पैग़म्बरों के लिये रक्षित रहैगा उसके पीछे

परमेश्वर की उपासना और अर्चन के उपदेशओं का तिसके पीछे शहीदों का और तिसके नीचे का शेष भाग ईमानवालों के लिये उन के पुण्यों के अनुसार होगा। प्रवेश काल का क्रम भी मुहम्मद ने अपने लिये सब से प्रथम कहाहै और निर्धनी सौवर्ष पहिले धनिकों से स्थान पावेंगे। निर्धनियों के संग परलोकमें केवल यही विशेषता नहीं है मुहम्मद जिस समय स्वर्गयात्रा को गये थे तौ उन्होंने अधिकांश वहां के निवासी निर्धनी ही देखे थे और जब नरक में नीचेकी ओर देखा तो वहां पर अधिकतर भोग के निमित्त बन्धन में पड़ीहुई अभागी स्त्रियां थीं। पहिला भोजनोत्सव ईमानवालों के प्रवेश के पश्चात् इस कल्पना से कहा गया है कि परमेश्वर समग्र पृथ्वी को एक रोट बनाकर अपने हाथमें चपातीकी तरह रखकर सब किसीको अपने हाथ से परोसैगा। मांस के लिये बलाम नामी बैल और नून नामी मछली रहैगी जिनके यकृत (जिगर) के अंश से सत्तर हज़ार मनुष्यों की तृप्ति होजायगी जिससे अभिप्राय या तौ उन ७०००० मुहम्मद के साथियों का है जो विना परीक्षाही के प्रवेश पावेंगे और प्रधान रूप से इस भोजमें अग्रगण्य रहैंगे अथवा यह शब्द असंख्य वाचक है कि उस भोज में ऐसी अधिक भीड़ होगी॥

इस भोज के उपरान्त प्रति मनुष्य अपने नियत लोकमें जाकर पुण्यों के अनुसार सुख भोगेगा। इस सुख की सीमा बुद्धि से परे है क्योंकि छोटे से छोटे स्वर्गवासी के संग ८० सहस्र अनुचर सेवाके लिये और ७२ स्त्रियां अप्सरायें और इस लोक में जो जिसकी स्त्रियां थीं वह भी रहैंगी। एक आवास (खैमा) मोती पन्ना और जवाहिरात का बहुत विशाल उसके रहने निमित्त लगाया जायगा। दूसरी कहावत के अनुसार उसके भोजन के समय ३०० परिचर्यारक रहैंगे सोने के थालों में भोजन परोसा जायगा जिनमें से तीन सौ थाल एक बारही सामने रक्खे जायँगे एक एक मेंनये प्रकार का भोजन रहैगा

और प्रति कवर (ग्रास) आदि से अन्ततक एकसा ही स्वादिष्ट रहेगा। इतनेही प्रकार के आसव (शरावें) भी सोने ही के पात्रोंमें परोसे जायँगे। मदिरा इसलोक में तो निषिद्ध है परन्तु स्वर्ग में इस की कमी नहीं होगी बहुतायत से मिलैगा निर्भय उसे पीयेंगे क्योंकि यहां की तरह वह मादक नहीं होगा ॥

इस मदिरा के स्वाद का वर्णन नहीं हो सकता क्योंकि उसके चुआने में तसनीम और अन्य चश्मों का जल काम में लाया जायगा जिसकी मधुरता और सुगन्धि अपूर्व है। यदि कोई उस यहूदी की तरह जिसने महम्मद से शंका की थी इस बातपर विरुद्ध वाद करै कि इतने भोजन और पान से मल परित्याग और शौचादिक क्रिया की आवश्यकता होगी तो मुहम्मद ने जो उत्तर दिया था वही हम भी समाधान करैंगे कि स्वर्ग में मल परित्याग, तो एक और नाकभी नहीं बहती है। जितना मल है सब स्वेद होकर शरीर से निकल जाता है और इस स्वेद (पसीना) में कस्तूरी की सी सुगंधि होती है जिसके उपरान्त क्षुधा पूर्ववत स्वयं उत्पन्न हो जाती है। जैसे उत्तम भोजन के पदार्थ हैं उसी के अनुरूप वस्त्र भी स्वर्ग में मिलतेहैं। अति बहुमूल्य कौशेय (रेशमी) और कमखाबके वस्त्रहरित रंग के स्वर्गीय फलों में से फूटकर निकलैंगे और "त्यूबा" वृक्षकी पत्तियों से भी निकलैंगे। सोने और चान्दी के आभूषणों से अलंकृत होकर अनुपम चमकके मुक्ताओंसे जड़ेहुये मुकुट धारण करैंगे. रेशमी कालीन, बिशाल चौपालैं, पलंग तकिया और अन्य बहुमूल्य सुवर्ण और मणियों के बेल बूटेदार सामिग्री उन्हें बर्तने को मिलैगी। स्वर्गीय सुख सम्पतिको भले प्रकार भोग करसकैं इस निमित्त नवीन युवा अवस्था सदैव के लिये मिलैगी और किसी उमरके होकर मरें हों वहां पहुंचकर वह सब ३० वर्ष से अधिक की उमर के न होंगे (यही उमर पापियों की भी लिखते हैं) स्वर्गमें प्रवेश करतेही उनका

आकार आदम के बराबर ६० हाथ का हो जायगा। यदि उनको सन्तान की इच्छा होगी तो मुहम्मद की कहावत के अनुसार एकही घंटे में उत्पन्न होकर उनके पुत्रभी उतनेहीं बड़े होजायँगे। यदि किसी को व्यसन खेती का वहां लगे तो जो कुछ उसे बोनेकी इच्छा होगी क्षणमात्र ही में पककर तैयार होजायगा। कोई इन्द्री विषय भोगसे रहित न रहै इस निमित्त कर्ण के लिये परम आह्लाद जनक फिरिश्ता इसरफीलके राग जिसकी समता सृष्टि भरमें कोई जीव नहीं करसक्ता और स्वर्गीय अप्सराओं के गान होंगे वृक्ष भी स्वर्ग के परमेश्वरकी स्तुति ऐसे स्वरों में करैंगे कि जिनका अनुभव मनुष्य मात्र को कभीं नहीं हुआ है। इन सब स्वरों में इन क्षुद्र घण्टिकाओं के शब्द मिलकर गान उत्पन्न करैंगे जो वृक्षों पर लटकते हैं और जिनको परमेश्वर के सिंहासन की पवन चलायमान करैगी। जब जब किसी स्वर्गीय जीवको गान सुनने की इच्छा होगी तो सुवर्णके वृक्ष जिनमें मोती पन्ना रूपी फल लगते हैं उन के चटाचट शब्द ही ऐसे सुरीले होंगे कि वह आलाप मनुष्य के ध्यान से परे हैं॥

यह सब विषय सुख समान रूप से स्वर्ग के छोटे से छोटे प्राणियों को भी प्राप्त होंगे तो जो प्राणी अधिक और विशेष मान सत्कार पात्र वहां होगा उसके लिये ऐसे अपूर्व सुख कल्पित होंगे कि जिनको न दृष्टि ने देखा न कान ने सुना और न मनुष्य के चित्त में जिनकी सम्भावना हो सक्ती है। यह वाक्य तो निश्चय रूप से बाईबिल सेही उद्धृत किया गया है॥

स्वर्ग के प्राणियों की दृष्टि इतनी तीव्र होगी कि सहस्र वर्ष पर्यन्त में जितनी दूर मनुष्य जा सक्ता है उतने स्थल को एक स्थान में बैठा हुआ देख सकैगा। इतनेही विस्तार में छोटे से छोटे स्वर्ग निवासीके उद्यान, स्त्री भृत्य, सामग्री और अन्य असबाब रहा करैगा। सबसे परम सुख का भोग उनको होगा जो परमेश्वर के

दर्शन सायं प्रातः करनेके अधिकारी होंगे और इस अपूर्व लाभ के साम्हने अन्य सुख तुच्छ समझे जायँगे क्योंकि इन्द्रिय विषय सुख तो पशु को भी प्राप्त हो सक्ता है। इससे प्रकट है कि मुसल्मानों में आत्मिक सुख का भी कुछ ज्ञान था॥

स्वर्ग के बर्णन का अधिकांश मुहम्मद ने यहूदियों से लिया है उनके यहां परलोक में धर्मियों के निवासार्थ अति रमणीय वाटिका रहैगी जो सातवें लोक तक पहुंचैगी। उसमें तीन फाटक बतलाते हैं याजे दोहीं कहते हैं और चारि नदी हैं (यह वृत्तान्त तो खुला खुली वाईविल की ईडिन बाटिका की नकलहै) दूधकी, मदिराकी, बालसम (सुगंधित द्रव्य अभ्यंग लेप) की और नधुधारा की। विहे मोथ, और लिवा एथन को उन्होंने लिखा है कि धर्मात्माओं के भोजनार्थ मारे जायँगे सो मुहम्मदके वलाम और नूनसे मिलतेही हैं और मुसल्मान् स्वयं भी मानते हैं कि यहूदियों से यह लिये गये हैं। रवीन लोग भी सात प्रकार के भिन्न २ सुख भोग मानते हैं और सबसे उत्तम परमेश्वर के दर्शन का लाभ उन्हों ने भी रक्खा है मेजाई का भी बृत्तान्त स्वर्ग का मुहम्मद के वर्णन से बहुत कुछ मिलता है उनके यहां बिहिश्त और मीनू दो नाम हैं और "हूरानी बिहिश्त" अर्थात् स्वर्ग की हूरों के रंग निवास पुण्यात्माओं के निमित्त लिखा है और यह फिरिश्ता "जमियाद" के अधिकार में है उन्हीं से मुहम्मद ने भी अपने वर्णन में संकेत हूरों को लिया प्रतीत होता है। सम्भव यहभी है कि ईसाइयों ने जो स्वर्ग सुख के जो वृत्तान्त लिखे हैं कुछ अंश उनसे भी मुहम्मद ने लिया होगा क्योंकि वाईविल में भी आत्मिक सुख जो स्वर्ग में प्राप्त होगा उसका वर्णन स्थूल इंद्रिय भोगों द्वाराही सर्व साधारण के समझाने के निमित्त किया है। रूपके द्वारा बर्णन उसमें भी है सुवर्ण और मणि निर्मित नगर द्वादश द्वार तथा सड़कों में अमृत

धारा नदी का प्रवाह जिसमें रोग हरण शक्ति सम्पन्न द्वादश प्रकार के फल और पत्रयुक्त वृक्ष दोनों ओर लगे हैं । ईसा ने भी पुण्यात्माओं के पारलौकिक सुखों को राज्य रूपक बांधकर किया है कि वहांपर उनको भोजन पान करने का अधिकार (अपनी मेज़पर) अपने संग में लिखा है । परन्तु इस वर्णनमें महम्मद कैसी बालोचित कल्पनायें नहीं हैं और न ऐसे स्थूल भोग विषयोंकी रचनायें हैं जो मुहम्मदको प्रियथीं । विरुद्ध उसके मृतोत्थापन के अवसर पर बाईबिल में स्पष्ट कर दिया है कि पुनरुत्थान में विवाहादिक का व्यवहार कदापि न होगा । परमेश्वर के फ़िरिश्तों के सदृश स्वर्गमें प्राणी रहेंगे । मुहम्मद ने मेजिअन्स की अश्लील बातों को अपने इस वर्णन में नकल करना उचित समझा है न कि बाईबिल के सलज्ज विनय शील शैलीको । मुसल्मानों को स्वर्ग में किसी प्रकार का सुख अप्राप्त न रहि जाय इसलिये स्त्रियों को भी उनके भोगार्थ और पदार्थों के संग रख दिया है । जैसी स्वयं उनको रुचि थी उसी के अनुसार मुहम्मद ने अरबों के लिये स्त्री विषय भोग का सुख मुख्य समझकर रक्खा है मानों पैनगेस के गर्दन की कहानीकी तरह अन्य सब सुख इसके विना सन्तोष और तृप्ति जनक न होंगे ऐसे वाक्य ईसाई ग्रन्थकारों ने भी लिखे हैं जिनका भी हम समर्थन नहीं करसक्ते जैसे इरीनियस ने सेन्ट जान्स की कहावत लिखी है कि:—
ऐसे दिन आवेंगे जब इस प्रकार के अंगूर की बेलें होंगी कि एक एक बेल में दश दश हज़ार शाखायें, प्रत्येक शाखामें दश २ हजार छोटी शाखायें, प्रत्येक छोटी शाखामें दश २ हज़ार टहनियां, प्रत्येक टहनी में दश २ हज़ार गुच्छे अंगूरों के, प्रत्येक गुच्छे में दश २ हज़ार अंगूर और एक २ अंगूर इतना बड़ा कि उसे दबाने पर २७० गेलन शराब निकलेगी और जब किसी एक भव्पे को स्वर्गीय जीव लेने लगेगा तो दूसरा कहेगा कि उससे अच्छा मैं हूं मुझे ग्रहण कर

मालिकका धन्यवादकर इस प्रकारके अन्य वाक्यभी हैं। मेंजिअन्सने जुरुअश्त के वर्णन को जिस तरह रूपक मान लिया है उसीतरह यदि मुहम्मद भी अपने अनुयायियों को यह उपदेश करते कि यह वर्णन अक्षरार्थ नहीं समझना चाहिये यह रूपक अलङ्कारवत् मानने योग्य है तो कुछ निष्कृति भी सम्भव थी परन्तु कुरान के समग्र अभिप्राय के ढंग से स्पष्ट है कि यद्यपि कुछ विनीत और निर्मल बुद्धिवाले मुसलमान तो ऐसे स्थूल विषय भोगका वर्णन अवश्य आत्मिक भावार्थ का रूपक अलंकारवत् मानेंगे परन्तु सर्व साधारण और धर्म परायण लोग इसके अक्षरार्थहीपर विश्वास करते हैं और इसके प्रमाणमें हम कह सक्ते हैं कि ईसाईयों से जब कोई प्रतिज्ञा पत्रादिक नियम वद्ध लिखवाते हैं तो यह शपथ उनसे लेते हैं कि यदि इस प्रतिज्ञा को भंग करें तो परलोक में काले नेत्रवाली स्त्रियां और शारीरिक विषय भोगों को स्वीकार करेंगे। कई लेखकों ने अवशिष्ट दोषारोपण मुसल्मानों पर यह किया है कि स्त्रियों में आत्मा का अभाव मानते हैं अथवा अन्य पशुओं की तरह नष्टहोकर उनको पुण्य फल भोग का अधिकार परलोक में न होगा। मूर्खों का मत इस विषयमें जो कुछ हो परन्तु मुहम्मद की दृष्टिमें तो स्त्रियां इतनी आदरणीय थीं कि इसप्रकार का उपदेश कदापि वह नहीं करसक्ते थे और अनेक वाक्योंसे कुरानमें समर्थन इसबातका है कि परमेश्वर के यहां मनुष्यों में स्त्री पुरुष का भेद नहीं माना जायगा। दण्ड और शुभ फल का अधिकार परलोक में पुरुष और स्त्री को तुल्यरूप से होगा। सर्वसाधारण मत यह अवश्य है कि स्त्रियों का निवासस्थान मनुष्यां से प्रथक् रहैगा, क्योंकि भोग के अर्थ तो उनको स्त्रियां के बदले स्वर्ग में अप्सरा मिलैंगी—प्राज्ञ लोग यह भी मानते सही हैं कि इसलोक की अपनी स्त्रियोंमेंसे कुछ या जितनी मनुष्य की इच्छा होगी इतनी उसके साथही रहैंगी। परन्तु पुण्यात्मा स्त्रियों के लिये

स्थान प्रथक् होगा जहां सबप्रकारके सुख उनको प्राप्तहोंगे परन्तु यह कहीं नहीं लिखा मिलता कि इन सुखों में से स्त्रियों के लिये वांछित जार की संगति भी एक सुख माना गयाहै। धर्मात्मा स्त्रियोंके विषय में एक कहावत मुहम्मद की है कि किसी वृद्धा स्त्रीने उनसे कहा कि मेरे लिये परमेश्वरके स्वर्ग प्राप्तके लिये प्रार्थना करदे। उत्तरमें उन्होंने कहा कि वृद्ध स्त्रियां वहां नहीं जानेपातीं वह यह सुनकर बहुत दुखित हुई तिसपर उसका समाधान मुहम्मदने इस प्रकार कियाथा कि परमेश्वर तुमको फिरसे युवाकर देगा तब रोकटोक स्वर्गमें न रहैगी॥

सुख दुःख का निश्चित होना।

छठवां मुख्य सिद्धान्त जिसकी शिक्षा मुसल्मानों के लिये कुरान में की गई है यह है कि परमेश्वर ने अचलरूप से बुरा भला सब पूर्वही में स्थिरकर रक्खाहै। जो कुछ किसी प्रकारकी बुरी भली घटना संसार में होती है वा होने वाली है सम्पूर्ण अनन्यथा करणीय ही परमेश्वर की आज्ञारूप है आदि से रचकर रक्षित लेखनाधार (टेबिल) पर लिखीहुई रक्खी है गुप्तरूप से परमेश्वर ने प्रत्येक मनुष्य की भावी सुख दुःख मूलरूप पहिलेही से निश्चित सब विषयों में कररक्खी है। मनुष्य की आस्तिकता, नास्तिकता, आज्ञाकारी वा अनाज्ञाकारी होना तथा उसका पारलौकिक नित्यस्थायी सुख दुःख का अमिट भोग जो किसी उपाय से अन्यथा नहीं होसक्ता है। इस सिद्धान्त द्वारा अपना अभीष्ट सिद्धकरने के लिये कुरान में बहुत ही प्रबल प्रयोग मुहम्मद ने किया है। युद्ध में निर्भय लड़कर अपने मत विस्तार के निमित्त लोगोंके साहस बढ़ाने का अच्छा उपाय इसी सिद्धान्त से उनको मिलता था कि होनहार तो मिटही नहीं सक्ती एक पल मात्र भी किसी की आयु न्यूनाऽधिक न होगी कदाचित् हठ वश कोई उनकी आह्वान मानैगा व उनको वंचक समझकर उन

का निरादर करैगा तो उनके हटके दण्ड में परमेश्वर अपनी न्याय शीलता द्वारा उनपर कोप करैगा जिसके कारण क्रूरता, शीलनाश, और पापबुद्धिसे वह लोग दूषित होंगे। बहुत से मुसलमान आचार्य इस अव्वल नियोजनरूप सिद्धान्तसे परमेश्वर की न्याय शीलउदार कृपामें दोष आने की सम्भावना करते हैं तथा अपकार कर्त्तव्य दोष भी परमेश्वर में लगने का भय मानते हैं इससे इस सिद्धान्त के अर्थ और भाव में अनेक विवाद रूप भाष्य हुए हैं जिनके कारण अनेक विरोधी पक्ष और सम्प्रदाय होगये हैं यहां तक कि बाज़ २ लोग मनुष्य में कर्माचरण की पूर्ण स्वाधीनता तक भी मानने लगे हैं॥

नमाज़।

आचरण विषयक चार मुख्य धर्मों में से मुसल्मानों के यहां प्रथम नमाज़है उसमें शुद्धि शौचादिकभी अन्तर्गतहै। जो नमाज़ से पूर्व विधान किये गये हैं उसके दो विभाग हैं एक गुसल अर्थात् जल स्नान दूसरा वज़ू जिसमें विशेष नियम से हाथ पैर और मुख को धोते हैं। स्नान तो स्त्री प्रसंग वा वीर्य पतन वा मृतक स्पर्श के उपरान्त किये जाते हैं स्त्रियों को भी प्रसूत के पश्चात् स्नान का विधान किया गयाहै। गुशल प्रत्येक मनुष्यको नमाज़से पहले अवश्य करनीय रक्खा गया है और साधारण अवस्था में भी करना चाहिये इसकी विधि गुसल करते हुये देखने ही से अच्छी तरह समझ में आ सक्ती है। शायद इस शौच क्रिया को मुहम्मद ने यहूदियों से नक़ल की है क्योंकि उन लोगों की विधि इससे बहुत कुछ मिलती है। मूसा के उपदेशों को लोगों ने परम परायक विधियों से इतना विस्तार करदिया है कि ग्रंथ के ग्रंथ यहूदियों के यहां इस विषय पर लिखे हुये हैं। ईसा के समय में भी शौचादि क्रिया इतनी बढ़ी हुई थी कि उनलोगों को इस विषयमें ईसाने बहुत कुछ धिक्कारा भी था। यह निश्चय है कि मुहम्मद के समय से बहुत पहिले ही अरब

वाले शौचादिक व स्नान सभी पूर्वी लोगों की तरह किया करते थे क्योंकि सर्द मुल्कों के अपेक्षा गर्म देशों में अधिक शौच और पवित्रता की आवश्यकता होतीही है। मुहम्मदने अपने देशवालोंको इसे धर्म विधि समझकर करने का उपदेश किया कदाचित् लोग उसकी पावन्दी नहीं मानते होंगे अथवा इस नियम बद्ध उसे किया है कि लोगप्रमाद और असावधानी के कारण उसे त्याग न दें। मुसलमान तो इस शौच क्रिया को इब्राहीम के समय से ही प्रचलित मानते हैं जिनको परमेश्वर ने स्वयं इसके करने की आज्ञा दी थी और फिरिश्ता जिवरील ने सुन्दर युवा के रूप में उन्हें इसकी क्रिया भी सिखाई थी। वाज़े लोग और भी ऊंचे जाकर आदम के समयसे ही मानकर कहते हैं कि फिरिश्तों ने शौच क्रिया का विधान आदम और हव्वा को सिखाया था। मुहम्मद ने शौच को प्रधान रूप से उपदेश किया है शौच को धर्म का आधार माना है जिसके बिना नमाज परमेश्वर के समीप नहीं सुनी जायगी। शौच को धर्म का आधा अङ्ग कहा है और उसे नमाजकी कुंजी बताई है। अलगज़ाली ने शौच चार प्रकार का लिखा है। प्रथम शरीर को वाह्य मल मूत्र आदिकसे शुद्धकरना। दूसरा कर्मेन्द्रियोंको अन्याय और पापाचरण से रहित करना तीसरा अन्तःकरण को अपवित्र भावों से और गर्हित दुराचारोंसे बचाना चतुर्थ मानसिक शुद्धि रागादिकसे निवृत्ति। जिन भावनाओंसे परमेश्वर की उपासनासे चित्त हटताहै उनसे मनके गुप्त संकल्पों को शुद्ध करना। शरीर को वाह्य कोष और हृदय को बीज रूप लिखा है। उन लोगों को निन्दित समझा है जो केवल शरीरकी वाह्य शुद्धि को मुख्य समझकर अहंकार, मूर्खता और कपटसे अपने चित्तों को दूषित करते हैं और अन्य लोगों को जो उनकी तरह बाहर से अति पवित्र नहीं रहते उनको निन्दित मानते हैं। जलके अभाव में यह शौच लुप्त न होवे इसलिये उसके स्थान में बालू और

भस्म का विधान बताया है जहां जल प्राप्त न होसकं अथवा रोगादिक से शरीर को जल बाधा कारक हो बालू और भस्म को उसी तरह हाथों से अंगोंपर लेप करतेहैं जैसे जलकी विधि है। यह उपाय मुहम्मद का स्वयं निकाला हुआ इतना नहीं प्रतीत होता जितना कि यहूदियों वा मेजिअन्स की नकल मालूम होती है क्योंकि इन दोनों कौमों में शुद्धि का विधान बहुत विस्तार पूर्वक है और दोनोंही के यहां बालू और भस्म को जल के अभाव में विधान किया है। मुहम्मद से बहुत वर्ष पहिले ईसाईयों के बपतिस्मा संस्कार में भी जल के स्थान में बालू का ग्रहण इसी कारण से रक्खा गया है और इस के प्रसिद्ध उदाहरण भी धर्म सम्बंधी इतिहासोंमें वर्त्तमान हैं॥

शुद्धि और सुन्नत।

केवल गुसल (स्नान) ही नहीं परन्तु उसके सिवाय मुसल्मानो के यहां शरीर शुद्धिके लिये बालों का औंछना, दाढ़ी का कतरना, नखों का काटना, बगल के बालों का उखाड़ना, उरस्थादिक के बालों का बनवाना, और सुन्नत (मुसलमानी) यह भी शरीर शुद्धि के निमित्त कर्त्तव्य धर्म का अङ्ग माना गया है। सुन्नत का ज़िकर क़ुरान में भलेही न आयाहो परन्तु मुसलमान इसको प्राचीन दिव्य संस्कार मानतेहैं जिसका समर्थन इसलाम मतने कियाहै और यद्यपि कहीं उसको अत्यावश्यक न मानकर कहीं २ न भी करें परंतु उसका करना उचित और परम उपयुक्त मानते हैं। मुहम्मदसे बहुत काल पूर्व के अरब इस रसम को करते थे। अनुमान से इसे इशमाईलसे सीखा होगा यद्यपि इशमाईल की सन्तानही नहीं बल्कि हेमईयराईट और अन्य कौमे भी करती थीं। इशमाईल की सन्तान, लोग कहते हैं कि अपने बालकों की सुन्नत यहूदियों की तरह आठवें दिन ही नहीं करती थी परन्तु बारह तेरह बर्ष की उमर पर बालक का

पिता बालक के इस संस्कार को करता था। मुसलमानों ने उनका अनुकरण यहां तक तो किया है कि जब बालक यह कल्मा साफ़ साफ़ पढ़सके "परमेश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई परमेश्वर नहीं और मुहम्मद उसके रसूलहैं" तबही इस संस्कार को करते हैं परंतु उमर का नियम १० वर्ष से १६ वर्ष के भीतर वा इसी के लगभग रक्खा है। मुसलमान आचार्यों का सम्मति इस विषय में बाईबिल के अनुरूपतो यही है कि यह उपदेश आदि में इब्राहीम को दिया गया था। बाजे बाजे यह भी कल्पना करते हैं कि आदम को इसे फिरिश्ता जिबराईल ने सिखाया था जब उन्होंने इस प्रतिज्ञा को पूर्ण करना चाहा कि जो शरीर का मांस उनके पतन के पश्चात् उनके आत्मा से विरोधी होगया था उसे काट डालैं गे। इससे लोगों ने विचित्र तर्क निकाली है कि सामान्य रूप से इस संस्कार का करना सबके लिये आवश्यक है। चाहे यहूदियों से इस बात को उन्हों ने ग्रहण किया हो या न किया हो परन्तु इब्राहीम से पहिले के किसी आचार्य,प्रधान,या पैग़म्बरको बिना सुन्नत संस्कार के रहना कदापि नहीं मानते। बल्कि यहांतक कहते हैं कि इनमें से बहुतेरे तथा अन्य साधु पुण्यात्मा जन जो इब्राहीम के पीछे हुये हैं वह सुन्नत किये हुये ही (इन्द्री के अग्र भागके चर्म बिना) उत्पन्नही हुये थे और विशेष करके आदम तो ऐसेही रचे गयेथे। इसीसे मुसलमान् अपने मुहम्मद कोभी जन्महीसे सुन्नतहुआ वर्णनकरते हैं। मुहम्मद नमाजको इतना आवश्यक कर्म मानते थे कि उन्होंने उसको "धर्म स्तम्भ" और "स्वर्ग की कुंजी" कहाहै। और जब सन् ६ हिजरीमें तायेफ नगरके निवासी "थाकी फाईट" लोगोंने मुहम्मद का मत स्वीकर किया तो उन्होंने प्रार्थना की कि हमारी मूर्ति के रखनेकी आज्ञा नहीं होती तो हमको नमाज़ ही से छुटकारा मिले तिसपर मुहम्मद ने उत्तर दिया था कि बिना नमाज़के किसी मतमें कोई फल और सत्ता होही नहीं सक्ती॥

नमाज़ का समय ।

ऐसे भारी कर्त्तव्य का लोप न होने पावै इस विचार से मुहम्मद ने अपने मतवालों के लिये नमाज़ के ५ समय प्रतिदिन नियत किये हैं पहिला सूर्योदय से पहिले, दूसरा मध्याह्नके पश्चात् जब सूर्य ढुलने लगे, तिसरा तीसरे पहरके पीछे सूर्यास्तसे पहिले चौथा सायंकाल को सूर्यास्त के पीछे और रात्रि होने से पहिले पांचवां रात्रि के पहिले प्रहरमें । इस नियमकी आज्ञा मुहम्मद स्वयं परमेश्वरके सिंहासनसे लाये जब रात्रिमें स्वर्ग की यात्रा की थी और कुरानमें है कि नियत समय पर नमाज़ पढ़े जाने का विशेष आग्रह यद्यपि उनका निर्देशरूपसे उसमें नहीं कियागयाहै । मुअज़्ज़िम अपनी २ मसजिदों के शिखरोंसे समयकी सूचना चिल्लाकर देते हैं (शंख घंटा का क्यों निषेध है यह नहीं मालूम होता) जिसको सुनकर प्रत्येक मुसल्मान जिसको धर्मका विचारहै चाहै मसजिदमें जाकर अथवा अन्य पवित्र स्थलपर नमाज़को कुछ नियत वाक्य जिनको बाजे माला से गिनते जाते हैं उच्चारण करके पढ़ैगा और अंगों से भी उठना बैठना जैसार नियत है उसके अनुसारही नमाज़ को पढ़ते हैं जिसकी विधि ग्रंथकारों ने विशेषतः लिखी है और जिसमें कमी नहीं करनी चाहिये सिवाय ऐसे अवसरों के जैसे यात्रा, वा युद्ध में जाने के लिये तैयार होने के समय आदिकपर। उपरोक्त विधि के सिवाय नमाज पढ़ते समय यह आवश्यक है कि मुखों को मक्का की मसजिद की ओर को करैं । मसजिदों में इसका सूचक एक ताक़ वा आला भी बना रहता है और जहां दिशा का ज्ञान ठीक नहीं होसक्ता तहां के लिये सारिणी (टेबिल) भी लोगों के पास रहती है जिस से उस दशाका ज्ञान कर लेते हैं । यदि नमाज़को आदर भक्ति और आशा के सहित न पढ़ा जाय तो बाहरी बातों का फल उन के मत से

बहुत कम होता है। इस सम्बंधमें दो बातें वर्णनीय और भी हैं। एक तो यह कि नमाज़ के समय बहुत शान शौकत की पोशाक मुसलमान नहीं पहिनते। वह कहते हैं कि परमेश्वर के समीप नम्र भाव प्रकट करना आवश्यक है अभिमानी और गर्वीले उसकी दृष्टि में न प्रतीत होवें इसलिये समयोचित वस्त्रही पहिनकर नमाज़ पढ़ते हैं। दूसरी बात यह है कि मसजिदों में स्त्रियों को अपने संग नमाज़ पढ़ने का अधिकारी नहीं रक्खा है उनकी संगति से लोगों का कथन है कि चित्त का भाव दूसरे प्रकार का होजाता है उनके लिये अपने घरोंपर नमाज़ विहित की गई है। यदि मसजिदमें जांय भी तो ऐसे समय जब वहां पुरुष न होवें। इसके विरुद्ध ईसाईयों में स्त्रियों को गिरजे में संग ले जाने ही का रिवाज जैसा है सब किसी को विदित ही है। नमाज़ की विधि नियम आदिक की नकल औरों से और विशेषतः यहूदियों से मुहम्मद ने की है। केवल संख्या में अन्तर कर दिया है जो इब्राहीम, इसहाक, याकूब के अनुसार यहूदियों में प्रातः, सायं और रात्रि तीनबार ही है। प्रचार तो इसका "दाना" के समयसे प्राचीनही है परन्तु उसको बढ़ाकर ५ बार कर दियागयाहै। अंगन्यास भी मुसलमानों का "यहूदी रब्बीनों" के यहां जैसा विहितहै वैसाही है विशेष करके मस्तक भूमि में टेककर सिजदा करने का माननीय प्रकार। तथापि रबीन्स लोग "वालपी" और देवता की इबादत जिस प्राचीन प्रथा से करते थे मुसलमानों की इस विधि को उसी की नक़ल बतलाते हैं। यहूदी अपना मुख सदा बैतुल मुक़द्दस के मन्दिर की ओर करके अपनी नमाज़ पढ़ते हैं जो कि उनका क़िबला सुलैमानकी प्रथम स्थापनाके समयसे चला आताहै। इसी कारण दाना ने चैल्डीयो में नमाज पढ़ने के निमित्त अपनेकमरे की खिड़कियां उसी शहर की ओर रक्खी थी और छः सात महीने तक मुहम्मद भी इसीका अपना क़िबला मानते रहे पीछे से उन्होंने

काबाकी ओर बदल दियाहै। यहूदियोंके धर्म ग्रन्थों के उपदेश द्वारा नमाज़ के स्थान का पवित्र होना और शुद्ध वस्त्र होना आवश्यक है स्त्री पुरुष प्रथक् प्रथक् नमाज़ उनके यहां भी पढ़ते हैं और भी बहुत सी बातें यहूदियोंकी मुसलमानोंकी सार्वजनिक नमाज़से मिलती हैं॥

दान।

"दान" मुसलमानों के यहां दूसरा मुख्य अंग धर्म का है। दो प्रकार का दान माना गया है एक "नियामक" दूसरा इच्छापूर्बक। नियामक दान जिसे ज़कात कहते हैं सबही को करना विधि है कितना अंश किस बस्तु का दान योग्य होता है इस को नियमबद्ध उनके यहां किया गया है। इच्छानुसार दान में जिसे सदाक़त कहते हैं न्यूनाधिक करने का हर किसी को अपनी रुचि के अनुसार अधिकार है। ज़कात इस कारण कहाता है कि या तो उसमें आशीर्वचन आजानेसे मनुष्यके भंडार की वृद्धि होती है और बर्कतहोने से मनुष्य के चित्त में उदारताके गुण का आविर्भाव होता है अथवा यह कि दान देने के पश्चात् जो शेष धन रहिजाता है वह अशुद्धतासे बचताहै और उससे आत्मामें लोभ की मलिनता नहींलगती। सदाक़त अर्थात् सत्यता है मानों यह परमेश्वर की उपासना में मनुष्य की शुचिता और निश्छलता का प्रमाण है। बाजे ग्रन्थकार नियामक दान को दशमांश कहते हैं परन्तु यह शब्द ठीक नहीं क्योंकि उस से कहीं अधिक कहीं न्यूनभी लोग करते हैं। दान की आज्ञा कुरान में बहुधा की गई है और नमाज़ के साथही उसको करने का उपदेश दिया गया है क्योंकि दान के प्रभाव से नमाज़ परमेश्वर के समीप शीघ्र सुनी जाती है इसीकारण खलीफ़ा उमर इब्नअब्दुल अज़ीज कहा करते थे कि नमाज़ तो आधी दूरतक ही परमेश्वर के समीप पहुंचाती है रोज़ा रखने से स्वर्ग का द्वार प्राप्त होजाता है। और दान से स्वर्ग के भीतर प्रवेश का अधिकारी होताहै। इसलिये मुस.

लमान् दान को बहुत उत्कृष्ट और गुणसम्पन्न कल्याणकारी समझते हैं दानियों के उदाहरण भी बहुत उनके यहां हैं। अली के पुत्र हसन जो मुहम्मद के नाती (दोहिते) थे उन्होंने अपने जीवन में तीनबार अपने धनके दो सम भाग करके आधा दीन दुखियों को बांट दिया था और दोबार अपना सर्वस्व भी दान करदिया था। सर्व साधारण में दान का इतना प्रचार है कि पशुओं के साथ भी इस उदारता का प्रकाश वह सब करते हैं॥

मुसलमानों के नियमानुसार पांच पदार्थों का दान होता है १ पशुओं का दान अर्थात ऊंट,गाय बैल और भेड़; २ धन ; ३ अन्न; ४ फल छुहारे दाख आदिक; और ५ जो माल बेचा गया हो। इन सब पदार्थों का एक अंश साधारणतः चालीसवां भाग अर्थात् मूल्य का अढ़ाई रुपैया सैकड़ा दान करना चाहिये परन्तु इनमें से दान तब ही करै जब प्रत्येक पदार्थ अपने पास किसी विशेष परिमाण वा संख्या का हो। जाय; सो भी ग्यारह मास तक उस पर अपना अधिकार रहि चुका हो। जब तक बारहवां मास आरम्भ न होजाय तब तक दान करने की मजबूरी नहीं हो सक्ती है; और खेती के तथा बोझ ढोने वाले पशुओं को दान में देना नहीं लिखा है। जहां पर धनादिक खानोंसे वा समुद्रसे वा किसी ऐसे दस्तकारी व रोज़गार से प्राप्त हुआ हो जो मनुष्य के परिवार के उचित पालन पोषण से अधिक शेष रहि जाय तो उस में से पञ्चमांश के दान की विधि मानी गई है विशेषतः जिस धन के उपार्जन में अन्याय का सन्देह हो उस में से अवश्यही पञ्चम भाग देना चाहिये। रमजान के मास व्रतों के अन्त में प्रत्येक मुसलमान को अपनी ओर से तथा अपने कुटुम्ब के प्रति व्यक्ति की ओर से भी यदि उसके पास गेहूं, जौ, छुहारे, दाख, चावल या भोजन के अन्य सामान्य पदार्थ उचित परिणाम में हों तो दान अवश्य करना विदित है। नियामक दान के

पहिले मुहम्मद स्वयं संग्रह करके अपने दीन सम्बन्धी नातेदार और अनुयायियों में यथा योग्य अपनी समझ के अनुसार बांटते थे; प्रधान रूपसे उन लोगोंके पालन पोषणमें लगाते थे जो परमेश्वर की राहपर धर्म समझकर युद्धमें लड़कर उनके सहायक होते थे। उनके पीछे उनके पदाधिकारियों ने भी वही बर्त्ताव किया परन्तु शनैः शनैः राज्य शासनके अर्थ अन्य टिकस और कर नियत होगयेथे तब इस दानके धनको लोगोंकी इच्छानुसारही बांटनेका क्रम कर दियागया॥

दान के वह नियम जो ऊपर कहे हैं यहूदियों में भी इन के पादान्यास रूपी चिह्न उनके उपदेशों में वर्तमान हैं। सदक़ा अर्थात् "न्याय या सदाचार" दान का नाम रब्बीनों के यहां भी है और उस की बलिप्रदान से भी अधिक तर पुण्य कर्म माना है जिस से नरक की अग्नि से मनुष्य मुक्त होता है और अक्षय आयु प्राप्त होती है। खेतों के कोनों को तथा खलियान और अंगूरों के खेतों के अवशिष्ट अन्नकण आदिक को अतिथि और दीनों के निमित्त छोड़ देने का तो आदेश मूसा का है ही इस के अतिरिक्त अपने संग्रहीत अन्न और फलों में से भी एक भाग जिस को दीनों का दशांश कहते हैं निकाल देने के लिये हिदायत की गई है। यहूदी भी पूर्व में दान के लिये प्रसिद्ध रहे हैं "जैकियस" ने अपना आधा धन दीनों को बांट दिया था और बाज़े बाज़े लोगों ने अपना सर्वस्व दान भी कर दिया था। तिस पर उनके आचार्यों ने अन्त में यह नियम कर दिया कि कोई मनुष्य अपने धन के पंचमांश से अधिक न दान करे। उनकी सभा गृहों में लोगों के दान को एकत्रित करने के लिये सार्वजनिक प्रकार से लोग नियत किये जाते थे॥

रोज़ों का बयान।

मुसलमानों के धर्माचरण का तीसरा बिधान (ब्रत) रोज़े का है। यह इतना बड़ा कर्तव्य है कि मुहम्मद कहा करते थे कि यह

स्वर्ग का फाटक है व्रती के मुख की गन्धि परमेश्वर को कस्तूरी से. अधिक सुखावह लगती है और अलगजई ने इस को धर्म का चतुर्थ भाग माना है। मुसलमान आचार्यों ने व्रत के तीन अनुक्रम कहे हैं एक तो उदर और शरीर के अन्य अङ्गों को विषयों से निवृत्ति द्वारा शांत रखना, दूसरा, कर्ण, नेत्र, जिह्वा, हस्त, पाद तथा अन्य कर्मेन्द्रियों को पाप से रोकना तीसरा अन्तःकरण को संसारिक चिन्ताओं से. उपवास कराना और चित्त को परमेश्वर से अतिरिक्त सब पदार्थों से निवृत्त रखना द्वितीया के चन्द्र दर्शन से लेकर दूसरे मास की द्विती· या के चन्द्रोदय तक रमज़ान का समस्त मास उपवास करना मुसलमानों का फ़र्ज़ है। इस में प्रातःकाल से सूर्यास्त तक भोजन, पान और स्त्री प्रसंग न करना और इसकी विधि इतनी कठिन रक्खी है किसी सुगंध द्रव्य के सूंघने से, धूम पान से, वा जान बूझकर थूक लीलने से भी व्रत का भंग हो जाना मानते हैं; बाज़े बाज़े इतने सावधान रहते हैं कि बोलने में भी अपने मुख को नहीं खोलते कदाचित् अधिक बायु सांस द्वारा प्रवेश न होजाय। किसी स्त्री के स्पर्श अथवा चुंबन तथा जान बूझ कर उवान्त करनेसे भी व्रत भंग होजाता है। सूर्यास्तके उपरान्त मन माना भोजन, पान तथा स्त्रियोंके सहबास की आज्ञा अरुणोदय तक है। दृढ़व्रती धर्म परायणलोग तो अर्द्ध रात्रि से ही रोज़ा आरम्भ करते हैं। उष्ण काल में रमज़ान पड़ने से रोज़े अधिक क्लेशद हो जाते हैं क्योंकि गणना चन्द्रमाससे होती है ३३ वर्ष में सब ऋतुओं में अरब वालों के मासों की परि समाप्ति हो जाती है दिन के दीर्घ होनेसे और गर्म्मी की अधिकता के कारण ग्रीष्मऋतु का रमज़ान शीतकालकी अपेक्षा बहुतही कठिन और क्लेशद होजाता है। रमज़ान का मास इस व्रत के लिये इस कारण उपयुक्त हुआ है कि इसी मास में कुरान स्वर्ग से उतरा था। बाज़ लोगों का मत है कि इब्राहीम, मूसा और ईसा को भी अपने २ स्वतः प्रकाश आदेश

इसी मासमें प्राप्त हुये थे। रमज़ान व्रतसे (शरीयत) बचाव मुसाफिर और रोगियों के अतिरिक्त किसी को भी नहीं है, रोगी उसको माना गया है जिसकी स्वास्थ्य में व्रत करने से हानि पहुंचे। जैसे गर्भिणी तथा बच्चों को दूध पिलाने वाली स्त्रियां, वृद्ध और बालक परन्तु इनको भी कारण निवृत्त होनेपर उतनेही दिन दूसरे समय व्रत करना पड़ता है और रोज़े के भंग होने के प्रायश्चित्त में दीनों को दान कहा गया है। जैसे और बातों में इसीतरह व्रत के नियममें भी मुहम्मद ने यहूदियों ही का अनुकरण किया है । यहूदी भी अपने व्रतों में भोजन, पान, स्त्री प्रसंग और अभ्यंग सूर्योदय से सूर्यास्त तथा तारागण देख पड़ने तक नहीं करते। रात्रिमें मनमाना आहारादिक व्यवहार करते हैं और उनके यहां भी गर्भिणी तथा शिशुस्तन्य पायनी स्त्रियां और वृद्ध और बालकों को बहुधा सार्व जनिक उपवासों से छुट्टी है। इच्छा पूर्वक (अर्थात् जिसे अपनी इच्छाऽनुसार मनुष्य करै वा न करै) व्रतों के विषय में भी यहूदियों कीही नकल मुहम्मद ने की है इसके दृष्टान्त में अलकजवानी का लेखहै कि जब मुहम्मद नें मदीना पहुंचकर यहूदियों के अशूरा के दिन उनके व्रत उपवास को देखा तो कारण पूछने पर लोगों ने उनसे कहा कि इस दिन फिरऔन और उसके लोग सब डूबे थे मूसा और उसके संगी बचगये थे तिसपर मुहम्मद ने भी कहा कि हमारा सम्बंध मूसा से तुम लोगों की अपेक्षा अधिक निकटवर्ती है इसलिये अपने अनुयायियों को भी उसदिन रोज़ा रखने का आदेश उन्हों ने किया। पीछे से जब अपने मतके नियमों में यहूदियों के अनुकरण मात्र पर उनको कुछ घृणा उत्पन्न हुई तो उन्होंने कहा कि यदि एक वर्ष और भी हम जीवित रहे तो इस दिनके स्थान में रोज़ा के लिये नवमां दिन नियत करेंगे जिससे यहूदियों के नियमों से इतना समीपी मेल हमारा न रहै। मुहम्मद के आचरण से अथवा

उनके अनुमोदन से पवित्र मासों के कुछ दिन " इच्छापूर्वक "रोज़ों में माने गये हैं उनकी कहावत थी कि पुण्यमास के एक दिन का रोज़ा अन्य मासों के तीस रोज़ों के तुल्य होता है और रमज़ान मास के एक रोज़ा को अन्य पुनीत मासों के तीस रोज़ों के तुल्य मानना चाहिये। इन पुनीत दिवसों में असूरा अर्थात् मुहर्रम का दशवां दिन माना गया है इसके विषय में बाज़े लोग तो कहतेहैं कि मुहम्मद के समय से पूर्व मेंही अरब लोग और विशेषतः कुरेश कौम " असूरा " के दिन व्रत करते थे तथापि औरों का दृढ़ता से कथन है कि मुहम्मद ने " असूरा " का नाम और उसके व्रत का अनुकरण यहूदियों सेही किया है उनके यहां यह उनके सातवें मास का दशवां दिन कहाता था जिसको बड़ा पावन दिवस मानने के लिये मूसा का आदेश है॥

मक्का व हज्ज का पूरा बयान।

मक्का की हज्ज उनके धर्म का इतना आवश्यक अंग मानागया है कि मुहम्मद की कहावत के अनुसार बिना हज्ज के जो मुसलमान् मरता है उस में और ईसाई या यहूदी में कुछ विशेष अन्तर नहीं और इस हज्ज के निमित्त कुरान का स्पष्ट ही आदेश है। मक्का की मसजिद का वर्णन भी कुछ करना उचित है क्योंकि बहुतेरे लेखकोंने इसकी इमारत के वर्णन करने में बहुत गलतियां भी की हैं अरबी ग्रंथकारों के वर्णनमें भी अन्तर भेदहैं जिसका कारण यहहै कि भिन्न२ समयों में उन्होंने लिखा है। मक्का की मसजिद नगरके मध्यमेंस्थित है और मस्जिद अलहराम " पवित्र अराध्य मंदिर " के नाम से प्रसिद्धहै। मख्यरूपसे आदरणीय स्थान और जिससे समग्र मस्जिद पुनीत होती हैं एकतो चतुष्कोण इमारतपत्थर की " काबा " नामक है जिसका यह नाम यातो मक्का में सब इमारतों से उच्च होने के

कारण अथवा चतुष्कोणाकार होनेसे पड़ाहै, और दूसरा "वैतअल्लाह" अर्थात् भगवान् आलय है जो विशेषरूपसे परमेश्वर की आराधना के निमित नियत है । इस मस्जिद की लम्बाई उत्तर दक्खिन २४ हाथ पूरव पश्चिम चौड़ाई २३ हाथ और ऊंचाई २७ हाथ है। पूरब की ओर इसका द्वारहै जो धरतीसे चार हाथ ऊंचा है और मस्जिद का सहन द्वार की वेदी से समधरातल है । इस द्वार के समीप में प्रसिद्ध काला पाषाण है जिसका वर्णन पीछेसे करेंगे ॥

काबासे उत्तरकी ओर पचास हाथ लम्बे अर्द्ध गोलाकार घेरे के भीतर, श्वेत पत्थर है जिसको इशमईल की कब्र (समाधि) कहते हैं जिसमें एक नल द्वारा जो पहिले काठका था अब सुवर्ण का बन गया है वर्षा का जल " काबा ,, से बहिकर आता है। काबा कीछत दोहरी है भीतर तीन लकड़ी के अठ पहलू स्तम्भोंके आधारपर स्थित है और इन स्तम्भों के बीच में लोहे की छड़पर चांदीके लम्प लटकते हैं। इसका वाह्य भाग बहुमूल्य बेल बूटेदार सुवर्णकी पट्टीसे भूषित स्याह जामदानी से मढ़ा हुआ है। यह प्रति वर्ष बदली जातीहै पहिले तो उसे खलीफ़ भेजा करते हैं तत्पश्चात् मिश्र के सुलतान और अब रूम के बादशाह प्रस्तुत करते हैं। क़ाबा से थोड़ीही अन्तर पूरबकी ओर इब्राहीम का धाम है वहां पर एक दूसरा पाषाण है जिसका मुसलमान बहुत आदर मान करते हैं इसका भी ज़िकर आगे किया जायगा। काबा कुछ दूरपर स्तम्भोंके गोलाकार अहातेसे घिराहुआ है परन्तु पूर्णतः नहीं यह स्तम्भ नीचे तले की ओर तो छोटे स्तम्भों की पांति से और सिरेको ओर चांदी को छड़ों से मिले हुए हैं। इस अभ्यन्तरिक अहाते के ठीक बाहरही क़ाबाकी दक्खिन उत्तर और पश्चिम की ओर तीन इमारतें हैं जहां तीन मुख्य सम्प्रदायों के मुसलमान अपनी २ इबादत के निमित एकत्रित होते हैं चौथी सम्प्रदाय अलशाफीई के लोग इस निमित्त इब्राहीम के धाम को काम में लाते हैं

दक्खिन पूरब (आग्नेय) की ओर वह इमारत है जिसके भीतर कुप ज़म ज़म कोष (खज़ाना) और गुम्बज अल अब्बास हैं। इन सब इमारतों के चारों ओर बहुत दूर तक विशाल चौकोण खम्भों की पंक्ति लंदन नगर के रौयेल एक्सचेन्ज की स्तम्भ पंक्ति के सदृश परन्तु उससे बहुत अधिक बड़ी है जो अनेक छोटे २ गुम्बजों से आच्छादित हैं जिनके चारों कोनों पर उतनेही दोहरे छज्जेदार अर्ध चन्द्राकार सुनहले शिखरों से अलंकृत उच्च मीनार जैसे कि समग्र इस विशाल पंक्ति और अन्य इमारतों के गुम्बजों पर हैं उस की शोभा को बढ़ाते हैं। दोनों अहातों के स्तम्भों के बीच में अनेक लम्प लटका करते हैं और रात्रि के समग्र बराबर प्रज्वलित रहते हैं। इस बाहरी अहाते की नींव द्वितीय खलीफ, उमर ने डाली थी और एक नीची दीवाल बनाकर छोड़ दिया था कि जिससे कावा के खुले हुए सहन में जिनकी इमारतें बनाकर लोग आक्रमण न कर सकें परन्तु पीछे से अनेक शाहजादे और बड़े अमीरों ने उदारता पूर्वक इस इमारत को वर्त्तमान् दे दीप्तमान अवस्था को पहुंचा दिया है मसजिद तो इतनेही विस्तार में है परन्तु मक्का की समग्र भूमिही (हराम) पवित्र समझी जाती है। इसके अतिरिक्त तीसरा अहाता भी है जिसमें कुछ कुछ अन्तर पर छोटे छोटे कंगूरे नगर से कोई पांच मील, कोई सात मील और कोई दश मील तक के अन्तरपर बने हुये हैं। इस घेरे के भीतर वैरी पर आक्रमण करना अथवा पशु पक्षी को आखेट या वृक्ष की शाखा काटना भी मना है। यही ठीक कारण है जिस से मक्का के कबूतर पूज्य (पवित्र) समझे जाते हैं॥

मुहम्मद से कई शताब्दी पहिले के अरब लोग मक्का का मसजिद को अपना पूजन स्थान मानते थे और बहुत प्राचीन काल में भी उसकी मान मर्य्यादा करते थे। यद्यपि पूर्व में किसी मूर्ति का मन्दिर ही होगा तथापि मुसलमानों का तो बिश्वास है कि प्रायः

सृष्टि के आदि से ही काबा की स्थिति है। उनका कथन है कि स्वर्ग से आदम पतित हुए तो परमेश्वर से प्रार्थना की कि स्वर्गीय "बेत अल मामूर" और कपल हो राह जिस की ओर नमाज़ पढ़ा करें और जिसको वहां देखा था उसकी सी इमारत बनाने की आज्ञा मिलै और उसे उसी प्रकार घेर लेवें जैसे फिरिश्तों ने स्वर्ग में घेरा बनालिया है। इस प्रार्थना पर परमेश्वर ने ज्योतिष रूप पर्दों में उसकी तसवीर नीचे गिराकर मक्का में असली इमारत के ठीक लम्बाकार नीचे स्थापित करदी और आदम को आज्ञा दी कि इसी की ओर मुखकरके नमाज़ पढ़ा करो और उसका घेराभी भक्ति पूर्वक बनालेउ आदम के मरने पर उनके पुत्र सेठने एक गृह उसी आकार के पत्थर और मिट्टी का बनवाया।

तूफ़ान में जब यह बहिकर नष्ट होगया तब इब्राहीम और इशमईल ने परमेश्वर की आज्ञा से उसे फिर से ठीक उसके पूर्वही के स्थान में और उसी नमूनेका बनवाया और इसके निमित्त उनको स्वतः प्रकाश अनुभव हुआ था। कईवार इसका पुनरुद्धार होता रहा पश्चात् में मुहम्मद के जन्म से कुछ वर्ष पहिले कुरेश लोगों ने प्राचीन नींवपर उसे बनवाया और पीछेसे उसकी मरम्मत अब्दुल्ला-इब्न ज़ोबेर ने की थी जो मक्का के खलीफ़ा थे और अन्त में फिर इसको सन् ७४ हिजरी में हिजाज इब्न यूसुफ़ ने कुछ अदल बदल करके बनवाया। उसी प्रकार में अब इसकी वर्त्तमान अवस्था है। कुछ वर्षों के पीछे खलीफ़ा हारूं उल रशीद ने या बाज़ लोग उनके पिता मोहदी अथवा उनके पिता अल मनसूर को बतलाते हैं कि हिजाज की की हुई अदल बदल को मिटाकर प्राचीन आकार ही में जैसा कि अब्दुल्लाह ने छोड़ा था फिरसे बनाने की इच्छा की परन्तु सोच विचार करके इस डर से कि आगे चलके जो राजा बादशाह जिसप्रकार चाहैगा इसको मन माना अदल बदल किया करैगा जिस

से उसके गौरव और मान में हानि पहुंचेगी इसके बनाने का विचार त्याग दिया। यद्यपि यह स्थान इतना प्राचीन और पवित्र माना जाता है परन्तु मुहम्मद की कहावत के अनुसार एक भविष्य वाणी भी है कि अन्त में यूथियोअन्स लोग आकर इसको नष्ट करदेंगे और फिर कभी यह मसजिद न बनायी जायगी। दो तीन बातों का वर्णन इस मसजिद के विषय में करना और भी है एक तो प्रसिद्ध काला पत्थर चांदी से जड़ा हुआ काबा के दक्खिन पूरब के कोणमें जिसका मुख बसरा नगर की ओर को है ज़मीन से २½ हाथ ऊंचा लगा हुआ है।

इसका मान मुसल्मान बहुत ही करते हैं। यात्री इसको बड़ी भक्ति से चुम्बन करते हैं और उसको पृथ्वीपर परमेश्वर का दाहिना हाथ मानते हैं। इसकी एक कहानी प्रचलित है कि यह स्वर्ग के अमूल्य मणियों में से है और आदम के संग इसका भी भूमिपर पात हुआ था और फिर भी स्वर्ग में यह पहुंच गयाथा वा किसीप्रकार तूफ़ानमें इसकी रक्षा होगई थी। जिस समय इब्राहीम काबाको बना रहे थे तो जिबराईल ने लाकर उनको दिया। पहिले तो इसका वर्ण दुग्ध से भी अधिक श्वेत था परन्तु किसी रजस्वला स्त्री के स्पर्श से वा मनुष्यों के पापों से अथवा इतने लोगों के स्पर्श और चुम्बन से इसके बाहर का भाग स्याह होगया है भीतर का अंश अब भी श्वेत ही है। जब कि कारमेटिन्स लोगों ने मक्का को अनेकप्रकार से भ्रष्ट और अपवित्र किया तो इस पत्थर को भी वह लोग उठाकर ले गये थे और मक्कावाले पांच सहस्र सुवर्ण मुद्रातक इसकेलिये देतेथे परन्तु किसी प्रकार वह लोग इसको लौटाने पर राज़ी नहीं होतेथे। परन्तु २२ वर्ष उसे अपने पास रखकर जब यह देखा कि किसीप्रकार से मक्कासे यात्री इसके निमित्त वहां नहीं जाते। तब अपनी ही इच्छासे उसको मक्का में वापिस भेज दिया और यह भी व्यंग बोलते रहे कि

असली पत्थर यह नहीं है परन्तु उसमें जलपर उतराने का गुण है इससे यह असली ही पत्थर प्रमाण ठहराया गया है। इब्राहीम के धाम में भी एक पत्थर है जिसमें उनके चरण अङ्कित बतलाते हैं कि इस पर खड़े होकर उन्होंने काबा बनवायाथा और यह उनको मचान का काम देताथा। जब जैसा चाहते तो आपसे उठजाता और उतरि आता था। यह भी बाज़ लोग कहतेहैं कि जब वह अपने पुत्र इशम-ईल से मिलने गये थे तो इसपर वह खड़े हुये थे उससमय इशमईल की स्त्री ने उनका सिर धोयाथा। जिससमय दूसरे पत्थरको बलात्-कार कारमेटिअन्स लोग मक्का से ले गयेथे मसजिद के अधिकारियों ने इस पत्थर को छिपा लिया था। अन्त में ज़मज़म कूप का वर्णन करना भी उचित है। इस कूपके ऊपर काबा की पूरब की ओर एक छोटीसी इमारत और गुम्बज़है। मुसल्मानों का विश्वास है कि यह वही सोता है जो इशमईल के उपकारार्थ निकला था जब कि उनकी माता "हागर" उनको लेकर रेगिस्तानमें भटकती फिरी थी और इस सोते को देखकर उसने अपने पुत्र इशमईल से मिश्र की भाषा में "ठहरो, ठहरो" पुकार कर कहा था। नाम इसका कदाचित् इसके जल के गरगराहट के शब्द से रक्खा गया प्रतीत होता है। इस कूप का जल अति पवित्र मानकर लोग इतना इसका मान करते हैं कि भक्तिपूर्वक पीते ही नहीं बल्कि बोतलों में भर भर के मुसल्मानी प्रदेशों में इसे भेजतेहैं। अब्दुल्लाह अलहाफ़िज़ जिसकी स्मरणशक्ति की बड़ी प्रशंसा है विशेष करके मुहम्मद की कहावतों के याद रखने में उसने ज़मज़म कूप के जल के बहुत पीने के प्रभाव से ही अपनी स्मरण शक्ति का प्राप्त होना प्रकाश किया है।

जिस मुसलमान को धनकी सामर्थ्य तथा शारीरक स्वास्थ्य है उसके लिये मक्का की हज्ज करना कमसे कम एकबार तो अत्या-वश्यक माना गया है स्त्रियों के लिये भी यह कर्त्तव्यही है। मक्का के

समीप भिन्न २ स्थानों में अपने २ देशों के अनुसार यात्री "शवाल' और "धुलकादा" मासों में एकत्रित होते हैं "धूअलहज्ज" महीना के प्रारम्भमें वहां पहुंचजाना चाहिये। यही मास हज्ज के लिये अधिक पुनीत माना गया है।

उपरोक्त स्थानोंमें पहुँचकर यात्री अपना हज्ज प्रारम्भ करते हैं अर्थात् पवित्र वस्त्र इसके उपयुक्त पहिनते हैं। दो ऊनी बेटन लेकर एक से छिपे अंगों को ढकते हैं और एक को कन्धों पर डालते हैं। सिर नंगा रखते हैं और एक प्रकार का ढीला जूता पहिन लेते हैं। जिससे नतो एड़ी और न भीतरके पञ्जे ढक सकें। इस प्रकार मक्का के पवित्र देश में प्रवेश करते हैं। इस पोशाक को पहिने हुए नतो वह शिकार करते हैं और न पक्षी मारते हैं। मछलीफसानेका निषेध नहीं है और इस पर इतनी दृढ़ता रखते हैं कि जुआं व मक्खी मच्छड़ भी उनके शरीर पर हो तो उसे भी न मारेगे। चील, कौवा, बिच्छू, चूहे, और कटखने कुत्तों के मारनेका उनको अधिकार दिया गया है। हज्ज के समय मनुष्य को बहुत सावधानी अपनी वाणी तथा कर्म आचरण पर रखनी चाहिये। गाली गलौज व झगड़ा तक-रार से बचना औरतों से वार्तालाप तथा असभ्य बातचीतका बचाव रखकर केवल शुभ कार्य हज्जपरही तन मन लगाना चाहिये।

मक्का पहुंचतेही लोग मसजिद में तत्कालजाते हैं और विहित विधियों का आचरण करते हैं। मुख्य २ विधियां यह हैं। काबा की परिक्रमा समूहके संग, सफ़ा और मरवा पर्वतों के मध्य में दौड़ना, अराराट पर्वत पर विश्राम, बलिप्रदान और मीना घाटी में मुण्डन। लोगों ने इन सब रसूमों को विस्तार पूर्वक वर्णन किया है यहां पर उनका सार रूप दिखला दिया जायगा। काबा की परिक्रमा सात-बार करने में उस कोण से प्रारम्भ करते हैं जहां काला पत्थर गड़ा है। पहिली तीनवार की परिक्रमामें तो लघु शीघ्र क़दम से चलते हैं

पिछले चार परिक्रमा साधारण धीर गम्भीर चाल से करते हैं। इस का विधान मुहम्मद के आदेशसेही बताते हैं कि जिससे मुसलमान अपने को बलवान और फुरतीले दिखलाकर काफ़िरों का दिल तोड़ें। जो यह कहते हैं कि मदीनाकी असह्य उष्णता के कारण लोग निर्बल होगये हैं। शीघ्रता की चाल से विशेष २ अवसर परही चलतेहैं। और जै बार स्याह पत्थर के पास आवेंगे तै बार उसे यातो मुख से चुम्बन करते हैं या हाथ से स्पर्श करके हाथ को ही चूमलेते हैं।

सफा और मर्वा पर्वतों के बीच की दौड़में भी सात परिक्रमा होती हैं। कहीं धीरे क़दम से और कहीं दौड़कर चलते हैं। दो स्तम्भों के बीच में एक विशेष स्थल तक धीरे २ चलकर पीछे से दौड़ते हैं और फिर धीरे चलने लगते हैं। कभी पीछे देखने लगते हैं कभी ठहर जाते हैं जैसे किसी की कोई वस्तु खोगई हो मानों "हगार" का अनुकरण करते हैं। जब वह जल की तलाशमें अपने पुत्रके लिये रेगिस्तानमें व्याकुल थी क्योंकि यह रसम उसीके समय की प्राचीन चली आती है। धूल हज्ज की नवीं तारीख़ को प्रातःकाल की नमाज़ के पीछे मीना घाटीको लोग चलदेते हैं और एकदिन पहिलेही वहां पहुंचकर अराफात पर्वत पर धूम धाम मचाते हुये झपटकर चलते हैं और वहां ठहर कर सायंकाल को नमाज़ पढ़ते हैं। तब मुजद्लिफ़ाको जाते हैं जो अराफात और मीना के मध्यमेंहै वहां रहकर रात्रिको नमाज़ और क़ुरान के पाठमें व्यतीत करते हैं। दूसरे दिन प्रातःकाल "अलमशेर" "अलहराम" (पवित्र मकबरा) पर जाते हैं और वहां से सूर्योदय से पूर्व ही यात्रा करके बत्र मुहस्सेर होकर मीना घाटी में पहुंचते हैं जहां सात पत्थरों को तीन निशानों पर अर्थात् स्तम्भों पर इब्राहीमका अनुकरण करके फेंकते हैं। इसी स्थान में शैतान इब्राहीम को मिला था उसने उनकी नमाज़ में बाधा डाली और जिस समय वह अपने पुत्रकी बलि

देने को उतारू हुये तो शैतान ने उनको परमेश्वर की अवज्ञा करने को ललचाया। तब परमेश्वर की आज्ञासे उन्होंने पत्थरों से मारकर शैतान को भगादिया था। बाज़े कहते हैं कि यह रसम आदम के समय की है उन्हों ने भी शैतान को उसी स्थान पर उसी रीति से भगाया था।

इस रसम के हो चुकने पर उसी दिन दसवीं धूउल हज्ज को यात्री कुर्बानी मीना घाटी में करते हैं जिसमें से कुछ अंश आप अपने मित्रों सहित खाते हैं शेष दीनों को बांट देते हैं। इसके पशु भेड़, बकरी, गाय, बैल, वा ऊंट होने चाहियें। भेड़ और बकरे नर ऊंट मादीन और उम्र पशुओं की योग्य होनी चाहिये।

बलिप्रदान हो चुकने पर शिर मुंड़वाते हैं। और नाखूनों को काटकर उसी स्थानमें गाड़देतेहैं। इसके पश्चात् हज्ज समाप्त समझी जाती है। काबा में फिर भी चलते समय रुखसत होने को जातेहैं। यह सब रसमें स्वयं मुसलमान स्वीकार करते हैं कि मुहम्मद से बहुत काल पूर्वमें मूर्ति पूजक अरबलोग किया करते थे। विशेष करके काबाकी परिक्रमा, सफा और मर्वा के बीच की दौड़ और मीना में पत्थरों का फैंकना। इन सबका मुहम्मद ने समर्थन करके जहां तहां न्यूनाधिककर दियाहै जैसे पहिले तो लोग काबाकी परिक्रमा नंगेकरते थे मानों वस्त्रों का उतारना अपने पापों का उतार देना समझते थे अथवा परमेश्वरके समीपकी अवज्ञाका चिन्ह इसको मानते थे मुहम्मदने कपड़े पहिनकर काबाकी परिक्रमाकरनेका आदेशकिया। यह भी लोग स्वीकार करतहैं जिसमेंसे बहुतेरी रस्में आन्तरिक गुणवाली नहीं हैं न उनका प्रभाव कुछभी आत्मा पर पड़ता है और न स्वाभाविक बुद्धि से ग्रहण करने योग्य हैं परन्तु पूर्णरूप से यह रस्में स्वच्छन्दही हैं केवल मनुष्य की आज्ञाकारीत्व की जांच के लिये यह निर्माण की गई हैं और कुछ प्रयोजन नहीं है। परमेश्वर की आज्ञा

प्रधान समझकर उनको करनाही उचितहै स्वयं उनमें कुछ फल नहीं है। बाज़े लोगोंने उसके मूल कारण को बताने के निमित्त प्रयत्न किया है। एकग्रन्थकार का मत है कि मनुष्य को स्वर्ग के ग्रहों का अनुकरण उनके शुद्ध स्वरूपताहीमें नहीं वरन् उनकी गोलाकार गति में भी करना उचित है इसलिये काबाकी परिक्रमा को विवेक युक्त व्यवहार मानते हैं। रीलैन्ड साहब कहते हैं कि रोमवाले भी न्यूमा की आज्ञाऽनुसार अपने देवताओं के पूजन और वन्दना में एकप्रकार की गोलाकार गति का प्रयोग करते थ जिससे यातो नक्षत्र मण्डल और चक्राकार संसारकी गति निरूपण होतीहै अथवा परमेश्वर को इस ब्रह्माण्ड की रचना का मूल कारण मानकर उसकी वन्दना का पूर्ण अङ्ग इसके द्वारा कल्पना करतेथे अथवा मिश्रवालों के चक्रों के उदाहरण में जो मनुष्यके भाग्य की अनस्थिरता के चिह्न थे यह विधान किया था। मुहम्मद के और आदेशोंकी अपेक्षा मक्का की हज्ज का आदेश और उसकी सम्बन्धी रस्मों का आचरण अधिक दोष युक्त कहा जासक्ता है यह रस्में केवल स्वभाविक उपहास योग्यही नहीं वरन् मूर्तिपूजन और मूढ़ विश्वास मूलका अवशिष्ट अंशभी इन्हें कहसक्ते हैं। परन्तु इसके साथही पुरानी प्रचलित रस्मों को उन्मूलन करना साधारण काम नहीं है इससिये मुहम्मदने भी इनका प्रचलित रखना उपयुक्त समझा जिससे उनके मुख्य अभीष्ट में बाधा न हो। क़ौम टे के लोग, और कौम खाथाम तथा अलहरेथ इब्न कआब की सन्तानमें से कुछ लोग जो मक्काकी हज्ज नहीं करते थे इनके अतिरिक्त मक्का के मसजिद का मान साधारण रूपसे सबही अरब लोग अत्यन्त करते थे। मक्कावालों को तो विशेष करके इसके गौरवको स्थित रखने ही में लाभ था। छोटी २ बातें कैसोही निर्मूल और व्यर्थ क्यों न हो उनपर लोगों का आग्रह बहुधा होता है। अतः मुहम्मद ने मूर्ति पूजन का उन्मूलन तो सहज में करडाला।

परन्तु मसजिद में जो लोगोंका अनुरागथा और जो रस्में उस स्थान में प्रचलितथीं उनको लोगोंके दिलोंसे हटाना ठीक नहीं समझा वरन् मध्य मार्ग निकालकर मक्का का हज्ज और वहांपर नमाज़ का पढ़ना प्रचलित रखकर इसीपर संतोष किया कि मूर्तियों के स्थान में सत्य परमेश्वर की उपासना करें और जिन जिन बातों को अधिक गर्हित समझा उनका भी निषेध करदिया। पूर्व में बड़े २ नियामक पुरुषों का भी यही क्रमरहा है कि लोगों की रुचि के अनुकूलही नियमोंका प्रचार किया है न कि स्वाभाविक उत्तम नियमोंही को बलात्कार चलाया हो। परमेश्वर ने भी यहूदियों की क्रूरता को सहन करके उसीके अनुसार उनके निमित्त ऐसे नियम रचे थे जो अच्छे न थे और जिन से उनका नाश हो।

———:*:———

पाचवां खण्ड।

स्त्रियोंके बिवाह तलाक़ और दण्ड देने का वर्णन।

जिस प्रकार ड्यूटेरानामी यहूदियों की व्यवहार व्यवस्था का आधार है इसीप्रकार मुसलमानों के व्यवहार नियमों की संहिता क़ुरान है। इनके अर्थ लगानेमें भेद भाष्यकारों के मताऽनुसार हुआ है। विशेषतः अबूहनीफ़ा, मलेक, अलशफ़ाई और इब्न हनबल इन चार आचार्य्यों ने अपने अपने विचारों द्वारा भिन्न २ अर्थ निरूपण किये हैं उसी के अनुसार व्यवहार होता है। बिवाह और तलाक़ का विषय इस प्रकार है। बहुनारीत्व अथवा कई बिवाहिता स्त्रियों के रखने की आज्ञा क़ुरान में है परन्तु उसके साथ अवधि और परिमाण भी लगे हुए हैं। सो हर किसी को नहीं मालूम हैं। मुसलमान आचार्योंने बहुत तर्कों द्वारा इस नियम की अनुकूलता भी प्रमाणित की है। बहुत से बिद्वानों को यह भ्रम रहा है कि मुहम्मद ने अप

अनुयायियों को मनमानी स्त्रियों से बिवाह करने की आज्ञा देती है बाज़े कहते हैं कि जितनी धरूषों का पालन पोषण मनुष्य कर सके उतनी रखने का अधिकार है परन्तु यथार्थ में क़ुरान के शब्दों से स्पष्ट है कि किसी मनुष्य को चार से अधिक बिवाहिता हों वा धरूष हों रखने का आज्ञा नहीं है और यदि चारके रखने में भी असुबिधा जानपड़े तो सम्मति रूप से यह उपदेश किया है कि बिवाह केवल एकही से करे यदि एक से तृप्ति न होवे तो अन्य लौंड़ियों में से रख लेवै नियत संख्या से अधिक कदापि न होवें। बहुधा मध्य श्रेणी के और छोटे लोग इसी उपदेश पर चलते भी हैं। इस में सन्देह नहीं कि मुहम्मद ने इस से अधिक रखने की कदापि आज्ञा नहीं दी है। बिषयी मुसलमान मनमानी स्त्रियां और अत्याचार रूप भोग विषय में आसक्त होते हैं तो यह प्रमाण इस बात का नहीं हो सक्ता कि मुहम्मद ने क़ुरान में अगणित बिवाहिता स्त्रियों के लिये आज्ञा दी है। धनी और प्रतिष्ठित लोगहो बदचलनीके कारण क़ुरान के बिरुद्ध आचरण करते हैं और मुहम्मद को नज़ीर भी कि उन्होंने मनमानी स्त्रियोंको रक्खा था उदाहरणमें नहीं देसक्ते क्योंकि उनको तो विशेष रियायती अधिकार इस विषय में तथा अन्य बातों में भी थे। मुहम्मद ने यहूदी आचार्य्यों की व्यवस्थाका अनुकरण इस संख्याके परिमित करनेमें कियाहै। यहूदी नियमों से तो कोई संख्या स्त्रियों की नियत नहीं है परन्तु सम्मति (सलाह) रूप से उनके आचार्य्यों ने चार से अधिक न रखने की शिक्षा की है। तलाक़ का अधिकार भी मुहम्मद और मूसा दोनोंही के नियम में रक्खा गया है इतना भेद है कि मूसा के नियम में तलाक़ होने पर स्त्री दूसरे से बिवाह करलेवे या उसकी मगनी होजाय तो फिर उसको तलाक़ करनेवाला नहीं रखसक्ता परन्तु मुहम्मदी नियमद्वारा ऐसा नहीं है। उन्होंने इस बातको रोकने के लिये कि छोटी २ बातपर लोग तलाक़

न करदें अथवा स्वभाव की चंचलता वश तलाक़ जायज़ नहो उन्हों ने आदेश कियाहै कि दो तलाक़ तकतो फिरसे स्त्री पुरुषमें राज़ीनामा होसक्ता है परन्तु तीसरी तलाक़ होजाने पर जबतक वह स्त्री दूसरे पति से बिवाह करके उसके संग सहवास न करले और वह दूसरा पति जब तक तलाक़ न दे वै तब तक पहिले पति को अधिकार रखने का नहीं है। दो दफ़े तलाक़ कर चुकनेपर तो यदि पश्चाताप करे तो पति स्त्री को पुनः रखसक्ता है। इस पूर्वोपाय से इतना अच्छा फल हुआ है कि यद्यपि तलाक़ के लिये स्वतंत्रता है तथापि कोई भलामानस जिसको किंचित् विचार भी अपनी मान मर्य्यादा का है कभी तलाक़ के लिये उद्यत नहीं होता। इतनी भारी हतक उसको मानते हैं कि जो नियम फिर से रखने का किया गया है उसके अनुसार स्त्री को फिर से ग्रहण अति निर्लज्ज लोगों के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं करता है। यहूदी और मुसलमान दोनों के नियमानुसार पतिको तो अल्प कारण परभी अपनी बिवाहिता को तलाक़ का अधिकार है परन्तु स्त्रीको अपने पति से अलग होने की आज्ञा नहीं है क्रूरता और निष्ठुरता का व्यवहार यदि पति करै वा पालन पोषण उचित रीति से न करै सहवास में उपेक्षा करै नपुंसकहो वा ऐसाही कोई भारी कारण द्वारा स्त्री पति को छोड़ सक्ती है परन्तु उसमें भी यदि स्त्री अपनी ओर से तलाक़ करती है है तो उसको मिहर (स्त्री धन शुल्क) से बञ्चित होना पड़ताहै पति के तलाक़ करने पर स्त्री धन में हानि तबही पहुंच सक्ती है जब कि स्त्री को पति की आज्ञा भंग का दोष अथवा अतिशय दुराचार साबित करदिया जाय।

स्त्री को तलाक़ हो चुकने पर तीन बार मासिक धर्म तक अथवा वय के कारण उसके मासिक धर्म में संदेह हो तो तीन मास पर्य्यन्त उसको अन्य पति से बिवाह करने में प्रतीक्षा करनी कुरान

के आदेशानुसार अवश्य है। तीन मास व्यतीत होनेपर यदि गर्भवती नहीं है तो मन माना जो चाहे सो करै परन्तु गर्भ हो तो प्रसव तक उसे ठहरना ही पड़ेगा। इस प्रतीक्षा काल पर्य्यन्त उसको अधिकार दिया गया है कि अपने पति के घरमें रहे तथा उसके भोजन वस्त्र का भार भी पतिको उठाना पड़ेगा। यदि व्यभिचारिणी न हो तो नियत काल के भीतर स्त्री को घर से अलग करना मना कियागया है। यदि पति के संगसे सहवास से पूर्वही तलाक़ न होवे तो उसके लिये प्रतीक्षा का काल कोई भी नियत नहीं है और न पतिको आधे स्त्री धन से अधिक देना पड़ता है। त्यागी हुई स्त्री को बच्चा गोद में हो तो दो वर्षतक बच्चे को स्तनपान कराना पड़ैगा और इस काल में पतिही सब प्रकार उसका पालन पोषण करैगा। विधवा के लिये भी यही नियम है और पुनर्विवाह करने में ४ मास और दश दिन उसे प्रतीक्षा करनी पड़ती है। इन नियमोंका अनुकरण भी यहूदियों से ही किया गयाहै। उनके यहां त्यागी हुई स्त्री अथवा विधवा ९० दिनके पीछे दूसरे के साथ विवाहकर सक्ती है और प्रसूता स्त्री का पालन पोषण बालकके जन्मसे दो वर्ष पर्य्यन्त पतिको करना पड़ता है इस अवधि के भीतर उसे पुनर्विवाह की आज्ञा नहीं सिवाय इस के कि जो बालक इस अवधि के अन्तरही में मरजाय अथवा स्तन सूख जाय। इसलाम की आदि अवस्था में व्यभिचार का दंड कुमारी और विवाहिता स्त्रीके लिये कठोर नियत कियागयाथा। व्यभिचारिणी को मृत्यु पर्यन्त कारागार में रखने की आज्ञा थी परन्तु पीछे से सोना के नियमानुसार व्यभिचारिणी स्त्री को पत्थरों से मारना और कुमारी को सौ कोड़े लगाने का दंड और एक वर्ष के लिये देश से बाहर निकाल देना नियत किया गया था। लौंडीबांदी व्यभिचारिणी हो तो उसे सामान्य स्त्री से आधा दण्ड मिलना विधि है अर्थात् ५० कोड़े और छः मास का देश निकाला परन्तु जान से

नहीं मारी जाती हैं। स्त्री के व्यभिचार दोष निश्चय के लिये चार पुरुषों का साक्ष्य प्रमाण अवश्य है । और व्यभिचार दोष मिथ्या ठहरे अथवा चार पुरुष साक्षी न प्राप्त हासकैं तो जिसने दोषारोपण कियाहै उसे अस्सी कोड़े लगने का दण्ड मिलता है और आगे चल के उसकी साक्ष्य प्रमाणिक नहीं मानी जायगी । कुरान के अनुसार स्त्री वा पुरुष दोनों के लिये व्यभिचार का दंड एकसौ कोड़ा नियत हैं । अपनी विवाहिता को अभियोग व्यभिचार का लगावे और उचित रूप से साबित न करसकै तो उसे चार बार शपथ सहित कहना पड़ता है कि यह दोषारोप सत्य है पांचवीं बार कहै कि "यदि मिथ्या दोष लगाता होऊं तो परमेश्वर का प्रत्युपकार मुझ पर पड़ेगा" तब वह स्त्री पर दोष सिद्ध समझा जायगा परन्तु यदि स्त्री भी उसीप्रकार की शपथ द्वारा अपनी निर्दोषता स्थापन करै तो वह दंडभागी न होगी परन्तु दम्पति के विवाह सम्बन्ध का उच्छेद हो जायगा । प्रायः यहूदियों के नियम मुहम्मदी नियमों से इस विषय में मिलते हैं। मूसा के नियमानुसार बिवाहिता स्त्री और जिस कन्या की मगनी (सगाई) होगई है व्यभिचार दोषका दंड मृत्युही रक्खा गया है और जिस पुरुष ने उन्हें भ्रष्ट किया हो उसके लिये भी यही दंड रक्खा गया है । साधारण जार कर्म का दंड कोड़ों की मारहै । बांदी लौंडी जिसकी मंगनी होगईहै पर पुरुष सेवी होतो उसे भी यही दंड मिलनाचाहिये । स्वतंत्र न होनेके कारण जानसे नहीं मारी जाती । इसी नियमानुसार केवल एक पुरुष की (हलफ़) साक्ष्य पर मौत दण्ड नहीं दिया जाताहै । जो मनुष्य अपनी स्त्रीको मिथ्या दोष व्यभिचारका लगावे उसको भी कोड़ों का लगना और एक सौ रुपया जुर्माना दंड नियत था । मुहम्मद ने स्त्रीसे शपथ लेने का नियम जो रक्खाहै वहभी तद्वत् यहूदियों के यहां पूर्वमें प्रचलित था । मूसा के नियम से मुहम्मद का नियम स्त्रियों को रजोधर्म में

दूषित करने में बांदियों को धरूष रखने में और विवाह सम्बन्धका विशेष कोटियों के बीच निषेध में बहुत कुछ एकसां ही है। वर्जित कोटियां विवाह को मूर्ति पूजक प्राचीन अरबों के यहां यह मानी गई थी माता, कन्या, चाची, बुआ, मौसी, और दो सगी बहिनों के संग विवाह अत्यन्त बुरा समझा जाता था। अपनी विमाताके साथ विवाह यद्यपि बहुधा पूर्व में होता था परन्तु मुहम्मद ने स्पष्ट रूपसे कुरान में निषेध करदिया है। अन्य मुसलमानों की अपेक्षा विवाह के विषय में मुहम्मद ने अपने लिये परमेश्वर की विशेष आज्ञा का मिलना प्रकाश किया है। एक तो यह कि चाहे जितनी विवाहिता स्त्री और चाहे जितनी धरूखें रख सक्ते हैं संख्या नियत कोई नहीं थी और वह कहते थे कि यह अधिकार (रियायत) उनसे पूर्व के पैग़म्बरों को भी मिली थी। दूसरी यह कि अपनी स्त्रियोंके संगमें उनको सहवास के क्रम का अनुबन्ध साधारण लोगों की तरह नहीं होगा जब चाहें बिना क्रमके ही अपनी स्त्रियों में से किसीसे प्रसंग करें। तीसरी यह कि जिनको वह तलाक़ करें अथवा विधवा छोड़ मरें उनके साथ अन्य कोई विवाह न कर सकैगा। इस तीसरी रियायत का सादृश्य यहूदियों के उस नियम से है जिसमें राजाओं की तलाक़ की हुई अथवा विधवाओं के संग अन्य प्रजावर्ग में से कोई विवाह न कर सकैगा। अतः मुहम्मद ने भी अपने पैगम्बरी के दर्जे की प्रतिष्ठा यहूदी बादशाहों से कम न समझी जाय इस हेतु से अपनी विधवाओं के निमित्त पुनर्विवाह का निषेध करदिया था। यद्यपि अभिप्राय तो मुहम्मद का यही था कि प्राचीन मूर्तिपूजक अरबों में विधवा और अनाथ बालकों के साथ बांट हिस्सा में अन्याय का प्रचार न रहै जिससे बहुधा लोग विधवाओं को और बालकों को पति और पिता के धनसे बिलकुल बंचित रखतेथे और मिष (हीला बहाना) यह करते थे कि जो लोग हथियार बांधने वा युद्ध करने में

सामर्थ्य हैं उन्हीं को धनका बांट मिलसक्ता है और विधवाओं को भी अन्य जड़ पदार्थों की तरह बांटकर उन (विधवाओं) की बिना इच्छा के भी औरों को उन्हें दे डालते थे। इस अनर्थ को रोकने के निमित्त महम्मदने स्त्रियों के आदर करने और अनाथ बालकों को हानि न पहुंचने के लिये नियम करदिया कि स्त्रियां अपनी इच्छा के विरुद्ध अन्य किसी को न दी जायाकरें और उनको भी पति और माता पिता के धनका नियत अंश(भाग)मिला करैगा। मृतकके धन के बांट में साधारण नियम तो यह है कि स्त्री को पुरुष से आधा भाग मिलै परन्तु इस नियम में कुछ निषेध रूप भी रक्खे गये हैं। माता पिता और भाई बहिन को जहां थोड़ा ही अंश मिलने को है समग्र धन मृतक का नहीं मिलता हो तहां यह नियम कर दिया है कि लिंग का भेद न माना जाय तुल्यभाग स्त्री पुरुष को बांट में मिला करे। जो विवरण कुरान में भागों के किये गये हैं उस से मुहम्मद की न्याय शीलता स्पष्ट रूपसे प्रगट होती है उन्हों ने पहिले आत्मजों का हक़रक्खा है उसके पीछे निकट के सम्बन्धियों का ॥

साक्षी लेने और न्याय करनेका वर्णन।

वसियत करने में कमसे कम दो साक्षी अवश्य होने चाहिये तब ही वसियत जायज़ हो सक्ती है और वह भी जहां प्राप्त होसकें वसीयत करनेवाले का जाति और मुसलमान मत के होने चाहिये। यद्यपि कोई कानून विपरीत पक्ष की तो नहीं परन्तु आचार्य्यों का मत है कि पुण्यार्थ के अतिरिक्त धन मनुष्य के वंश के भीतरहो रहै और सो भी दान पुण्य में सब देडालने का अधिकार नहीं है परन्तु अंश मात्रही जायदाद के अनुरूप दान करना उचित रक्खा है। और जहां वसीयत द्वारा दान नहीं भी हो और दान पुण्य में कुछ अंश

नहीं छोड़ा गया है तहां वारिसों के लिये उपदेश किया गया है कि बांट के समय यदि गुंजाइश जायदाद में हो तो दानों को विशेषतः जो सगोत्र और संजातीय हैं तथा अनाथ बालकों को अवश्य कुछ अंश दान में देना चाहिये। पहिले पहिल जो विरासत के बांट का नियम मुहम्मद ने बनाया था वह तो न्याय पूर्वक नहीं था जिसमें उन्हों ने उनलोगों को जो उन के साथ मक्का से भागकर गये थे और जिनलोगों ने मदीना में उनकी रक्षा की थी और सहायताभी की थी वह लोग गोत्रजों की अपेक्षा निकटतर और अंश के भागी परस्पर माने जांयगे यहां तक कि मुसलमान भले ही क्यों न हो परन्तु मत के निमित्त जो भाग कर देश से न गया हो और पैगम्बर से न मिला हो तो उसे अजनबी ही समझना चाहिये परन्तु यह नियम थोड़े ही काल पीछे मन्सूख कर दिया गया था। यह विदित रहै कि मुसलमानों में वेश्यायों वा लौंडी बांदियों और धरूषों की सन्तान भी तुल्य रूप से बिवाहिता स्त्रियों की सन्तान के समान भागी मानी जाती है। सामान्य स्त्रियों से उत्पन्न हुई संतान और जिनके पिता अज्ञात हैं उनके अतिरिक्त हों मुसलमानों में जारज और दासी पुत्र कोई भी नहीं समझे जाते।

मनुष्यों में परस्पर जो प्रतिज्ञा होती हैं उनको धर्म पूर्वक पूर्ण करने की शिक्षा कुरान में है। झगड़ा फिसाद निवृत करने के हेतु (मुआहिदा) प्रतिज्ञा साक्षियों के समक्ष में होनी चाहिये और जहां पर प्रतिज्ञा पत्र तत्काल (अमल) व्यवहार में नहीं आसके तहांके लिये लेखबद्ध करने की रीति कमसे कम दो साक्षियों की मौजूदगी में रक्खी गई है। साक्षी दोनों पुरुष मुसलमान होवें। यदि सुविधा से न प्राप्त हो सकें तो एक पुरुष और दो स्त्रियां होनी चाहिये। कर्ज़ों के विषय में भी जो आगे चल के बेराज़ होगा यही नियम रक्खा गया है। और जहां लेखक मिलसकैं तहां (बचन प्रण)

जबानी मुआहिदा करलेना चाहिये। इसलिये जहां लोगों में परस्पर विश्वास के आधारही पर विना किसी प्रकार के लेख साक्षी और प्रण के व्यवहार किया हो तहां जिस मनुष्य पर दावा किया जाता है तो उस के हलफ़ पूर्वक इन्कार करने पर उसे मुक्त कर देते हैं। सिवाय उस अवस्था के कि जहां और और बातों से दावा करने वाले का बयान सत्य प्रमाणिक ठहरता हो। स्वेच्छित हत्या का निषेध यद्यपि कुरान में परलोक के कठोर दंड की भय द्वारा निवारण किया गया है तथापि उस में राज़ी नामा भी मृतक के कुटुम्ब को यथोचित धन देकर और एक मुसलमान को क़ैद से मुक्त कर देने से होने का निर्वाह लिखा गया है यद्यपि मृतक के नजदीकी सम्बन्धी की इच्छा पर ही निर्भर रक्खा है कि स्वीकार इसे करै या न करै उसे अधिकार है कि घातक को हठ कर के अपने सपुर्द कराके चाहै तिस प्रकार उसको मारडाले। इस विषय में मूसा का नियम इस से भिन्न है मूसाने हत्या का कोई परिहार ही नहीं लिखा है परन्तु मुहम्मद ने अधिकतर अरबों की अपने समय में प्रचलित रीतिपर ही ध्यान देकर उनके वैर साधन शील स्वभाव का समर्थन कियाहै। समग्र जाति की जाति स्वाधीनता के कारण ऐसे अवसरों पर घोर युद्ध करती थी क्योंकि कोई न्यायाध्यक्ष वा प्रबल प्रधान उनलोगों का शासन कर्ता न था जो न्याय पूर्वक दण्ड दे सकै। स्वेच्छक कतल में मुहम्मद का नियम हलका ही है परन्तु अज्ञानता किसी मनुष्यकी प्राण हत्या कोई करै तो उसके लिये कठोर दंड नहीं रक्खा है अर्थात् अर्थ दंड और एक कैदी की मुक्ति करने ही से उसका निर्वाह होगा। अतिरिक्त इसके नज़दीकी संबन्धी इस अर्थ दंड को दया कर के छोड़देवैं परन्तु यदि इस अर्थ दण्ड और कैदी मुक्त करने में अपराधी पुरुष असमर्थ हो तो दो मास का उपवास करना इसके प्रायश्चित में लिखा है। सुन्ना में अर्थदंड की संख्या एकशत ऊंटों की है ज

मृतकके कुटुम्बियों को विरासतके नियमानुसार बांट देना चाहिये। परन्तु जो मनुष्य मारागया है वह मुसलमान भलेही हो यदि बैरियों और विरुद्ध पक्ष वाले समाज या फ़िरकेका हो अथवा मारने वाले की जमाइत से उसका मेल नहीं है तो उस अवस्था में अर्थ दण्ड देना पूर्णरूपसे आवश्यक नहीं रक्खा गया है एक क़ैदी का मुक्तकर देनाही उचित दंड समझाजाता है। ऐसा घोर दंड अनैच्छिक हत्या का मुहम्मदके नियत करनेका कारण यही मालूम होता है कि लोग इस हत्या के करनेसे बचे रहैं और विशेषतः यह था कि अरबवालों का स्वभावही प्रत्युपकारी (बदलालेनेका) था वह कदापि हलके दंड से संतुष्ट न होते। यहूदी भी अरबों की अपेक्षा बैर साधन स्वभाव में कम न थे उनके नियमाऽनुसार अनैच्छक हत्यारा भागकर किसी अन्य नगर में शरणलेवे तो उसको वहीं नगर के भीतर उतने काल तक रहना पड़ता था जब तक कि धर्माध्यक्ष आचार्य जिसके समय में यह घटना हुई थी जीवित रहै जिससे यह होता था कि मृतक के सम्बन्धी और मित्रों का क्रोध काल के व्यतीत होनेसे और घातक के परोक्ष में रहनेसे शान्ति होजाता था। यदि घातक अपने शरण लेने के स्थान को इस नियत अवधि से पूर्व त्याग देवै तो मृतकके नज़दीकी सम्बन्धी को अधिकार दिया गया था कि उसे मारडाले और घातक जो घर पर नियत अवधि से पूर्व लौटि आवै तो उसके लिये कोई निर्धार नहीं रक्खा गया था।

चोरोंका दंड हाथका काटडालना इस तरह से न्यायही प्रतीत होता है परन्तु अस्टीनियनका कानून से अङ्ग भङ्ग करना मानो चोर को जिसने निर्धनता के हेतु से चोरी की थी न्याय पूर्वक जीविका उपार्जन से आगे के लिये वंचित करना है। सुन्ना में भी इस दंडका निषेध रक्खा है जब तक विशेष मूल्य की वस्तु न चोरी गई हो। शारीरिक चोट और हत्याओंका दंड मूसाके नियमाऽनुसार "अर्थात्

के बदल आंख दांत के बदले दांत" इसीका समर्थन मुहम्मद ने भी कुरान में किया है। परन्तु इस नियमका अमल बहुत कठिन है इस से जुरमानाही उसके बदले में वसूल करके जिसको क्लेश पहुंचाया गया है दिलवा दिया जाता है क्योंकि अभिप्राय इतनाही है कि जितना अपराध हो उसीके अनुसार न्यायाध्यक्ष दंड देवै। छोटे २ अपराधों के लिये जिनका विवरण कुरान में नहीं किया गया है साधारण दंड लगुड़ प्रहारही रक्खा गया है जिसके भय द्वारा प्रजा अपने २ धर्म पर स्थिति रहती है क्योंकि दंड अर्थात् लगुड़ को परमेश्वर से उतरा हुआ मानते हैं।

यद्यपि मुसलमान कुरान को अपने व्यवहार सम्बन्धी नियमों का आधार मानते हैं तथापि तुर्कोंमें सुन्नाकी व्यवस्था और फ़ारिस वालों में इमामों के विवरण तथा आचार्य्यों की व्यवस्था प्रमाण रूप हैं तथाऽपि लौकिक अदालतों में न्यायाध्यक्ष की समझ के अनुसार ही फैसले होते है जो बहुधा आचार्य्यों के विवरण से विरुद्ध भी होते हैं। इसलिये धार्मिक ग्रन्थों की नियम व्यवस्था और लौकिक इजलासों की कानून में अन्तर अवश्यही होता है।

मुहम्मदने कैसे मुसलमानोंको युद्धमें प्रवृतकिया।

कुरान के कई एक वाक्यों में काफ़िरों से युद्ध करनेकी आज्ञा कईवार लिखी गई है कि परमेश्वर की दृष्टि में यह कार्य अति पुण्य मय समझा जायगा जो लोग धर्म के निमित्त शहीद होते हैं उनको तत्काल स्वर्ग मिलता है। अतः मुसलमान आचार्य्यों ने इसकी महिमा को बहुत बढ़ाकर लिखो है सबको स्वर्ग और नरककी चाबी बताया है परमेश्वर की राह पर एक बूंद रुधिर की बहने से परमेश्वर को अति प्रिय लगता है। मुसलमानों के राज्य की युद्ध द्वारा रक्षा में एक रात्रि का व्यतीत करना दो मास के रोज़ों से अधिक

पुण्य कारी माना गया है । विरुद्ध इसके यदि युद्ध क्षेत्र को त्यागे अथवा शक्ति के अनुसार सहायता न करे अथवा धर्म युद्ध में लड़ने से मुख मोड़े तो भारी पाप का भागी होता है ऐसा करना कुरान में अति निन्दिनीय कहा गया है । अपनी सामर्थ्य जब मुहम्मद ने अच्छी तरह देखली और उसको अमल में लाने का उचित अवसर भी समझलिया तबही इस सिद्धान्त को प्रकाश किया था । अभीष्ट उनका पूरेतौर से उसके द्वारा प्राप्त हुआ और इसकी उन्हें और उनके पदाधिकारियों को आवश्यकता भी थी क्योंकि ऐसे भावों के उत्पन्न होने से उनके अनुयायी बड़े २ भयानक कार्यों (खतरों) का तुच्छ समझते थे और बड़े २ साहस युक्त बहादुरी के काम करडालते थे । अपने पक्ष वालों को उत्साहित करने में ऐसे ही वाक्य रचनाओं का प्रयोग यहूदी और ईसाईओं ने भी किया है मैमोनाईडीज़ का वाक्य है " जिसने नियम का पक्ष लेकर युद्ध में प्रवेश किया है " उसे उसका भरोसा रखना चाहिये जो कि इज़राईल की आशा का मूल है " और आपत्काल में उसका रक्षक है । उस को जानलेना चाहिये कि वह ईश्वरीय ऐक्यता स्थापन के निमित युद्ध करता है इसलिये जान हथेली पर रखकर स्त्री पुत्र का स्मर्ण अपने अन्तःकरणसे त्यागकर युद्धहीपर अपना ध्यान लगाना चाहिये । चित्त चलायमान करने से नियम भंग का अपराधी भी होगा और अपने को भ्रम में डालैगा समग्र क्रौम का रुधिर उसी की गर्दन पर लटकता है क्योंकि अपनी शक्तिभर बलपूर्वक उसके न लड़नेसे यदि क्रौम हारगई तो सबकी हत्या का अपराध उसपर होगा ऐसा न हो कि उसके देखो देखा उसके भाई की हिम्मत भी टूट जाय इसलिये उसको रणमें प्रवृत होना चाहिये । इसी प्रकार कबाला में भी दूसरे वाक्य का समर्थन है धिक्कार उसे है जो स्वामी के कार्य्य को असाव धानी से करता है और धिक्कार उसे है जो अपने खड्ग को रुधिर

से हटाता है। विपरीत इसके जो युद्ध में अपनी शक्तिभर वीरता से व्यवहार करता है, कम्पायमान नहीं होता परमेश्वर के यश बढ़ाने पर आरूढ़ है उसकी जय निश्चय करके होगी। उसे कोई संकट वा विपत नहीं होगी उसके लिये गृह इज़रईल में बनेगा जहां वह और उसकी संतान सदैव निवास करेंगे क्योंकि वह अपने स्वामी के युद्ध में प्रवृत्त हुआ है और उसकी आत्मा अपने स्वामी परमेश्वर की आत्मा से सम्बन्ध हो जायगी इसी प्रकार के अनेक वाक्य यहूदियों के ग्रन्थकारों के हैं और ईसाई भी इसमें उनसे बहुत न्यून नहीं पड़ते हैं। उनमें से एक ने फ्रैन्कों को जो धर्म युद्ध में नियुक्त था लिखा था " हम तुम्हारी सबकी उदारता के जिज्ञासु हैं क्योंकि जो इस युद्ध में प्राण देगा उसे स्वर्ग का राज्य प्राप्त होने में किसी प्रकार से बाधा न होगी और हमारा इस कथन से यह अभीष्ट नहीं कि आप प्राण त्यागें " दूसरेका उपदेश निम्नलिखित है " सम्पूर्ण भय और त्रास को त्यागकर धर्मके विरोधियों और समग्र मतोंके वैरियो के प्रति पूरे यत्न से लड़ना चाहिये क्योंकि परमेश्वर जानता है कि यदि तुममें से कोई मरेगा तो तुम्हारी मृत्यु अपने मतकी सत्यता, देश के कल्याण, और ईसाइयों के पक्ष में होगी अतः अवश्य स्वर्गीय पारितोषक तुमको " परमेश्वर से प्राप्त होगा "। यहूदियों को तो दैवी आज्ञाही थी कि अपने मतके वैरियों पर आक्रमण करें उन्हें पराजय करें और उनका नाशकरें और मुहम्मद का भी दावा था कि परमेश्वर के यहां से उनको ऐसाही स्पष्ट रूप आदेश अपने लिये और अपने अनुयायी मुसलमानों के लिये मिला था और इसलिये अपने निश्चित सिद्धान्तों के अनुसार यहूदी और मुहम्मद आचरण करें तो कुछ आश्चर्य्य नहीं परन्तु ईसाइयों को अपने सिद्धान्तों के विरुद्ध जिनकी बाईबिल में सहिष्णुता की ही सराहना कीगई है युद्ध में प्रवृत होना बहुतही आश्चर्य युक्त है और ईसाइयों ने यहूदी और

मुसलमान दोनाही से अधिक तर उग्रसाहस अपने मतके बैरियोंके प्रति प्रकट किया है।

रण के नियमों को रीलैन्ड साहबने विवरण सहित वर्णन किया है कुछ संक्षेप से उनको यहांपर लिखते हैं। जब इस्लाम की बाल्यावस्था थी तबतो जो उसके प्रति पक्षियों को जो रणमें क़ैद होते हैं मारडाला जाता था परन्तु जब इस्लाम प्रोढ़ होगया और यह भय नहीं रहा कि इस्लाम के बैरी उसे जड़से नष्ट करदेंगे तब इतना कठोर आचरण उचित नहीं समझा गया। यहूदियों में भी सात क़ौमैं माईर जातियों का सर्बस्व लेकर इज़रईलाईटों को देकर यही दण्ड मारडालनेका निर्णय कियागयाथा। इनको नाश किये बिना तो भला उसदेशमें जो इनके लिये निरूपण हुआ था इनका बसनाही असम्भव था ऐसा दंड उचित भी हो परन्तु अमैले काइट और मिडिए नाइसे जिन्होंने अपनी सामर्थ्य भर इनका वहां पहुंचने ही से मार्गमें रोक कर तितर बितर करना चाहा था उनके लिये भी तो यही घोर दंड इन्होंने उचित समझा था। मुसलमान लोग रण में प्रवृत्त होने के समय अपने प्रति पक्षियों को तीन बातों का विकल्प देते हैं (१) या तो मुसलमान हो जाउ तो तुम्हारे तन धन और कुटुम्ब में कुछ हानि न पहुंचैगी और सब रियायतें और हकूक़ तुमको अन्य मुसलमानों के सदृश मिलेंगे। (२) पराजय मानकर कर का देना स्वीकार करो तो अपनामत अवलम्बन करते रहो परन्तु वहुमत अत्यन्त स्थूल मूर्तिपूजन वा साधारण धर्म के विरुद्ध न हो और (३) तलवार से निर्णय करलो परन्तु यदि हारोगे तो स्त्रियां और बच्चे जो क़ैदकिये जायंगे उनकोगुलाम बनाया जायगा और पुरुष जो क़ैद होंगे यदि मुसलमान होना स्वीकार न करैंगे तो मारडाले जायंगे अथवा विजयी बादशाहकी इच्छाऽनुसार विनियोग कियाजायगा।

यहूदियों के भी युद्ध के ठीक यही नियम थे। जिन क़ौमों को

नाश करना मनतव्य नहीं होता था उनके साथ कनान के निवासियों के पास उनके देश में प्रवेशसे पूर्व जौशुआ ने तीन नक्शे (फिहिरिस्तें) भेजे थे एक में लिखा था जिस की इच्छा हो भाग जाय; दूसरे में जो चाहै सो पराजय स्वीकार करलेवै और तीसरेमें लिखा था जिसकी इच्छा हो वह लड़े। इन क़ौमों में से इज़राईलटों के साथ सन्धि किसी ने स्वीकार नहीं की केवल जिबिओ नाईट लोगों ने पहिले तो जौशुआ की शर्तों को तिरस्कार करके इन्कार कर दिया था परन्तु पीछे धोखे से अपने प्राण बचाने के लिये सन्धि की शर्तें प्राप्त करली थी "परमेश्वर की मर्ज़ी ही थी कि उनके हृदयऐसे कठोर कर दिये जिस से उन सबका नाश होजाय"

जब मुहम्मदकोप्रथम २ कुछ विशेष जय प्राप्तहुई तो लूटके माल बांटनेकेविषयमें कुछ झगड़ा उनके अनुयायियोंमें उत्पन्नहुआ तिसपर उन्होंने इस लूटके धनके बांटके नियमभी स्थापित किये और उन्होंने दावा प्रकाश किया कि परमेश्वर के यहां से इस विषय में आज्ञा उतरी है कि अपने सिपाहियों में अपनी समझ के अनुसारसे बांट कर देवें जिसमें से पंचमांश वह अपने लिये रख लेते थे जिसे पीछे से अन्य कार्यों में लगाते हैं और शेष को जब जैसा अवसर समझते थे अपनी रुचिके अनुकूल वर्तते थे। होनी इनकी लड़ाई में हवाज़न लोगों के माल को उन्हों ने मक्कावालों को हो बांट दिया था मदीना वालों को कुछ न दिया और कुरेश क़ौम के प्रधानों को संतुष्ट करने के लिये जब उनका नगर ले लिया था उन्होंने अधिक आदर किया था। अलनदीर वालों पर हमला किया था तो उस समय भी सब लूट का धन स्वयंही लेकर मन माना वर्त्ताया था क्यों कि उसमें केवल पैदल ही लड़े थे ऊंट और घोड़े नहीं थे और यही आगे के लिये भी नियम बन्ध गया कारण इसका यह प्रतीत होता है कि पैदल फ़ौज के हाथ लगा हुआ लूट का धन परमेश्वर का

तत्कालिक अव्यवहित प्रीति दान समझा जाता है और इसलिये उसको पैग़म्बर की तजवीज़ही पर छोड़ देना उचित है। यहूदियों के नियमाऽनुसार लूट का धन दो तुल्य भागों में बांटा जाता था, अर्ध भाग सेना का और आधा राजा का जिसको वह अपने निज के ख़र्च तथा आम प्रजाके सामान्य काममें लाताथा। मूसाने मिडिपनाइटोंके धनको लेकर आधा योधाओं में और आधा शेष जाति व समाजमें बांट दियाथा परन्तु इसके लिये विशेष आज्ञा परमेश्वरकी थी अतः इस को उदाहरण नहीं मानना चाहिये। जौशुआ ने अढ़ाई कौमोंको कैनान देशको जीतकर और उसकी भूमिका विभाग करके जब उनको जन्मभूमि गिलिरेडको लौटायाथा तो कहाथा कि लौटकर पहुंचने पर वैरियांके धन में से आधाआधा अपने भाइयों के साथ बांट लेना। तो इससे प्रतीतहै कि बादशाहको जो आधा मिलता थ वह मानो प्रजा का आधा भाग था जिसको उनका सर्दार होने के कारण वह उनकी ओर से लेता था। मुहम्मद के अनुयायियों में बिद्र के स्थान पर लूट का धन मिला था उसके बांटके निमित्त वैसा ही झगड़ा हुआ था जैसा कि दाऊद के सिपाहियों में पमेलेकाईट कौम से जो लूटका धन मिलाथा उसके विभाग में हुआथा। अर्थात् कुछ सिपाही रणभूमि में गये थे और कुछ पीछेही रहगये थे तो जो रण में गये थे वह कहते थे कि पीछे रहेहुओं को लूटके धनका भाग न मिलना चाहिये इन उपरोक्त दोनों अवस्थाओं में एकही व्यवस्था दीगई और यही भविष्य के लिये बनगया कि दोनों को बराबर भाग मिलना चाहिये।

कितना भाग किसको मिलना चाहिये।

पंचमांश जो पैग़म्बरकाहोता था उसको कुरानमें परमेश्वर का, तथा पैग़म्बर और उसके सम्बन्धी अनाथ बालक और दीनों और

यात्रियों का भाग करदेलिखा है इसके अर्थ कई प्रकार के किये गये हैं। अलशाफ़ीई के मतसे उसके पांच भाग होकर परमेश्वर का भाग ख़ज़ानेमें जमाहोनाचाहिये उससे किले बनवायेजावें और मरम्मत भी कीजावेतथा पुल और अन्यसर्कारी इमारतें नवीन बनें और प्राचीनकी मरम्मतहोवै और न्यायाध्यक्ष, अहलकार दीवानी, विद्वान पाठकगण पुरोहितऔर आचार्य्य जो सामान्य रूपसे प्रजाकेहों उन सबका वेतन दियाजाय दूसरा भाग मुहम्मद के सम्बन्धी अर्थात् उनके पितामह हाशिम और पितामह के भाई अलमुतालेबके वंशजोंमें धनी निर्धनी, बालक और अवस्था प्राप्त (युवा वृद्ध) स्त्री और पुरुष, सबही में बांटा जाय स्त्री को पुरुष से आधा भाग मिले तीसरा भाग अनाथों को बांटाजाय चौथा उन दीनों को जो वर्ष पर्य्यन्त अपना पालन पोषण नहीं कर सक्ते हैं और जो अपनी जीविका उपार्जन करने में असमर्थ हैं पांचवा भाग मुसाफिरों को जो मार्ग में मौहताज होगये हों यद्यपि अपने देश में भलेही धनी हों।

मलिक इब्नअनस के अनुसार यह सब धन इमाम वा राजाके आधीन करदेना चाहिये और वह अपनी इच्छाऽनुसार जहां अधिक आवश्यक्ता देखकर उचित समझे बांटदेवै। अबूउलअलीया ने अक्ष- रार्थही लेकर अपनी सम्मति दी है कि परमेश्वर का भाग काबा के काम में लगाना चाहिये परन्तु औरों की सम्मति से परमेश्वर और पैग़म्बर का भाग एकही मानना चाहिये। अबूहनीफा के मत से मुहम्मद और उनके सम्बन्धियों के भाग मुहम्मद के मरने पर लोप को प्राप्त होगये और उसके उपरान्त समग्र को अनाथ, दीन और यात्रियों में ही बांटदेना चाहिये। बाज़ोंका आग्रह है कि मुहम्मद के सम्बन्धी से हाशिम की सन्तानही अधिकारी माननी चाहिये। परन्तु जो लोग अलमुतालेब के पक्षका समर्थन करते हैं वह मुहम्मद की एक कहावतका प्रमाण देते हैं कि मुहम्मद ने अपने सम्बन्धियों

के भाग को स्वयं दोनों वंशों में विभाग कियाथा और जब उथमान इब्न अस्सान और ज़ुबेर इब्न मताम ने जो हाशिम के दूसरे भाई अब्दशम्स और नवफ़ल की सन्तान थे मुहम्मद से कहा कि हाशिम के वंशजों के विषय में तो हम लोग कुछ नहीं उज्र करते हैं परन्तु अलमुतालेब और हमारे वंशों में अन्तर मानना हमको बुरा लगता है क्योंकि अलमुतालेब और हम लोगों का सम्बन्ध आप से तुल्य अंश का है परन्तु हमको भाग नहीं दिया जाता है तिसपर पैग़म्बर ने उत्तर दिया कि अलमुतालेब की औलाद ने हमारा संग न तो इस लाम से पूर्वकी जहालत की अवस्था में और न इसलाम के प्रवृति से पीछे कभी नहीं छोड़ा और इससे हशीमाइट और अलमुतालेब के वंशजों में पूर्ण सहयोग रहा है। बाज़ों के मत से कुरेश वाले सब लोग धनी हो वा दीन हों भाग के अधिकारी हैं परन्तु अधिकतर लोग यही अर्थ लगाते हैं कि कुरेश क़ौम के दीनों को ही मिलना चाहिये। बाज़े यहांतक कहते हैं कि कुल पंचमांश कुरेश वालोंहीका है और अनाथ, दीन यात्रियों का भाग कुरेश कौममें हो जो अनाथ दीन और यात्री हों उनको मिलना चाहिये। चल (मनकूला) और अचल जायदाद (ग़ैर मनकूला) तथा चल और अचल पदार्थ सब में से ही पंचमांश लिया जायगा इतना भेद है कि चल पदार्थ का बांट होगा परन्तु अचल पदार्थ की हानि और लाभ (नफ़ा) अथवा सरकारी कार्य तथा पुण्यार्थ को बेचकर जो मूल्य प्राप्त हो वह कामों में लगाया जायगा और वर्ष में एक बार बांट होगा और राजा चाहे भूमि का पंचमांश लेवै और चाहे कुलकी आमदनी और पैदावार का पंचमांश अपनी इच्छाऽनुसार लेवै जैसी इच्छाहोकरै।

·:✱:·

छठवां खण्ड।

कुरान में एकके विरुद्ध अनेक वाक्य।

क़ुरान ध्यान से पढ़ने से मालूम होता है कि उसके अनेकों वाक्य ऐसे हैं जिनके ठीक विरुद्ध दूसरे वाक्य मौजूद हैं तथा अनेक भ्रान्तियां हैं नमूना स्वरूप कुछ स्थल यहां पर दिखलाये जाते हैं।

पहिला विरुद्ध वाक्य तीसरा पारा सूरे आल इमरान आयत नम्बर १३ हिन्दी क़ुरान सफ़ा ५५ इन दो गिरोहों में से तुम्हारे लिये निशानी हो चुकी है जो एक दूसरे से गुथ गये। एक गिरोह तो ख़ुदा की राह में लड़ता था और दूसरा क़ाफ़िरों का था जिनको आंखों देखते मुसल्मानों का गिरोह दूना दिखलाई देता था और अल्लाह अपनी मदद से जिसको चाहता है मदद देता है। इस में सन्देह नहीं कि जो लोग सूझरखते हैं उनके लिये इसमें शिक्षा है।

दशवां पारा सूरे अनफ़ाल रुकू ५ आयत नम्बर ४५ हिन्दी क़ुरान सफ़ा १८०:–"और जब तुम एक दूसरे से लड़मरे क़ाफ़िरों को तुम मुसलमानों की आंखों में थोड़ाकर दिखलाया और तुम मुसल्मानों को क़ाफ़िरों की आंखों में थोड़ा कर दिखाया ताकि ख़ुदा को जो कुछ करना मंज़ूर था पूराकर दिखाये और आख़िरकार सब कामों का आधार अल्लाह ही पर ठहरता है।

अब यहां इन दो आयतों को जो एकही वक़्त की लड़ाई का ज़िक्र करतीहैं मिलाने से प्रत्यक्ष विरुद्धता (इख़्तलाफ़) पाई जाती है यानी एक आयत कहती है कि क़ाफ़िरों की आंखों में मुसल्मानों का गिरोह दूना दिखलाई देता था दूसरी कहती है कि क़ाफ़िरों की आंखों में मुसलमानों को थोड़ाकर दिखाया।

दूसरी विरुद्धता—पहिला पारा सूरे बक़र रुकू नम्बर ८ आयत नम्बर ६२ (हिन्दी क़ुरान सफ़ा ६)—"निःसन्देह मुसलमान, यहूदी, ईसाई और साबी इनमें से जो अल्लाह पर और क़यामत (प्रलय) पर ईमान लाये और अच्छे काम करते रहे तो उनको उनका फल उनके पालन कर्त्ता के यहां मिलेगा और उन पर न डर होगा और न वह उदास होंगे"।

पारा तीन सूरे आल इमरान रुकू ६ आयत नम्बर ८४ (हिन्दी क़ुरान सफ़ा ६४):—"और जो शख़्स इसलाम (मुसलमानी मत) के सिवाय किसी और दीन को तलाशकरे तो खुदा के यहां उसका वह दीन क़बूल नहीं होगा और वह क़यामत में नुक़सान पानेवालों में से होगा"।

अब यहां भी इन आयतों के मिलाने से आसमान ज़मीन का फ़र्क़ (भेद) मालूम देता है एक आयत कहती है कि मुसल्मान यहूदी ईसाई और साबी मुक्ती पावेंगे। दूसरी आयत कहती है कि नहीं सिर्फ़ मुहम्मदी (मुसल्मान) ही मुक्ति पावेंगे। मुसल्मान मौलवी इसपर यह कहते हैं कि पिछली आयत पहिली को मन्सूख़ करती है। अगर हम इसको ऐसा मान भी लें तो फिर आगे चल कर वही बात फिर पाते हैं। देखो पारा छठवां सूरे मायदा रुकू १० आयत नम्बर ७० हिन्दी क़ुरान सफ़ा ११८:—"इसमें कुछ सन्देह नहीं जो मुसल्मान हैं और यहूदी हैं और साबी हैं और ईसाई हैं। जो कोई अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाये और नेक काम करे तो ऐसे लोगों पर न भय होगा और न वह उदास होंगे।

अब यहां अगर क़ुरान के भाष्यकारों का कहना सच मान लिया जावे कि सूरे आल इमरान की आयत उतरने पर सूरे बक़र की आयत मन्सूख़ होगई तो यह भी उनको मानना पड़ेगा कि सूरे मायदा की आयत उतरने पर सूरे आल इमरान की आयत मन्सूख़

होगई तो नतीजा यह निकलेगा कि खुदा खेलकरता है कि एक आयत को एक वक़ मन्सूख करता है और दूसरे वक़ फिर बहाल करता है और अगर नहीं तो विरुद्धता (इख़्तिलाफ़) प्रत्यक्ष है।

तीसरी विरुद्धता पारा १ सूरे बक़र आयत २१६ (सफ़ा हिन्दी कुरान ३७) (हे पैग़म्बर) तुम से शराब और जुए के बारे में पूछते हैं तो कह दो कि इनदोनों में बड़ा पाप है और लोगों के लिये फ़ायदे भी हैं मगर इनके फ़ायदेसे इनका पाप बढ़कर है और तुमसे पूछते हैं क्या खर्च करें तो समझा दो कि जितना ज्यादाहो। इसी तरह अल्लाह आज्ञायें तुम लोगों से खोल खोलकर बयान करता है शायद तुम ध्यान दो।

पारा पांचवां सूरे निसा आयत ४२४ हिन्दी कुरान सफ़ा ८७ हे ईमानवालो जब तुम नशे में हो नमाज़ न पढ़ा करो जब तक न समझो कि क्या कहते हो और नहाने की ज़रूरत हो तो भी नमाज़ के पास न जाना यहां तक कि स्नान न करलो।

पारा सातवां सूरे मायदा आयत ६० (हिन्दी कुरान सफ़ा १२०) मुसलमानो ! शराब और जुआ और मूर्त्ति और पांसे यह गन्दे शैतानी काम हैं इनसे बचो शायद इससे तुम्हारा भला हो। अब यहां पहिली आयत में शराब जायज़ है कोई मुमानियत नहीं सिर्फ इतना हुक्म है कि जो दाम ज्यादह हो जुए और शराब में खर्च करो फिर दुसरी आयत में नमाज़ के वक़ सिर्फ़ शराब मना है पर तीसरी आयत में चलकर बिल्कुल मना की गई है।

यहां पर प्रत्यक्ष विरुद्धता के अतिरिक्त यह भी मालूम पड़ता है कि कुरान के रचियता के ध्यान में शराब और जुए के नतीजे पहिले नहीं आये थे किन्तु धीरे २ जैसे २ शराब जुए के नतीजे मालूम होते गये वैसे २ उसका निषेध करते गये (यानी वह इल्म "व अन्तरिक्ष) विद्या से दूर थे।

इतिहासिक बृहत्भ्रान्ति।

सोलहवां पारा सूरे मरियम आयत २६ (सफ़ा हिन्दी कुरान ३०५) हे हारूं की बहिन न तो तेरा बाप ही बदकार था और न तेरी माताही बदचलन थी।

अट्ठाईसवां पारासूरे तहरीम आयत १८ (सफ़ा हिन्दी कुरान ५६२) और इमरान की बेटी जिसने अपनी शिहवत (प्रसंग) की जगह रोकी और हमने उसमें अपनी रूह फूंक दी और वह अपने पालन कर्त्ता की बातें और उसकी किताबों को मानती थी और खुदा की आज्ञा कारिणी थी।

अब यहां पर देखने का मौक़ा है कि क़ुरान के रचयिता ने कितना बड़ा धोखा खाया है क्योंकि इमरान की बेटी और हारूं की बिहन का नाम भी मरियम था और मसीह की मा का भी नाम यही था-पस उस मरियम और इस मरियम में क़रीब १६०० बरस के ज़माने का फर्क़ है। इससे सिद्ध है कि क़ुरान के रचयिता इतिहास की जानकारी से दूर थे।

भूगोल सम्बन्धी भ्रान्ति।

चौदहवां पारा सूरे नहल आयत १५ (सफ़ा हिन्दी कुरान २६६) और पहाड़ ज़मीन पर गाढ़े ताकि ज़मीन तुम्हें लेकर किसी और तरफ़ न झुकने पावे और नदियां और रास्ते बनाये शायद तुम राह पायो।

सत्तरहवां पारा सूरे अम्बिया आयत ३२ (सफ़ा हिन्दी कुरान ३२) और हमही ने ज़मीन में पहाड़ रक्खे ताकि लोगों को लेकर झुक न पड़े और हमही ने चौड़े २ रास्ते बनाये ताकि लोग राह पाव।

इक्कीसवां पारा सूरे लुकमान आयत ६ (सफ़ा हिन्दी कुरान

४१०) उसी ने आसमानों को जिनको तुम देखते हो बिना खम्भों के खड़ा किया है और ज़मीनमें पहाड़ों को डाल दिया कि तुम्हें लेकर ज़मीन झुक न पड़े और उसमें हर क़िस्म के जानदार फैला दिये और आसमान से पानी बरसाया फिर ज़मीन में हर तरह के जोड़े पैदा किये।

तीसवां पारा सूरे नबा आयत ६ व ७ (सफ़ा हिन्दी क़ुरान ५८५) क्या हमने ज़मीन को फ़र्श (६) और पहाड़ों को मेखें नहीं बनाया (७) ।

अब इन आयतों के मिलाने से स्पष्ट विदित होता है कि इनके लिखने वाले ने भूगोल सम्बन्धी बड़ी भूल की है लेखक ज़मीन आस्मान और पहाड़ की स्थिति से सर्वथा अपरिचित है—वह नहीं जानता कि आस्मान क्या चीज़ है और ज़मीन क्यों ठहरी है पहाड़ क्या चीज़ हैं। आस्मान शून्यहै शून्य अज्ञान से खम्भों पर ठहराया गया है। ज़मीन गोल है और वह आकर्षण शक्ति द्वारा ठहरी हुईहै न कि पहाड़ों के जमा देनेसे वह झुकती नहीं। क्योंकि यदि ज़मीन पहाड़ों के ही कारणसे झुकने से रुकी होती तो जो मनुष्य आस्मान में बहुत ऊंचे हवाई जहाजों में उड़ जाते हैं वे कहीं अन्त क्यों नहीं गिरते क्यों ज़मीन परही आकर गिरते हैं। इससे सिद्धहै कि ज़मीन आकर्षण से ठहरी हुईहै और इसी आकर्षण शक्ति के कारण ज़मीन की कोई चीज़ बाहर नहीं गिरने पाती ज़मीनही पर खिच आती है। पहाड़ ऊँची ज़मीन ही हैं और कुछ नहीं।

सोलहवां पारा सूरे कहफ़ आयत ८४ (हिन्दी क़ुरान सफ़ा ३०१) यहांतक कि जब सूरजके डूबनेकी जगहपर पहुंचा तो उसको सूरज ऐसा दिखाई दिया कि वह काली २ कीचड़ के कुण्ड में डूबता हुआ है और देखा कि उस (कुण्ड) के क़रीब एक जाति बसी है।

यह मुसल्मानों के भी आलिम मानते हैं कि ज़मीन से सूरज

बहुत बड़ा है पस जब कि सूरज बड़ा है तो किस तरह ज़मीन के एक दलदल नदी में डूब सक्ता है।

उपरोक्त भ्रांतियां (ग़लतियां) ध्यान पूर्वक देखने से विचार उत्पन्न होताहै कि जिन ग़लतियों को एक सामान्य विद्वान् नहीं कर-सक्ता वे सर्वज्ञ ईश्वर से कैसे हुईं। इस हेतु कुरान के ईश्वर द्वारा बनाये जाने में अवश्य सन्देह है।

सप्तम खण्ड।

कुरान में पवित्र महीनों का वर्णन तथा इन पवित्र महीनों मुहर्रम आदिमें मुसल्मानों को झगड़ा करने की सख़्त मनाई और शुक्रवार का दिन इबादत के लिये विशेषतः पृथक् रक्खा जाना।

प्राचीन अरब वर्ष में चार मासों को पवित्र मानते थे जिनमें युद्ध करना नियम विरुद्ध समझते थे और अपने मालों के अग्रभाग (फल) उतार लेते थे न चढ़ाई करते थे न वैर भाव रखते थे। इन मासों में वैरियों के भय से निवृत्त होकर मनुष्य बेखटके रहते थे। यदि किसी के बाप या भाई का मार डालनेवाला भी मिल जाता तो उस पर घात नहीं किया जाता था। किसी विद्वान् ग्रन्थकार ने इस वैर निवृत्त को अरब क़ौम के दयाशील स्वभाव की प्रशंसा में लिखा है कि यद्यपि इन लोगों की पृथक् २ क़ौमों के स्वतन्त्र राज्य थे और अपने उचित अधिकारों की रक्षा में परस्पर उन्हें झगड़े भी करने पड़ते थे तथापि इतनी सभ्यता थी कि अपने उत्तेजित हृदयों को नियत समयों में शान्त रखते थे। यह नियम सबही अरब की क़ौमों में प्रचलित था सिवाय टे, खोथ हाम, और कुछ अलहारेथ इब्नक़ाब के वंशों के। इसका निर्वाह इतना धर्म पूर्वक करतेथे कि इतिहास में उसके उलंघन करने के बहुत कम उदाहरण हैं—हैं भी तो ५ या ६ से अधिक नहीं। इस नियम का विचार छोड़कर युद्ध करना

पाप समझा जाताथा। इसके उल्लंघन करनेका एक उदाहरण कुरेश और कैस एलान में युद्ध का है जिसमें महम्मद अपने चाचाओं के मातहती में १४ वर्ष की उम्र अथवा २० वर्ष की उम्र में १ वर्ष युद्ध में उपस्थित थे। अरब वाले मुहर्रम, रजब, ज़ीका और ज़िल्हिज्जह जो साल के प्रथम, सप्तम, एकादश और द्वादश मास हैं उनको पवित्र मानते थे। ज़िलहिज्जह मक्का के हज्ज का महीना था इसी से उसके पूर्व और पीछेका मास भी पुनीत मानते थे जिससे लोग हज्ज को बेखटके जासकें और हज्ज करके अपने घरों को लौट भी आ सकें। रजब के महीने को शेष तीन मासों से अधिक पवित्र मानते थे शायद उस मास में प्राचीन अरब रोज़ा रखते थे जिसके स्थान में मुहम्मद ने पीछे से रमज़ान नियत किया क्योंकि पूर्व में लोग रमज़ान महीना में अत्यन्त मद्यपान किया करते थे। पूर्ण रूप से शान्ति अमन रहने के कारण जो काफिला प्रति वर्ष कुरेशवालों का मक्का के लिये रसद लाने को जाताथा उस रसदका एक भाग मक्का के लोगों में बट जाता था और शेष मक्का हज्ज के समय विभक्त होता था। इन मासों को पवित्र समझकर उनके अन्तर युद्धादिक न करना मुहम्मद को बहुत अच्छा लगा और उन्होंने क़ुरान के कई एक वाक्यों द्वारा इस नियम को पुष्ट किया। मूर्ति पूजक अरबों की इस विषय सम्बन्धी रिवाज को मुहम्मद ने सुधारना उचित समझा उनमें से कुछ लोगों को तीन महीना लगातार अपने मामूली लूट के हमलों को किये विना चुपचाप बैठे रहना असह्य हो जाता था इस-लिये लूटमार के चाउ में जबहो सुभीता देखते थे अपनी रुचि के अनुसार अलमुहर्रम में उपवास का विधान छोड़कर "सफ़र" इस के अगले महीनामें उसके स्थानमें उपवास करलेना विहित समझते थे और इसकी सूचना सर्व साधारण को पिछली हज्ज के समय दे दिया करतेथे। ऐसा करना अर्थात् पवित्र मासके स्थानमें साधारण

लौकिक अन्य मास को बदल लेना कुरान के एक वाक्य में "अल-नसी" शब्द का डाक्टर प्रोडाने गालिप्रस की भ्रांति में पड़कर वर्ष में अधिमास का बढ़ा देना किया है सो कदापि उपयुक्त नहीं है। इसमें सन्देह नहीं कि अरबवालों ने यहूदियों का अनुकरण करके जो वर्ष की गणना मासों से करते थे। यद्यपि कुरानमें मुसल्मानों को उपरोक्त चार महीनों में झगड़ा करने का पूरा निषेध है परन्तु हिन्दुस्थान में अनेक मुसल्मान् अपने को मुसल्मान् कहते हुए भी तथा कुरान के मानने वाले जाहिर करते हुए भी ज़िलहज्जः महीने में यानी उस महीने में जिसमें बकरीद होती है तथा मोहर्रम के महीने ही में अधिकतर झगड़ा करते हैं यानी ज़ाहिरा कुरान के विरुद्ध चलते हैं इन महीने शान्त रहते हैं पवित्र मकानों में ही झगड़ा करने का उनको मज़ा लगता है अतएव ऐसे झगड़ा करनेवाले कुरान के बमूजिब अवश्य अपराधी हैं। इसहेतु मुसल्मानों को चाहिये कि मुहर्रम तथा ज़िलहज्जह आदि महीनोंमें कभी झगड़ा न करें ताकि उनकी आकबत सुधरे। अधिमास तीसरी वर्ष वा कभी दूसरा वर्ष बढ़ाकर सौर वर्ष अर्थात् सूर्य संक्रमण की गणना द्वारा वर्षोंका ज्ञान निकालनाभी यहूदप्रथा और नसी से मक्काकी हज्जको उन्होंने पार्थ-शिक नियमके विरुद्ध शरद ऋतु में नियत किया था जिससे यात्रियों को ग्रीष्म ऋतु की गर्मी से बचने की सुविधा होती थी और रसद सामान भी उस अवसर पर मक्कामें बहुतायत से प्राप्त हो जाता था और इसमें भी सन्देह नहीं कि मुहम्मद ने कुरान के इसी अध्याय के एक वाक्य में अधिमास के बढ़ाने का निषेध किया है परन्तु यह वाक्य वह नहीं है जिसका ऊपर वर्णन हुआ है इसमें निषेध अन्य वस्तु का है परन्तु इस वाक्य से कुछ पूर्व में एक वाक्य कुरान में है जिसमें परमेश्वर की आज्ञा निर्देश से बारह मासही वर्ष में मानने चाहिये यदि प्रति तीसरा वा दूसरा वर्ष अधिमास बढ़ाया जायगा तो

परमेश्वर के निर्देश के विरुद्ध उस वर्ष में तेरह मास मानने पड़ेंगे।

शुक्रवार का दिन इबादत के लिये पृथक् किया जाना

यहूदी और ईसाइयों का नियम सप्ताह में एक दिन विशेष रूपसे परमेश्वर की उपासना के लिये पृथक् रखनेका मुहम्मदको ऐसा उपयोगी प्रतीत हुआ कि इस विषय में उनका अनुकरण कर उन्होंने स्वीकार किया परन्तु उनलोगों से अपनी विशेषता प्रकट करने के निमित्त उन्होंने उनलोगों के दिन से अपने मतवालों के लिये भिन्न दिन स्थापित किया। शुक्रवार अथवा सप्ताह का छठवां दिन इस कार्य के निमित्त नियत करने के अनेक कारण लोगों ने लिखे हैं परन्तु मुहम्मद ने इसदिन को इस हेतु से अधिकतर नियत किया कि उनसे पूर्व में भी इसी दिन लोगों का समागम हुआ करता था यद्यपि यह समागम धर्मार्थ नहीं होता था व्योहार सम्बन्धी कार्य निमित्त ही लोग उसदिन एकत्रित होते थे। जो कुछ हो मुसलमान ग्रन्थकारोंने इस दिन को अति पुनीत और सब दिनों का राजा अति उत्तम बनाया है। वे कहते हैं कि इसीदिन क़यामत का न्याय भी होगा। मुसलमान इसमें अपने मतका बहुत मान और गौरव समझते हैं कि परमेश्वर ने इस दिवस को मुसलमानों का भोजनोत्सव व त्योहार दिन नियत किया जिसे पहिलेपहिल मानने का अवसर उन्हीं को प्राप्त हुआ। यद्यपि यहूदी और ईसाइयों को रविवार जितना पुण्य शील मानना पड़ता है उतना शुक्र मुसलमानों के निकट नहीं है। कुरान में लोगों को नमाज़ समाप्त करके अपने अपने काम धन्धों में लगने के लिये भी आज्ञा दी गई है ऐसा बहुधा लोग मानते हैं तथापि ईमान वाले लोग इसदिन सांसारिक व्योहार छोड़कर पारलौकिक कार्य में ही उसे समर्पण करना पसंद करते हैं। जिस प्रकार शुक्रवार मुसलमानों का साप्ताहिक सम्माज त्योहार है उसी तरह उनके दो वार्षिक भोजनोत्सव के त्योहार बईराम माने जाते

हैं । एकतो " ईद उलफित्र " जो रमज़ान के व्रतों का पारणोत्सव दिन है और दूसरा ईद उलकुर्बान वा ईद उलजुहा कहलाता है और मक्का की हज्ज में धुमल हज्ज की दसवीं तारीख को होता है जिस दिन कुर्बानी में बलि दी जाती है । यथार्थ में ईद उल फ़ित्र को छोटा और ईद उलकुर्बान को बड़ा ईद नाम कहना चाहिये परन्तु आमीण लोग और बहुतेरे विदेशी ग्रन्थकारोंने भी ईद उल फ़ित्र को बड़ा माना है क्योंकि इसे लोग असाधारण रूप से मानते हैं। कुस्तुन तुनियां और रूम के अन्य विभागों में इसे तीन दिन तक बराबर फ़ाज़िल से पांचवा छै: दिन तक बड़े उत्साहव से साधारण लोग धूम धाम सहित इस उत्सव को करते हैं मानों रमज़ान के व्रतों के क्लेशों का बदला पूरा करते हैं । ईद उलकुर्बान का तीन दिन माना जाता है और उसका प्रथम दिन हज्ज भरमें बहुत ही बड़ा समझा जाता है परन्तु साधारण लोग इसके दिन मुख्य उपासना का कार्य का कम विचार करते हैं क्योंकि केवल मक्के ही में यह रस्म होती है इस कारण उसकी रस्म के बाह्य आडम्बर उनके दृष्टि गोचर नहीं होते हैं ॥

आठवां खण्ड ।

मुसल्मानों मुख्य २ सम्प्रदाय और उनकी शाखाओं का वर्णन तथा शिया सुन्नियों के भेदका पूरा वर्णन ।

मुसलमानों के जातियों के भेद वर्णन करने से पहिले उनके नैयायिक और व्यवहारिक ग्रन्थ जिनके द्वारा उनके झगड़े निर्णीत किये जाते हैं कुछ वर्णन करना उचित मालूम होता है । इनके

सिद्धान्त और विचारों की रीति उन लोगों की परिपाटी से बहुत भिन्न है जो मुसलमानों के तत्वज्ञानी आचार्य और निपुण ग्रन्थकार कहाते हैं अतः ग्रन्थों के विभाग में इस संकीर्ण शास्त्र की गणना नहीं की जाती है। मैमोनाइडीज ने इन नैयायिक विद्वानों के सिद्धान्तों को सृष्टि के स्वभाविक क्रम और संसारिक नियमों से प्रायः विरुद्ध होने के कारण अति अयुक्त ठहराया है। परस्पर खण्डन मण्डन मत विचार की चतुरता इसलाम की बाल्यावस्था में न थी परन्तु ज्यों ज्यों भिन्न २ सम्प्रदाय उत्पन्न होती गईं और मतों के सिद्धान्तों में संशय प्रश्न उपस्थित होने लगे तो पहिले यह विवाद नवीन अर्थ कल्पना करने वालों के साथ सत सिद्धान्तों की यथार्थता समर्थन करने हेतु ही होते थे और जबतक इस सीमा के भीतर रहते तबतक श्लाघनीय समझा जाता है क्योंकि धर्म के पक्ष में होता है परन्तु जब केवल वाद विवाद निमित्त होकर इस सीमा के बाहर जाय तो निन्दनीय कहना चाहिये, ऐसा मत अलगज़ाली का मध्यस्थ रूप से है अर्थात् जो न तो उनके पक्ष में हैं जो इस विवाद शास्त्र की अति सराहना करते हैं और न उन लोगों के पक्षपात में है जो इसे पूर्णतः व्यर्थ ही बताते हैं। इसे व्यर्थ मानने वालों में शाफ़ई हैं जिसका कथन है कि जो लोग कुरान और सुन्नत का पाठ छोड़कर इस विवाद में नियुक्त होते हैं वह इस योग्य हैं कि कटघड़े में बन्द करके अरब की सब कौमों में घुमाये जाव और यह घोषणा उनके आगे दी जावे कि यही दशा ऐसे मनुष्यों की होनी चाहिये जो व्यर्थ बातों में अपना समय लगाते हैं। अलग़ज़ाली की सम्मति इसके विरुद्ध यह है कि इस तर्क विषय का प्रचार पाखण्डियों के खण्डन निमित्त हुआ है इस से उनके मुख मर्दनके लिये इसको क़ायम रखना चाहिये परन्तु इस विवाद के लिये पुरुष में तीन बातोंका होना आवश्यक है। परिश्रम,

तीव्र बुद्धि और शुद्ध आचरण और यह आवश्यक नहीं है कि वह पुरुष सर्व साधारण को इसे समझाता फिरे। अतः यह विद्या मुसल्मानों में कौशलरूप है।

दूसरा शास्त्र व्यवहारिक विद्या का है और उसमें व्यवहार सम्बन्धी नियमों की व्यवस्थाओं का ज्ञान है जो स्पष्ट प्रमाणों से संग्रह की हुई हों। अल गज़ाली की सम्मति इस शास्त्र के विषय में भी वही है जो पूर्वोक्त शास्त्र के लिये थी उसकी अवश्यकता अधर्म और अन्याय के बढ़ने से होती है अतः इन दोनों शास्त्रों की आवश्यकता कारण पाकर है स्वयं नहीं। जैसे रक्षकों की आवश्यकता राजमार्गों पर डाकू और लुटेरों के कारण से होती है इसीप्रकार मनुष्यों के अत्याचार और विषय सङ्कल्प और कुभावों को नियमित रखने के निमित्त इनशास्त्रों की आवश्यकता है पहिले का अभिप्राय नास्तिकों का निग्रह है और दूसरे से संसार में शान्ति और सुख के हेतु नियमबद्ध विवादों की व्यवस्था है जिसके द्वारा हाकिम एक मनुष्य को दूसरे के ऊपर अत्याचार करने से रोके और इसका निर्णय करे कि अमुक व्यवहार उचित और अमुक अनुचित है तथा दण्ड और पारितोषिक के व्यवस्थापन द्वारा मनुष्यों के वाह्य व्यवहारों को नियमबद्ध करना तथा मत और धर्म विषयक बातों में भी वाणी और मुख से जितना व्यवहार है उसे नियत करना हार्दिक भावों को नियम में लाना हाकिम का काम नहीं है। मनुष्यों के आचरण भ्रष्ट और भ्रष्ट होने के कारण इन कानूनों का जानना इतना आवश्यक होगया है कि इसी को प्रधान विद्या कहते हैं और जो इसे न जाने वह विद्वान् नहीं कहाता। नेग्ग यक शास्त्रीयों के निरूपण के मुख्य आधार अथवा मनके बड़े सिद्धान्त हैं। परमेश्वर के गुण उपाधि लक्षण और उसकी ऐक्यता तदनुकूल इसके अन्तर्गत परमेश्वर के नित्य गुण हैं जिनको कुछ लोग मानते हैं और कुछ नहीं

मानते और प्रधान गुणों की व्याख्या तथा कर्मों के गुण परमेश्वर के योग्य का कर्त्तव्य है और निश्चय रूप से परमेश्वर के सम्बन्ध में क्या कहा जासक्ता है और उसके लिये क्या करना असम्भव है। इन बातों का विवाद अशारी, केरामी, मुजस्सिम, (स्थूल बादी) और मौतज़िला के मध्य में है।

दूसरा विवाद दैवाधीनता और पूर्व निर्दिष्टता अर्थात् प्रारब्ध वाद और उसकी न्यायपरता का है इसके अन्तर्गत परमेश्वर की इच्छा, अभिप्राय और इत्थमेव रूपशासन, मनुष्य को पराधीन होकर अवश्य करना और उसका कर्म उत्पादन में सहयोग जिस के द्वारा पुण्य पापका भागी होना और परमेश्वरकी इच्छा के अनुसार बुरे भले का होना, तथा क्या पदार्थ उसकी शक्ति में आधीन और क्या उसके ज्ञान के आधीन है इन बातों के उत्तर में कोई स्वीकार और कोई निषेध वाचक हैं। इन प्रकरणों का विवाद के देरी, नजैरी, जाबिरी, अशारी करामी परस्पर करते हैं।

कर्मों के फल प्राप्तिकी प्रतिज्ञा आशारूप (वायदा) और दण्ड का भयरूप धर्म ग्रन्थों के नामों का यथावत् अर्थ और धर्मोपदेशकों की व्यवस्था में (दवी निरूपण) तथा निष्ठा, श्रद्धा विषयक प्रश्न पश्चात्ताप, प्रायश्चित्त (तोबा) फल प्राप्ति रूप आशा, पाप कर्मों के दण्ड का भय क्षमा तितिक्षा, नास्तिकता, भ्रम आदिक विवाद के तीसरे अङ्ग में अन्तगर्त हैं और मोरजी, वाइदा, मुतज़िला, अशारी और करामी में इस विषय का विवाद रहता है। चौथा विषय विवाद का इतिहास और अनुमान वा तर्क है अर्थात् धर्म और विश्वास सम्बन्धी बातों में इनको कितना गौरव देना चाहिये तथा पैग़म्बरों का दौत्य कर्म और इमाम का अधिकार इसके अन्तर्गत धर्माधर्म विचार, कर्मों का सदाचार रूप सौन्दर्य्य, अथवा उनका दोष और दुष्टता विधि और निषेध पदार्थों के गुणों

द्वारा है अथवा इत्थमेव आज्ञा द्वारा कौन से कर्म प्रशस्त हैं परमेश्वर की कृपा का विषय पैग़म्बर ओहदे का निष्कपटता और इमाम के ओहदे का योग्य आवश्यक गुण बाज़े मानते हैं कि अनुक्रम वा परम्परा द्वारा इमाम की गद्दी का अधिकार मिलना चाहिये। बाज़ों का मत है कि मान्य प्रतिष्ठ मुसलमानों की मर्ज़ी द्वारा और प्रकार उसके परिवर्त्तन की परम्परा अर्थात् हक़ जानशीनी से उसको परिवर्त्तन करना और ईमानवालों की (मर्ज़ी) सम्मति से उसे दृढ़ वा सुस्थिर करना इन विषयों का विवाद शिआ, मुअतज़िल क़रामी और अशारी में है।

फ़िरक़े वा सम्प्रदाय मुसलमानों में दो हैं एक तो धर्म परायण (सुन्नी) और दूसरा विषयगामी (शिया)।

सुन्नियों का वर्णन।

पहिले सुन्नी कहाते हैं क्योंकि सुन्नत अर्थात् मुहम्मद की कहावतों और आचरणों के संग्रह को प्रमाण मानते हैं बहुत सी बातें कुरान में छूट गई हैं वह सब इसमें हैं। यह यहूदियों के मिश्ना की तरह उनके क़ुरान का परिशिष्ट उत्तर खण्ड है। सुन्नियों के चार मुख्य अनुविभाग भी हैं जिनको कुरान के अर्थ में कहीं २ मत भेद हैं परन्तु मत इसलाम के प्रधान सिद्धान्त समान रूप से सब मानते हैं और यह सबही पाप से मुक्ति के अधिकारी गिने जाते हैं तथा मक्का की मसजिद में इनके पृथक् २ अखाड़े हैं। इनमें से पहिली प्रथा के लोग हनफ़ी कहाते हैं इनके आचार्य अबूहनीफ़ा अलनोमान इबनसाबेत थे जो कूफ़ा में सन् ८० हिजरी में पैदा हुए थे और सन् १५० हिजरी में मरे। इन्होंने क़ाज़ी का ओहदा न स्वीकार किया इसलिये हाकिमों ने इनको बग़दाद नगर के कारा

गार में क़ैद करादिया और वहीं यह मरे थे। कहते हैं कि, सहस्र आवृत्ति कुरान की इन्होंने कारागार में पारायण पाठ किया था। इस शाखा के लोग अपनी बुद्धि से चलते थे। शेष तीन शाखाओं वाले मुहम्मद की कहावतों के अक्षरार्थ को अवलम्बन करते थे। इस शाखा के अनुयायी पूर्व में तो इराक देश के निवासी ही थे। परन्तु अब अधिक प्रचार इनका तुर्क और तातारियों में है अबू यूसुफ़ जो अलहादी और हारूं अलरशीद खलीफ़ा के समय में प्रधान न्यायाध्यक्ष थे उन्होंने इस पन्थ को अधिक वृद्धि का पहुंचाया।

दूसरी शाखा का संस्थापक मलेक इब्न अनस था जिसका जन्म मदीना में सन् ९० हिजरी में और मृत्यु सन् १७७ हिजरी में हुई थी। मुहम्मद की कहावतों का यह बहुत आदर करते थे अन्त समय की बीमारी में एक मित्र ने उनको रोते हुए देखकर कारण पूछा तो कहने लगे कि हम से अधिक पापी कौन होगा कि हमने अपनी बुद्धि के अनुसार बहुतेरे मामलों का निर्णय किया यदि ... के बदले में जितने प्रश्नों के उत्तर हमने दिये हैं हमको यहां हर प्रत प्रश्न पकर कोड़ा दिया जाता तो हमारा पाप हलका होजाता परमेश्वर की बड़ी कृपा होती जो हमने अपनी बुद्धि के अनुसार किसी बातका निर्णय न किया होता। अलग़ज़ाली लिखते हैं कि उन्होंने अपने ज्ञान को परमेश्वर ही के गुणानुवाद में लगाया और अपनी बुद्धि का इतना कम भरोसा करते थे कि एकबार किसी ने ४८ प्रश्न उनसे किये तो ३२ प्रश्नों में उन्होंने अपनी अयोग्यता उत्तर देने की प्रकाशकर दी सिवाय परमेश्वर के भक्त के अन्य कोई भी अपनी अज्ञता इस प्रकार नहीं प्रकट कर सक्ता है। मलक के मत के अनुयायी बारबरी और एफ्रिका के अन्य भागों में विशेष करके हैं।

तीसरे पन्थ का संस्थापक मुहम्मद इब्न इद्रीस शाफ़ई था लोग कहते हैं कि इनका जन्म सन् १५० हिजरी में पेलिस्टाईन के

गाज़ाया एस्केलौन नगरमें उसी दिन हुआ था जिसदिन अबूहनीफ़ा मरे थे। दो हा वर्ष की उमर में इनको मक्का लोग लेगये थे और वहां ही इन्होंने विद्योपार्जन किया था। मरने से ५ वर्ष पहिले यह मिस्र को चले गये थे और वहां सन् २०४ हिजरी में इनका देहान्त हुआ। यह सब शास्त्रों में निपुण थे और इब्न हम्बल जो इनके सम कालीन थे इनका बहुतही आदर करते थे और इनको संसारमें सूर्यके तुल्य कहाकरते थे। पूर्वमें इब्न हम्बल शाफिइ को बहुत तुच्छ समझते थे यहांतक कि अपने विद्यार्थियों को मनाकर दिया था कि इनके पास कोई न जाया करै परन्तु एक दिन जब शाफिइ खच्चर पर चढ़े हुये जारहे थे तो उनके पीछे २ पैदल घसिटते हुए इब्न हम्बल को देख कर उनके एक शिष्य ने कारण पूछा तो कहने लगे कि इनके खच्चर का भी अनुगामी तू होजाय तो लाभ उठावे। शाफिइ ने ही व्यवहार विद्या को प्रथमतः नियम में लाकर उसे क्रमानुगत किया है। किसी ने परिहास कथन किया है कि मुहम्मद का रहावी (हदीस) के व्याख्याता सब सोते थे जबतक कि शाफिइ ने आकर उनको न जगाया। पूर्व में कह आये हैं कि नवीन वादियों के शाफिइ बड़े विरोधी थे।

अलग़ज़ाली का कथन है कि शाफिइ रात्रि के तीन विभाग करते थे एक भाग मे अध्ययन दूसरे में नमाज़ और तीसरा निद्रा में व्यतीत करते थे। यह भी लोग कहते हैं कि अपनी उमरभर इन्होंने कभी परमेश्वर की शपथ नहीं की। न किसी सत्य के पुष्ट करने में और न किसी मिथ्या वचन के कहने में। एकबार इनकी सम्मति पूछीगई थी तो बहुत काल तक यह चुपचाप रहे और मौन रहनेका कारण पूछागया तो बोले कि हम यही विचार कररहे हैं कि चुप रहना अच्छा होगा या बोलना उनके विषयमें यह भी कहतहैं कि वह कहा करते थे कि जोकोई संसार और परमेश्वर दोनोंही से प्रीति

करता है वह मिथ्यावादी है। इनके अनुयायी शाफी कहाते हैं और पहिले तो मावराउन्नहर और पूरब की ओर अन्य देशों में थे परन्तु अब विशेषतः अरब और फारिस में हैं।

अहमद इब्न हम्बल चतुर्थ शाखा के संस्थापक सन् १६४ हिजरी में खुरासान के मेरू नगर में जन्मे थे और बचपन ही में उन की माता उन्हें बगदाद ले आई थी। बाज़े लोगों के अनुसार बग़दाद में उनकी मां गर्भवती आई थीं वहीं उनका जन्म हुआ था। यह बड़े पुण्यात्मा और विद्वान् थे।

मुहम्मद की कहावतों (हदीसों) में इनकी निपुणता इतनी अधिक थी कि दश लाख कहावतें इनको कंठस्थ थीं। कुरान को रचित स्वीकार न करने के कारण इनको खलीफा अलमुतासिम के हुक्म से कोड़ा लगाये गये थे और क़ैदख़ाने में डाल दिया था। इनकी मृत्यु बग़दाद में सन् २४१ हिजरी में हुई। इनके मृतक विमान (जनाज़े) के साथ ८ लाख पुरुष और ६० हजार स्त्रियां कब्रतक गई थीं। यह एक अद्भुत कथन उनके विषय में है कि जिस दिन वह मरे हैं २० हजार ईसाई यहूदी और मेजियायियों ने इसलाम स्वीकार किया था। यह पन्थ इतनी शीघ्र वृद्धि को पहुंचा और इतना प्रबल और निर्भय था कि खलीफ़ा अलराज़ी के समय में सन् ३२३ हिजरी में इन लोगों ने बग़दाद में इतना बलवा मचाया कि लोगों के घरों में घुसकर उनकी शराब आदिक जहां पाई तहां लुढ़का दी। जो स्त्रियां गाती थीं उनको बुरी तरह से मारने लगे और उनके बाजे के यन्त्र तोड़ डाले। बड़ी साहृत मनादी होने परही यह लोग किसी तरह क़ाबू में आये। इन लोगों की जमायत अब तो बहुत नहीं रही है अरब की सीमा से बाहर बहुत कम लोग इस पन्थ के पाये जाते हैं।

दूसरी सम्प्रदाय जो विपथ गामी (शिया) कहातेहैं धर्मके मुख्य

सिद्धान्तों में इन लोगोंका भिन्नमत है। मुख्य सिद्धान्तोंके विषयमें विवा॰ दारम्भ मुहम्मदके साथियोंके मरजानेपर हुआ। क्योंकि उन लोगोंके जीतेरहनेके समय कोई विवाद नहीं उठा था केवल एक बातके अतिरिक्त अर्थात् इमामों के विषय में जोकि पैगम्बर के न्यायतः पदाधिकारी थे और यह झगड़े बहुधा लालच और राज्य लोभके कारण उठेथे। उस समय में अरबवाले प्रायःयुद्ध महा नियुक्त रहते थे इस कारण इन सूक्ष्म विचारों का अवकाश उन्हें नहीं मिला था परन्तु ज्योंही जान से उनका ध्यान कुछ निवृत्त हुआ त्योंही लोग कुरान को कुछ सूक्ष्म दृष्टि से देखने लगे और तबही से मतों में भेद प्रकट होने लगा और अन्तमें इतना बढ़ा कि ७३ मत पृथक् पृथक् उपस्थित होगये। मुसलमानों का हौसला इस बात का था कि मत भेद उन के यहां अन्य मतवालों से संख्या अधिक होवे। मेजियायियों में ७० मत बताते हैं यहूदियों में ७१ ईसाईओं में ७२ और मुसलमानों में ७३ ऐसा कहते हैं जिसकी भविष्य वाणी भी मुहम्मदने की था। इन ७३ शाखाओं में से एकही शाखा यथार्थ रूप से न्याय पथ पर हैं और इसका अधिकार पानेसे मुक्तिका होना सम्भव वह लोग मानते हैं।

पहिले पहिल विरोध गनन खारिजियों ने किया जो सन् ३७ हिजरी में अली से विरुद्ध होगये और थोड़ेही काल पीछे माबाद अलजोहनी दमस्क के घेलान. और जो नास अल असवारी ने भी दैवाधीनता के विषय में तथा परमेश्वर में बुरे और भलेके आरोपण के विषय में विरुद्ध मत प्रकाश किया और वासेल इब्न अता नेभी उनके पक्षका स्वीकार किया। यह पुरुष बसरा के हसन का शिष्य था जिसकी पाठशाला में यह प्रश्न उठा था कि जिस मनुष्य से कोई घोर पाप होजाय तो उसे काफिर कहना चाहिये वा नहीं। खारिजा तो इसका समर्थन अर्थात् हां कहते थे।

और धर्म परायण (सुन्नी) लोग कहते थे कि नहीं। तिसपर अपने

गुरु की सम्मति की प्र ीक्षा न करके वासिल उठकर चलागया और अपना एक नयामत इस विषय में अपने सह पाठियों (हम मक्तबों) में प्रकाश करने लगा कि ऐसा पापी मध्य दशा में है। इस पर उसको पाठशालासे निकल दिया और उसके अनुयायी मुअतज़िला कहाने लगे। इसके पश्चात् अनेक शाखायें उत्पन्न होतीं गईं और अन्त में अब चार प्रधान शाखाओं के व; सब अन्तर्गत हैं मुअतज़िला निफ्रातिया खारिजी। मुअतज़िला यह लोग वासिल इब्नअता के अनुयायी हैं और परमेश्वर को गुण विशिष्ट न मानने से उन को मातज़िला भी कहतेहैं। उनके मुख्य सिद्धान्त यह हैं। (१) परमेश्वर नित्य गुण उपाधि युक्त नहीं है कि जिससे ईसाई मत में पुरुषों का भेद माना है वह न रहे। नित्यता उसके (परमेश्वर के) सत्त्व का उपयुक्त विशेषण है। परमेश्वर में गुण आरोपण करने से उसकी ऐक्यता में अन्तर पड़ेगा और द्वैत का निरूपण होगा मानने से होगा मानो दो परमेश्वर होजायँगे यदि नित्य विशेषण भी मानेंगे। (२) परमेश्वर का वाक्य अक्षर और शब्दसे रचित है मूल वचन का प्रतियां ग्रन्थ में लिखी जाती है। जो वस्तु रचित है वह नाश वान है। (३) पूर्णरूप से दैवाधीनता नहीं मानते परमेश्वर सत (शुभ) कार्य का कर्त्ता है असत का रचयिता नहीं है और मनुष्य स्वतंत्र कर्म का अधिकारी है। इस सिद्धान्त तथा पहिले सिद्धान्त द्वारा यह लोग अपने को परमेश्वर की ऐक्यता और उसकी न्याय शीलता के समर्थन करने वाले कहते हैं। (४) यदि सत्य धर्म पर चलने वाला मनुष्य कोई महा पापकरे और बिना पश्चात्ताप (तोबा) किये मरजाय तो उसे भी सदैव के लिये दण्ड भोगना पड़ेगा परन्तु उसका दण्ड न स्तिकों (काफ़िरों) से कम होगा। (५) परमेश्वर का दर्शन स्वर्ग में चर्म चक्षुसे होना असम्भवहै और परमेश्वर में किसी प्रकार के उपमा वा सादृश्य नहीं घट सक्ता है। इस मत

के भागाऽनुभाग अनेक हैं कोई कोई ७२ शाखायें इनकी बताते हैं जो एक दूसरे को काफ़िर मानते हैं उनके मुख्य विभाग यह हैं।

१ हमदान अबू होदीहल के अनुयायी जो हुज़ैलीकहाते हैं।

२–जुब्बाई जो अबूअली मुहम्मद इब्न अब्दुल वहाव उर्फ़अल जुब्बाई के शिष्य हैं।

(३) हाशिमी जो अबूअली अल जुब्बाई के पुत्र अबू हाशिम अब्दुस सलाम के शिष्य हैं। परमेश्वर को पाप का रचयता यह लोग नहीं मानते यहां तक कि काफ़िर को भी परमेश्वर ने नहीं रचा है।

(४) नाधा इब्राहिम अल नोधमके शिष्य थे।

(५) अहमद इब्न हायेतके अनुयायी हायेती के मतमें ईसाको परमेश्वर ने मूर्तिमान वा शरीर रचा मानते थे। ईसाने देह धारण की थी और परलोक में सब जीवों का न्यायाध्यक्ष ईसा ही होगे जीवों का पुनर्जन्म एक शरीर से दूसरे शरीर में अनेक योनियों में होता रहेगा अन्तिम शरीर से पाप और पुण्यका फल भोगना पड़ेगा परमेश्वर का दर्शन क़यामत के दिन चर्म चक्षु से नहीं वरन ज्ञान दृष्टि से होगा। (६) अम्रू इब्न बहर उर्फ़ अल जाहिद के अनुयायी जाहिदी कहाते हैं यह एक बड़े आचार्य सम्प्रदाय के थे और उनकी रचना तथा मीठीबोली शान्त स्वभाव बहुत ललित होने के हेतु उन का बहुत मानथा। नरक में सदैव के लिये पापियों को दुःख भोग करना यह नहीं मानते थे वहां पर पापी अग्नि रूप हो जाते हैं और अग्नि उनको आकर्षण स्वकर लेती है यह उनका मत था। उनके मत से आस्तिक होने के लिये इतनाही आवश्यक है कि परमेश्वरको अपना मालिक और मुहम्मद को उनका रसूल माने।

(७) ईसा इब्न शावी अल मुज़दार के अनुयायी मुज़दारी कहाते हैं इनके विचार बहुत अनर्गल और असंगत थे।

(८) बिथर जो अलमुज़दारके गुरु बशार इब्न मोतमिरके शिष्यहैं

(९) तिहामी जो तिहाम इब्न बशार के अनुयायी थे उनके मतमें पापियों को नरक में सदैव भोग करना पड़ेगा स्वतंत्र कर्मोंका कर्त्ता कोई नहीं है और क़यामत के दिन काफ़िर, मूर्तिपूजक, नास्तिक, यहूदी, ईसाई मजाई और विशथ गामी (शिया) सब धूल हो जांयगे।

(१०) कादरी नाम माबाद अलजोहनी और उसके अनुयायियों का था जिन्होंने देवाधीनता का विवाद वासिल ने अपने गुरु को त्याग किया था उससे पहिलेही उठाया था। इस मत के लोग देवाधीनता अथवा निदिष्टता को पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं करते हैं और कहते हैं कि परमेश्वर में पाप और अन्याय रचने का आरोपण नहीं होसक्ता है। मनुष्यही जिसे भला और बुरा कर्म करने की स्वतंत्रता परमेश्वर ने दी है पाप और अन्याय को करता है और अपने कर्मों के अनुसार फल को भोगेगा। यह शब्द अलक़द्र "देव की पूर्ण आज्ञा" से बनाहै वह लोग देवकी पूर्णतः नहीं स्वीकार करतेहैं अन्य लोगों का मतहै कि उनका नाम "कद्रवा कुद्रत" से पड़ा है क्योंकि मनुष्य को कर्म करने की स्वाधीनता थी वह लोग मानते हैं। परन्तु मुतज़िला का नाम कादरी उनके बैरियों ने रक्खा है और यह लोग अपने विरुद्ध पक्षवाले जाबिरी को इस नामसे अङ्कित करते हैं अपने को यह नाम नहीं स्वीकार करते क्योंकि मुहम्मद ने अपने अनुयायियों में जो मजाई थे उनको कादरी नाम रक्खा था। परन्तु मुहम्मद के समय में इन कादरियों का क्या मत था यथार्थ निश्चय नहीं होता है।

मुअतज़िला कहते हैं कि यह नाम जाबरियों का है जो देवाधीनता के बादी हैं और परमेश्वर ने पाप और पुण्य का रचयिता मानते हैं परन्तु सम्पूर्ण समुदाय मुअतज़िला को ही इस नाम से

पुकारते हैं। मेजियों की तरह यह लोग दो आदि कारण स्थापित करते हैं। एक सत्व गुण प्रकाश स्वरूप परमेश्वर जो सत को करता है और दूसरा तमरूप शैतान जो पाप का रचयिता है परन्तु मुअत-ज़िला मत के बहुधा लोग परमेश्वर द्वारा मनुष्यों के पुण्य कर्म का होना मानते हैं और पाप कर्म मनुष्य स्वयं करते हैं ऐसा मानते हैं।

दूसरा शाखा के लोग सिफ़ातियों का मत मुअतज़िला के विरुद्ध परमेश्वर के नित्य गुण उपाध्य विषय में है। सिफ़ाती लोग नित्य गुणों (सिफ़ना) का स्वीकार करते हैं इनलोगों ने प्रख्यापक गुण भी निरूपण किये हैं जैसे हस्त, मुख नेत्र आदि जिनका प्रयोग इतिहासिक वर्णन में होता है।

किरामी मुहम्मद इब्न किराम के अनुयायी थे और मुजस्सिमी भी कहलाते हैं। यह लोग जीव और परमेश्वर में सादृश्य वादी ही नहीं किन्तु परमेश्वर को शरीर धारी मानते हैं।

जावरी और कादरियों के पूर्ण प्रतिकूल हैं मनुष्य में स्वाधीनता नहीं मानते। सम्पूर्ण कर्म मनुष्य के परमेश्वर में आरोपण करते हैं। नेजाई भी जावरिया ही की एक शाखा है इनके मत में इनके ईमान वालेका न्याय जिसमें घोर पाप बन रहा है कयामतही पर होगा। इसी से संसार में उनको अपराधी व निरपराधी नहीं कहते हैं। इन चार शाखायें हैं। खारिजा, कादरी, जावरी (जवारिया) चौथा शाखा के बुद्धि मोजिअन्स कहाते हैं। मोजिअन्स की एक शाखा तिहावनी कहलाती है।

खारिजा वह लोग कहाते हैं जो सर्व सम्मति से बादशाह के विरोधी हों। इस शब्दका अर्थ "राजद्रोही" है। ये लोग अलीको नहीं मानते हैं।

शिआओं का वर्णन।

शिआ लोग खारिजा के प्रतिपक्षी हैं। यह लोग अली इब्न

तालिब के अनुयायी हैं और उसी को यथार्थ इमाम और खलीफ़ा मानते हैं सांसारिक और परमार्थिक दो विषयों का पूर्ण अधिकारी न्यायतः अली के वंशजों कोही बताते हैं यद्यपि और लोग अन्याय से इस अधिकार को उनसे छीन लेवें अथवा स्वयं भय से वहलोग उसे छोड़ देवें। वह यह भी मानते हैं कि इमाम का पद सामान्य नहीं है कि जिसपर जिसकिसी को साधारण लोग चाहें बिठल देवें वरन यह धर्म का मुख्य अङ्ग है और इस विषय को पैग़म्बर ने कदापि लोगों की रायपर निर्भर नहीं छोड़ा है।

इमामी लोग यहांतक मानते हैं कि सच्चे इमाम का ज्ञानही मुख्य मत और धर्म है। मुख्य शाखा शीओं की ५ हैं भागऽनुभाग तो इनके अगिणित हैं जिससे लोगों का अनुमान है कि मुहम्मद की भविष्यवाणी ७२ शाखा की केवल शिआओंके लिये थी। मुख्य सिद्धान्त इन लोगों के यह हैं। १ इमाम का विशेष अभिधान और इसके सम्बन्ध में कुरान तथा मुहम्मद के प्रमाण रूप वाक्य यही मुख्य विषय हैं २ इमामों का उचित है कि छोटे और बड़े सब प्रकार के पापों से बचे रहें। ३ प्रति मनुष्य को चाहिये कि अपने वचन, कर्म और व्यवहार से स्पष्ट प्रकट करदेवें कि किसको मानना है और किससे पृथग्भाव रखना है और इसमें कपट न करे। इस तीसरे सिद्धान्त में अन्य शिओं के मत से अली के पुत्र ज़ैद और उसके प्रपौत्र के अनुयायी लोग ज़ैदियों की सम्मति नहीं हैं। और भी जिन बातों में लोगों का शिओं से मत भेद है वह कुछतो मुअतिज़िला कुछ मुशाहबो और कुछ सुन्नियों के सिद्धान्तों के अन्तर्गतहैं। सुन्नियों में ज़ैद के दूसरे पुत्र मुहम्मद अलबकर की गणनाहै उसके मताऽनुसार परमेश्वर की इच्छा कुछ तो हम लोगोंके अन्तष्करणमें रहती है और कुछ हम लोगों से बाहर रहती है और जो कुछ हम लोगोंसे बाहर उसकी इच्छा है उसको उसने हमें प्रकाशकर दिया है

इसलिये हमें उनबातों का विचार करना अनुचित है जो हमारे भीतर उसके इच्छास्वरूप हैं तथा हमें उन बातोंका तिरस्कार भी न करना चाहिये जो हमसे बाहिर उसने अपनी इच्छास्वरूप प्रकट करदी हैं। दैवाधीनताके विषयमें उसकी सम्मति मध्य श्रेणीकी थी जिसने न तो मनुष्य को परम पराधीनता है और न परम स्वतंत्रता माननी चाहिये अबुल खत्ताब के अनुयायी खत्ताबियों का सिद्धान्त भी विलक्षण है कि संसार से परे पृथक् स्वर्ग और नरक नहीं है। यह संसार सदैव रहने वाला और नित्यहै इसके सुख रूपको स्वर्ग और दुःखोंको नरक मानना चाहिये और इसी सिद्धान्त के बल पर मन माना मद्य पीना भोग विषय और अन्य बातें जो कुरान और नियम के विरुद्ध हैं उन का आचरण करने लगे हैं। बहुतेरे शिओं ने अली का महत्व तथा उसकी सन्तान का गोरवास्पद इतना बढ़ा रक्खा है कि बुद्धि और शिष्टाचार के विरुद्ध है इनमें कुछ लोग अतिशय पक्षपाती नहीं भी हैं। घोलाइटस लोग तो इमामों को सृष्टि से परे मान कर उनको दैवी शक्ति सम्पन्न समझते हैं मनुष्यों को देवता बनाते हैं और परमेश्वरको शरीर धारी मानते हैं। कभीतो इमामोंको साक्षात् परमेश्वर सदृश कहने लगते हैं और कभी परमेश्वर को जीववत् संज्ञा देते हैं इनकी शाखा अनुशाखा अनेक हैं भिन्न २ देशों में उनके पृथक २ नाम भेद हैं। अबदुल्ला इब्न सबा एक यहूदी पहिले था और उसने ननके पुत्र जोशुआ को भी इतना ही महत्व माना था। यह इनलोगों का मुखिया था। वह अली को "तूही तू है" अर्थात् तूही परमेश्वर है इन शब्दों में अभिनन्दन करता था। इसतरह गोलाइटों की अनेक भिन्न शाखा हो गई। कुछ लोग इसीप्रकार अली को और कुछ लोग अली की सन्तान में से किसी को ऐसा ही (तद्रूप) मानते थे। अली को कहते हैं कि मरे नहीं हैं पुनः मेघोंमें प्रकट होंगे और पृथ्वी पर न्याय का विस्तार करेंगे। इनलोगों का अन्य बातों में भले ही

मत विरोध हो परन्तु रूपान्तर में परिवर्तन को सब मानते थे जिसे वह अलहल्लुल अर्थात् परमेश्वर का संसारी जीवों में अवतार और इसको इसप्रकार मानते थे कि परमेश्वर सर्वव्यापी है हरेककी वाणी से बोलता है और किसी विशेष व्यक्ति में प्रकट होता है। अतः यह लोग इमामों को पैगम्बर और पीछे से देवता भी मानने लगे थे। नौसेरियों और इसहाक्रियों का मत था कि आत्मा सम्बन्धी तत्त्व स्थूल शरीरों में प्रकट हो हैं और फरिश्ते और शैतान इसी प्रकार प्रकट हुए हैं। वह यह भी कहते हैं कि परमेश्वर भी मनुष्यों के रूप में प्रकट हुआ है और मुहम्मद के पीछे अली से उत्तम कोई मनुष्य नहीं हुआहै और अलीके पीछे अलीकी सन्तान सब मनुष्यों से गुणों में उत्कृष्ट हुई है और परमेश्वर ने उन्हीं के शरीरों में प्रकट होकर उनकी वाणी द्वारा और उन्हीं के हस्तोंसे काम किया है अतः यह लोग देवता थे। इन पाखण्ड वार्त्ताओं को प्रमाणित करने के लिये अली के अद्भुत अलौकिक कर्म कल्पना करके बनाते हैं कि अली ने खैबरके फाटकों को हिलाय दियाथा इसी से वह दैवी शक्ति सम्पन्न था और उसमें सार्वभौमिक अधीशता थी। इसके शरीर और रूप में परमेश्वर ने प्रकट होकर अपनी आज्ञाओं का प्रकाश उसकी वाणी द्वारा और उसी के हस्तों से सब पदार्थों को रचा और स्वर्ग और पृथ्वी की रचना से पूर्व में अली विद्यमान थे। ऐसे यह लोग जिन बातों को ईसा के विषय में बाईबिल में लिखा है उनबातों को अली में आरोपण करते हैं।

कुछ सुन्नी और शिओं के परस्पर घोर भयावह विरोध का और भी वर्णन करना उचित है। मत भेद इन दोनों सम्प्रदायों में पहिले तो राजनैतिक संबन्ध से उत्पन्न हुआ था परन्तु कारण पाकर दिन प्रति दिन इतना बढ़गया है कि एक दूसरे का खंडन अतिशय द्रोह और विरोध से करके परस्पर वह इनको और यह

उनको यहूदी और ईसाईयों से भी अधिक घृणीय और तिरस्कृत विपथगामी मानने लगे हैं।

शिया और सुन्नियों के भेद की मुख्य २ बातें

मुख्यभेद इनबातोंमेंहै १ शिआ लोग आदिके तीन खलीफा अबूबकर, उमर और उस्मानको आगन्तुक और अन्यायी राज्यापहारी मानतेहैं औरसुन्नी इन्हींको अधिकारी और यथार्थ इमाम मानते हैं। २ शिआअलीको महम्मदसे बढ़कर अथवा उनके तुल्य मानते हैं। सुन्नी लोग न अली को और न किसी पैग़म्बरको महम्मद के समान मानते हैं। ३ सुन्नी कहते हैं कि शिओं ने और शिआ कहते हैं कि सुन्नियों ने कुरान को भ्रष्ट कर दिया है और उसके आदेशों पर नहीं चलते हैं ४ सुन्नी लोग महम्मद की कहावतों के ग्रन्थ "सुन्नी" को व्यवस्था रूप प्रमाणिक कहते हैं और शिआ लोग उसे अविश्वासनीय और संदिग्ध प्रमाण मानते हैं। इसके अतिरिक्त और भी झगड़े छोटी२ बातों पर इनके परस्पर में है जिसके कारण रूम वाले तुर्क सुन्निओं और फारस वाले शिओं में बहुत काल से यह मत विद्वेष चला आता है। मुसलमानों के मतमें और भेदों को कोई न भी जाने परन्तु शिआ और सुन्नीका विरोध तो ऐसा प्रबल और पत्यक्ष है कि इस से कोई भी अनभिज्ञ नहीं है।

नवां अध्याय.

कुरान और इसलाम धर्म सम्बन्धी प्रायः समस्त बातों का विस्तृत उल्लेख हम कर आये हैं। अब यहां पर मुख्य २ बातें कह पुस्तकको समाप्तकरनाहै। प्रथम उल्लेख योग्य बातयहहै कि मुसल्मान शब्द का क्या अर्थ है। मुसलमान शब्द का अर्थ ईमान स्थिर रखने वाला है। अतः जिसके दूसरे के धन ज़मीन और स्त्री पर ईमान नहीं चलायमान होता वही मुसल्मान कहलाने योग्य है। जिसप्रकार किसी निरक्षर पुरुष का नाम विद्याधर रक्खा जावे चाहे उसको भले ही लोग विद्याधर नाम से पुकारें परन्तु वास्तव में वह मूर्ख ही है

इसी प्रकार जिसका ईमान ठिकाने न हो वहमुसलमान नाम धारी होते हुए भी वास्तव में ईमानवाला नहीं है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं।

ईमानवाले वे ही कहलायेजासक्ते हैं जो ईमान परहों यदि हराम का पेशा करने वाले लोग भी ईमान वालों में समझे जावें तो वे ईमान लोग कौन हैं। क्योंकि हराम करनेवाली औरत और मर्दों के लिये कोड़े लगवाते और पत्थरोंसे मार देने की आज्ञा कुरान मेंहै। शोक कि मुसलमान लोग कुरान के बिरुद्ध रंडियों तथा हरामियों को दण्ड देना एक ओर रहा ईमान वालों में शामिल करते हैं-शोक ! शोक ? महाशोक ? ?।

शहीद शब्द का व्यवहारिक अर्थ धर्म के लिये जान देता है। वास्तव में वही शहीद होसक्ते हैं जो धर्म के लिये जान देतेहैं। किरुंके रुपयेपर ईमान न छोड़े चाहे जान भलेही चलीजावे। किसी को स्त्री पर ईमान न डुलाये चाहे जान चलीजावे, किसी को जमीन पर ईमान न डुले चाहे जान भलेही चली जावे। जब तुम ईमान ठीक रखने के लिये जान दोगे तो तुम निश्चय शहीद होगे। जो मनुष्य रात दिन ईमान खोते हैं और व्यर्थ का झगड़ा करके प्राण देतेहैं। दूसरों पर जुल्म करते हैं वे कदापि शहीद नहीं होसक्ते।

अब अन्तिम हमारा निवेदन यहहै कि हमारे मतों में भले ही भेदहो परन्तु मतोंके भेदके कारण हमको मानुषी कर्तव्य (इन्सानियत) से नहीं गिरना चाहिये यानी जिसप्रकार पशु पक्षी अपनी जाति को समझते हैं तथा अपनी २ जाति के साथ सहानुभूत रखते हैं खेद की बात है कि हम मनुष्य जात पाते हुए अपने मनुष्य कर्त्तव्य से बाहर होते हैं। अर्थात् मनुष्य को विपत्ति में धीरज देना एक तरफ़ रहा उनको बिना कारण क़त्ल करते तथा दुःख देते हैं और उसे ही अपना धर्म समझते हैं वास्तव में वह प्रधान अधर्म है धर्म नहीं है। धर्म यही है कि मनुष्यको मनुष्य के साथ सहानुभूति करना चाहिये जिससे संसारमें आनन्द फैले यही हमारी आन्तरिक इच्छाहै-राम् ॥